# नगरीय परिवेश के महाविद्यालयों की छात्राओं के सामाजिक मूल्य तथा आकांक्षाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन

समाजशास्त्र

में

डाक्टर आफ फिलासफी की उपाधि

हेतु प्रस्तुत

## शोध-प्रबन्ध
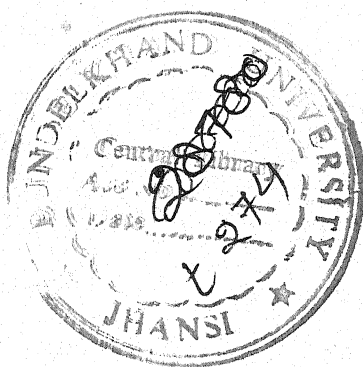


शोध-पर्यवेक्षक-

**डा० शीलभद्र सिंह परमार**

अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग

अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कालेज

अतर्रा (बांदा)

शोधकर्त्री-

**श्रीमती सविता खरे**

सहायक शिक्षिका

राजकीय महिला दीक्षा विद्यालय

बांदा
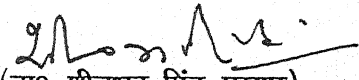
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ० प्र०)

**1993**

## प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि शोध-प्रबन्ध : **"नगरीय परिवेश के महाविद्यालयों की छात्राओं के सामाजिक मूल्य तथा आकांक्षाओं का समाज शास्त्रीय अध्ययन"**, **श्रीमती सविता** खरे, द्वारा समाजशास्त्र में डाक्टर आफ फिलासफी उपाधि हेतु प्रस्तुत है । यह शोध - प्रबन्ध बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी के नियमानुसार पूर्ण किया गया है । शोध-प्रबन्ध श्रीमती सविता खरे की मौलिक कृति हैं ।

विजयादशमी : 1993

(डा० शीलभद्र सिंह परमार)
अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग
अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कालेज
अतर्रा (बांदा)

## आभारिका

आधुनिक युग के मानव समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया तीव्र गति से चल रही है । परिवर्तन की इस प्रक्रिया में प्राचीन एवं नवीन के बीच संघर्ष भी स्वाभाविक रूप से होता रहता है । परिणामस्वरूप पुरानी परम्पराओं, मूल्यों, आकांक्षाओं तथा आदर्श नियमों में परिवर्तन होकर उनके नये स्वरूप का निर्माण होता रहता है । इस प्रकार, समाज में विकास की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है ।

समाज तथा उसकी सभी संघटक इकाइयों का संतुलित तथा सर्वांगीण विकास प्राचीन एवं नवीन के मध्य संतुलन पर निर्भर करता है । प्रायः देखने में आता है कि तीव्र तथा असमान गति से होने वाले परिवर्तन इस संतुलन को बिगाड़ देते हैं । समाज की किसी भी इकाई के लिये यह सम्भव नहीं हो पाता कि वह प्राचीनता अथवा नवीनता में से किसी एक को पूर्णरूप से स्वीकार कर सके । व्यक्ति सदैव प्राचीनता और नवीनता को एक साथ लेकर जीवन जीता है । प्राचीन एवं नवीन के बीच द्वन्द की स्थिति समाज में विघटन को उत्पन्न करने के लिये उत्तरदायी होती है, जिसका दुष्प्रभाव अन्ततः समाज की संघटक इकाई के रूप में व्यक्तियों पर ही पड़ता है । उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति एवं समाज के वांछित विकास के लिये यह आवश्यक हो जाता है कि समाज में विकसित हो रहे नवीन मूल्यों, आदर्श एवं आकांक्षाओं के साथ प्राचीन तत्वों की तत्कालीन उपयोगिता का मूल्यांकन होता रहे।

आधुनिक समय में सम्पूर्ण समाज तीव्र वैज्ञानिक, प्राद्योगिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा शैक्षिक विकास से प्रभावित हो रहा है । आज के नगरीय परिवेश में उक्त प्रभाव अपेक्षा से कहीं अधिक तथा स्पष्ट रूप में परिलक्षित हो रहे हैं जिससे प्राचीनता एवं नवीनता के बीच संतुलन स्थापित नहीं हो पा रहा है । जहाँ एक वर्ग यदि प्राचीन परम्पराओं का मोह नहीं

त्याग कर पा रहा है तो दूसरा नवीनता की ओर तीव्र गति से आकर्षित है जिससे नगरीय समाज में अन्तर्द्वन्द की प्रक्रिया चल रही है । ऐसी स्थिति में, स्वस्थ समाज एवं व्यक्ति के विकास के लिये यह आवश्यक हो जाता है कि नगरीय परिवेश में रहने वाले युवा वर्ग के सामाजिक मूल्यों एवं आकांक्षाओं का अध्ययन किया जाये । इस प्रकार का अध्ययन और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि भारतीय समाज में लम्बे समय तक महिलाओं को पुरुषों के आधीन रहना पड़ा है और आज की परिवर्तित परिस्थितियों में, विशेषकर नगरीय परिवेश में, उनमें समानता के मूल्यों के प्रति एक स्वाभाविक आकर्षण देखने को मिल रहा है ।

वर्तमान अध्ययन उक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु किया गया एक लघु प्रयास है जिसमें बाँदा जनपद के नगरीय परिवेश के महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के सामाजिक मूल्यों एवं आकांक्षाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है ।

संयोगवश शोधकर्त्री स्वयं प्राथमिक स्तर की शिक्षिकाओं के प्रशिक्षण कार्य से सम्बंधित है, अतएव छात्राओं की आकांक्षाओं एवं मूल्यों के प्रति रुझान होना स्वाभाविक है ।

इस शोध का पंजीयन बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी के अन्तर्गत आने वाले अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, अतर्रा के समाजशास्त्र विभाग के अध्यक्ष डा0 शीलभद्र सिंह परमार के निर्देशन में हुआ । उनके पूर्ण सहयोग से मुझे पग-पग पर यथेष्ट मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ है । शोध-प्रबन्ध को प्रस्तुत करते हुये मैं अपने शब्दों की परिधि में ऐसी सामर्थ्य का अनुभव नहीं कर पा रही हूँ जिसके द्वारा परम श्रद्धेय डा0 परमार के प्रति आभार व्यक्त कर सकूँ क्योंकि उनका आत्मीयता तथा सहृदयतापूर्ण कुशल पथ-प्रदर्शन ही इस शोध कार्य की निष्पत्ति का मूल आधार रहा है ।

इस शोध कार्य की पूर्णता पर सर्वाधिक प्रसन्नता का अनुभव करने वाले अपने पति श्री वीरेन्द्र कुमार खरे की मैं हृदय से आभारी हूँ, जिनकी सतत् प्रेरणा, प्रोत्साहन, सक्रिय सहयोग तथा सहानुभूति के बल पर ही मैं यह शोध कार्य पूर्ण कर सकी ।

मैं चिरऋणी हूँ राजकीय महिला महाविद्यालय, बाँदा की पूर्व प्राचार्या डा० बागेश्वरी पाण्डेय, जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय, बाँदा के पूर्व प्राचार्य डा० गोरखनाथ द्विवेदी तथा अतर्रा डिग्री कालेज, अतर्रा के पूर्व प्राचार्य डा० वी०एन०द्विवेदी आदि मूर्धन्य अधिकारियों का, जिन्होंने समय-समय पर अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया ।

इस शोध-प्रबन्ध को पूर्ण करने तथा समय-समय पर प्रेरणा प्रदान करने में जो सहयोग मुझे डा० डी०एस०श्रीवास्तव, अध्यक्ष शिक्षण-प्रशिक्षण विभाग, अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा, बाँदा के द्वारा प्राप्त होता रहा, वह सराहनीय है । मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करती हूँ ।

मैं चिरकृतज्ञ हूँ पं० जवाहर लाल नेहरू महाविद्यालय, बाँदा के समाजशास्त्र विभाग के अध्यक्ष डा० जसवन्त नाग की जिन्होंने अपने बहुमूल्य सुझावों द्वारा इस शोध-प्रबन्ध की उत्कृष्टता को बढ़ाया है ।

मैं अपने विद्यालय राजकीय महिला दीक्षा विद्यालय, बाँदा की प्रधानाचार्या श्रीमती सुशीला देवी की भी अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मुझे अनुगृहीत कर इस कार्य को पूर्ण करने का अवसर प्रदान किया और सहकर्मी श्रीमती ऊषा गुप्ता एवं श्रीमती प्रतिभा सिंह के साथ ही अन्य सहयोगियों की भी आभारी हूँ ।

मैं उन पुस्तकालयों के अध्यक्षों तथा सम्बंधित सहायकों और कार्मिकों के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने विभिन्न पुस्तकालयों से लाभान्वित होने का अवसर प्रदान किया ।

मेरे अनुज प्रिय राजविक्रम खरे तथा श्री अरूण कुमार खरे विभागाध्यक्ष (फाइन आर्ट) आर्मी पब्लिक स्कूल, लखनऊ धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने आपत्तियों तथा निराशा के क्षणों में इस शोध कार्य को पूरा करने हेतु ढाढ़स बंधाया है ।

आधार सामग्री संसाधन के विश्लेषण हेतु इंस्टीच्यूट आफ कम्प्यूटर मैनेजमेंट, बाँदा के निदेशक श्री रोहित मेहरा एवं इलक्ट्रॉनिक टंकण हेतु श्री वसन्त गोरे एवं श्री दिनेश श्रीवास्तव का सक्रिय सहयोग सराहनीय रहा, अतएव वे साधुवाद के पात्र हैं, उनका मैं आभार व्यक्त करती हूँ ।

कैलाश गर्ग, आकांक्षा, अन्विता, मोनिका तथा मोहिता सुधांशु द्वारा समय-समय पर दी गयी सहायता प्रशंसनीय है । ये सभी धन्यवाद के पात्र हैं ।

तीनों महाविद्यालयों की अध्ययनरत उन छात्राओं के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करती हूँ जिनके सहयोग से ही इस शोध-प्रबन्ध की विषय-सामग्री संकलित हो सकी ।

नगरीय परिवेश की छात्राओं के सामाजिक मूल्य तथा आकांक्षाओं के अध्ययन में यह लघु प्रयास किंचित-मात्र भी उपयोगी सिद्ध हो सका तो शोधकर्त्री अपना प्रयास सार्थक समझेगी ।

**विजयादशमी, 93**

**( सविता खरे )**

## अनुक्रमणिका

-----XX-----

## सारणी अनुसूची



---

सारणी संख्या की प्रथम गिनती अध्याय का संकेत करती है तथा दूसरी गिनती सारणी संख्या का ।

## चित्र- सूची

---

चित्र संख्या की प्रथम गिनती अध्याय का संकेत करती है तथा दूसरी गिनती चित्र संख्या का ।

अध्याय - एक

# अनुसंधान - क्षेत्र तथा अभिकल्प

तीव्र गति से परिवर्तित होते हुये नगरीय परिवेश में नवयुवतियों की आकांक्षाओं तथा मूल्यों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना ही वर्तमान अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य है । समकालीन भारतीय समाज विशेषरूप से नगरीय समुदाय, जो नवीन मूल्यों की ओर तेजी से आकृष्ट है जबकि उसके अतीत के मूल्य अभी भी छूटे नहीं हैं, वस्तुतः द्वन्द के बीच से गुजर रहा है । परिणामस्वरूप, परम्परा और आधुनिकता के बीच संघर्ष है । यह संघर्ष तथा इसका प्रभाव भारतीय सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिलक्षित हो रहा है । इतनी भ्रामक स्थिति में यह निर्धारण कर पाना बहुत ही कठिन है कि पारम्परिक तथा आधुनिक मूल्यों में कौन सा मूल्य नयी पीढ़ी पर अधिक प्रभाव डाल रहा है । यों आधुनिकता नवयुवतियों के दृष्टिकोण पर अपनी छाप छोड़ती प्रतीत हो रही है तथापि यह भी नहीं कहा जा सकता है कि परम्परायें निष्प्रभावी हो रही हैं । कहने की आवश्यकता नहीं है कि भावी भारतीय परिवार और समाज का उत्तरदायित्व युवा पीढ़ी को वहन करना है । इसलिये युवतियों के मूल्यों और आकांक्षाओं का अध्ययन करना सर्वथा समीचीन है । इससे यह समझने में सहायता मिल सकेगी कि नगरीय परिवेश में पली नवयुवतियाँ नवीन मूल्यों को कहाँ तक अंगीकृत कर रही हैं ।

भारतीय संविधान का वास्तविक उद्देश्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जो समानता, स्वतन्त्रता, बन्धुत्व और न्याय पर आधारित हो । संविधान ने जाति तथा अन्य आधारों पर भेदभावों को समाप्त कर दिया है और इस समय देश की राजनीति में उदारवादी मूल्यों का विकास हो रहा है । इन सबसे ऐसा प्रतीत होता है कि अब मनुष्य और मनुष्य के बीच जाति, सम्प्रदाय, धर्म, लिंग आदि के आधार पर अन्तर समाप्त हो जायेगा लेकिन भारतीय सामाजिक संरचना के निकटतम अध्ययनों से कुछ दिलचस्प तथ्य उभरकर सामने आये हैं । जाति और परम्पराओं का प्रभाव कुछ कम तो हुआ है परन्तु पूर्णतः समाप्त नही हुआ है । जिस प्रकार देश के चुनावों तथा अन्य अनके परिवेशों में जाति अपनी भूमिका निभाती है, उसे देखकर यह निष्कर्ष निकालना उपयुक्त नही होगा कि जाति तथा अन्य परम्परायें अब समाप्त हो गयी है[1] । वस्तुस्थिति

---

1. लायड आई रूडोल्फ - "द मार्डनटी आफ ट्रेडीशनः ए डेमोक्रेटिक इनफारमेशन आफ कास्ट इन इण्डिया", <u>अमेरिकन पालिटिकल साईंस रिव्यू</u>, खण्ड 59, अंक 4 (दिसम्बर 1965), पृष्ठ 975-989, <u>लुइस डूमा, होमो हायर किर्कस द कास्ट सिस्टम एण्ड इटस् इम्पलीकेशंस</u>, अनुवादक मार्क्स सेन्सवरी (नई दिल्ली : विकास पब्लिकेशन्स, 1970) ।

तो यह है कि समसामयिक भारतीय समाज में जाति एवं परम्परायें अपना स्थान पाने के लिये सतत् संघर्षरत हैं । इस संदर्भ में यह जानना आवश्यक होगा कि पारम्परिक तथा आधुनिक मूल्यों में से कौन से मूल्य युवतियों को अपनी ओर अधिक आकृष्ट कर पा रहे हैं । वर्तमान अध्ययन इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि इससे नगरीय परिवेश की युवतियों के बदलते मूल्यों एवं आकांक्षाओं पर प्रकाश पड़ सकेगा ।

उद्देश्य -

**वर्तमान अध्ययन में छात्राओं के मूल्यों एवं आकांक्षाओं के तीन प्रमुख आयामों का अध्ययन हेतु चयन किया गया है शैक्षणिक, आर्थिक और राजनीतिक । इनका सीधा सम्बन्ध क्रमशः** ज्ञान एवं सत्ता से है । इन तीनों आयामों के विशिष्ट क्षेत्रों का संक्षिप्त विवरण अधो-लिखित है ।

**(क) शैक्षिक मूल्य और आकांक्षायें -**

**1. उच्च शिक्षा -**

नगरीय छात्राओं की उच्च शिक्षा सम्बन्धी आकांक्षाओं का पता करना ।

**2. शिक्षा का प्रकार -**

अध्ययन करना कि नगरीय छात्रायें किस प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने की आकांक्षा रखती हैं ।

**3. स्त्री शिक्षा -**

यह समझने की चेष्टा करना कि स्त्रियों की शिक्षा के प्रति छात्राओं का दृष्टिकोण क्या है ।

**4. आर्थिक सामाजिक पृष्ठभूमि और शैक्षणिक आकांक्षा एवं मूल्य -**

छात्राओं की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि और उनकी शैक्षणिक आकांक्षाओं और मूल्यों के बीच सह सम्बन्धों का पता लगाना ।

**(ख) आर्थिक मूल्य एवं आकांक्षायें -**

**1. व्यावसायिक मूल्य -**

छात्राओं के आदर्श व्यवसायों की मान्यता का पता करना । इसी तारतम्य में यह

भी अध्ययन करना कि छात्राओं के अनुसार आज व्यवसाय में सफलता तथा प्रवेश के प्रचलित मानदण्ड क्या हैं ।

**2. व्यावसायिक आकांक्षा -**

ज्ञात करना कि नगरीय छात्रायें शिक्षा समाप्ति के पश्चात् किस व्यवसाय को अंगीकृत करना चाहती हैं ।

**3. आय -**

छात्राओं की आय विषयक आकांक्षाओं का अध्ययन करना ।

**4. व्यवसायिक मूल्य अनुस्थापन :-**

पता करना कि नगरीय छात्राओं का व्यावसायिक मूल्य अनुस्थापन[2] क्या है । इस संदर्भ में देखने की चेष्टा की जायेगी कि छात्राओं ने जिन व्यावसायिक मूल्यों को आत्मसात् किया है, वे प्रदत्त आधारों पर प्राप्त होते हैं अथवा अर्जित आधारों पर ।

**5. सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि एवं आर्थिक मूल्य तथा आकांक्षायें -**

छात्राओं की सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि और उनके आर्थिक मूल्य तथा आकांक्षाओं के बीच सह-सम्बन्धों का पता लगाना ।

**(ग) राजनैतिक मूल्य तथा आकांक्षायें :-**

**1. राजनीतिक सहभागिता :-**

अध्ययन करना कि नगरीय छात्राओं का राजनीतिक दृष्टिकोण क्या है । वे राजनीति में भाग लेना चाहती हैं या उससे विरत रहने के पक्ष में हैं ।

**2. राजनीतिक सहभागिता का स्तर :-**

पता लगाना कि छात्रायें किस स्तर की है (स्थानीय, क्षेत्रीय, प्रान्तीय, राष्ट्रीय) राजनीति में सर्वाधिक अभिरुचि रखती हैं ।

---

2. मूल्य-अनुस्थापन की अवधारणा के लिए, देखें: टालकाट पार्सर्स और इ0ए0शिल्स - हवार्ड ए जनरल थियरी आफ एक्शन (कैम्ब्रिज मेस0 : हारवर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1962, पृष्ठ 77-84.

**3. राजनीतिक दलों की वरीयता -**

पता लगाना कि नगरीय छात्रायें विभिन्न राजनैतिक दलों में किस विशिष्ट राजनैतिक दल को वरीयता देती हैं ।

**4. जनतांत्रिक मूल्यों के प्रति आस्था -**

यह जानना कि नगरीय छात्रायें जनतान्त्रिक मूल्यों में किस सीमा तक आस्था रखती हैं ।

**5. सरकार का चुनाव -**

जानने का प्रयास करना कि छात्रायें विविध प्रकार की सरकारों जैसे जनतान्त्रिक, तानाशाही आदि में से किस प्रकार की सरकार की पक्षधर हैं ।

**6. सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि तथा राजनैतिक आकांक्षायें -**

अध्ययन करना कि नगरीय परिवेश की छात्राओं की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि तथा राजनैतिक आकांक्षायें कहाँ तक परस्पर सम्बन्धित हैं ।

## प्राक्कल्पना -

प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पनाओं का निर्माण भारतीय समाज और उसके बदलते हुए परिवेश के आधार पर किया गया है । भारतीय समाज आज बड़ी ही तीव्र गति से परिवर्तित हो रहा है[3] । अनेक संरचनात्मक परिवर्तन हो रहे हैं जिससे लोगों को सामाजिक गतिशीलता के अधिकाधिक अवसर सुलभ हो रहे हैं । इससे जनसाधारण की आकांक्षायें बढ़ी हैं और उनके

---

3. एन0एन0श्रीनिवास, एस0से शाइयाह और यू0एस0 परथासार्थी (सम्पादक) डाइमेन्सन्स आफ सोशलचेंज (बम्बई एलाइड पब्लिकेशन्स, 1977), वी0के0आर0वी0राव, एस0के0मजूमदार और अमल रे (सम्पादक), प्लानिंग फार चेंज (नईदिल्ली : विकास पब्लिकेशन्स, 1974), एस0सी0दुबे (सम्पादक), इण्डिया सिन्स इण्डिपेण्डेन्स : सोशल रिपोर्ट इन इण्डिया, 1947 : 1973 (नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस 1977) योगेन्द्र सिंह, मार्डनाइजेशन आफ इण्डियन ट्रेडीशन सिसटेमेटिक स्टडी आफ सोशल चेंज (दिल्ली : थामसन प्रेस (इण्डिया) लिमिटेड, 1973).

सामाजिक मूल्यों में भी बदलाव आया है । छात्रायें इन परिवर्तनों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हैं । इन परिवर्तनों के संदर्भ में अध्ययन की सामान्य प्राक्कल्पना है कि नगरीय छात्रायें परम्परा और आधुनिकता के उभयदंश में उलझी हुई हैं, वे न तो पूरी तरह से परम्परा को छोड़ पा रही हैं और न ही आधुनिकता को पूरी तरह अंगीकृत कर पा रही हैं । अध्यन की विशिष्ट प्राक्कलपनाएं अधोलिखित हैं -

1. नगरीय परिवेश की छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षाएं उच्च हैं ।
2. नगरीय छात्रायें कला विषयों की शिक्षा की अपेक्षा वैज्ञानिक विषयों में अधिक अभिरूचि रखती हैं, तथापि व्यावहारिक रूप में साधनों के अभाव के कारण अधिकांश छात्रायें कला विषयों की ओर आकृष्ट हैं ।
3. स्त्रियों की शिक्षा के प्रति नगरीय छात्राओं का दृष्टिकोंण विस्तृत हैं ।
4. नगरीय छात्राओं के शैक्षणिक मूल्य आधुनिकता की ओर उन्मुख हैं । साथ ही, उनका परम्परा से भी लगाव हैं ।
5. नगरीय छात्रायें प्रतिष्ठित तथा उच्च आय वाले व्यवसाय को प्राप्त करने की आकांक्षा रखती हैं ।
6. नगरीय छात्रायें अधिकांशतः प्रतिष्ठित अभिजात व्यवसाय को पसंद करती हैं ।
7. नगरीय परिवेश की छात्राओं के अन्दर उच्च आय की तीव्र आकांक्षा होती हैं ।
8. नगरीय छात्रायें राजनीतिक क्रिया-कलापों में अपेक्षाकृत कम रुचि रखती हैं ।
9. नगरीय छात्रायें जनतान्त्रिक मूल्यों को अधिकता से आत्मसात करती जा रही हैं ।
10. उच्च-सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की नगरीय छात्राओं की शैक्षिणिक, आर्थिक और राजनीतिक आकांक्षायें निम्न सामाजिक- आर्थिक पृष्ठभमि की छात्राओं की अपेक्षा अधिक उच्च हैं ।

**अतीत के अध्ययन -**

युवतियों के मूल्य एवं आकांक्षाओं से सम्बन्धित अध्ययन भारत में कम

ही हुए हैं, तथापि सुलभ अध्ययनों का उपयोग परिकल्पनाओं में किया गया है[4] ।

पाश्चात्य देशों में इस विषय पर अपेक्षाकृत अधिक अध्ययन किये गए हैं । उन पाश्चात्य अध्ययनों का, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस अध्ययन से सम्बन्धित हैं[5], उपकल्पनाओं के निरूपण में उपयोग किया गया है । विविध आयामों से सम्बन्धित अध्ययनों की प्रमुख उपलब्धियाँ निम्न हैं -

---

4. आर0 कानूनगो, "वोकेशनल च्वाइस एण्ड अकुपेशनल वैल्यूज एमंग एडोलीसेन्ट स्टूडेन्ट्स", जर्नल आफ वोकेशनल एजूकेशनल गाइडेन्स, खण्ड 34 (1960), वी0 वी0 शाह सोशल चेन्ज एण्ड कालेज स्टूडेन्ट्स आफ गुजरात (बड़ौदा : द एम0 एस0 यूनिवर्सिटी आफ बड़ौदा, (1964), एस0 एल0 चोपड़ा, ए स्टडी आफ रिलेशनशिप बिटवीन द सोशियो-इकोनामिक फैक्टर्स एण्ड अकेडेमिक अचीवमेन्ट आफ द स्टूडेन्ट्स, अप्रकाशित पी-एच0 डी0 थीसिस (लखनऊ विश्वविद्यालय 1964) एम0एस0गोरे, सम प्रावलेम्स आफ एजूकेटेड यूथ इन इण्डिया, 1947, 1947-1967) बम्बई : एशिया पब्लिशिंग हाऊस, 1968), राजेन्द्र पाण्डेय, इण्डियाज यूथ एट द क्रास रोड्स : ए स्टडी आफ द वैल्यूज एण्ड ऐस्पिरेशन्स आफ कालेज स्टूडेन्टस् (वाराणसी : वाणी बिहार, 1975), बी0 जी0 देसाई, द इमरजिंग यूथ (बम्बई, पापुलर प्रकाशन, 1967), इ0आई0 जार्ज, गोपाल पिल्लई और के0 सुलोचन नायर, 'ए स्टडी आफ अकुपेशनल च्वायस एण्ड वैल्यूज आफ हाई स्कूल प्यूपिल्स", इण्डियन जनरल आफ सोशल वर्क, खण्ड 28 (जुलाई 1967), एल0एच0 सिंध्वी (सम्पादक), यूथ अनरेस्ट : कानफ्लिक्ट आफ जेनरेशन्स) दिल्ली : नेशनल पब्लिकेशन हाऊस, 1972), प्रेम पी0 भल्ला, ए हैण्डबुक फार यंग प्यूपिल (बम्बई 1977), प्रेम कृपाल, यूथ एण्ड इसटैब्लिशड कल्चर डिसेन्ट कोआपरेशन्स : ऐन इण्डियन स्टडी (नई दिल्ली, 1976), .
5. उदाहरणार्थ देखें ली0 जी0 बुर्चिनाल, "हू इज गोइंग टू फार्म", आइवोआ फार्म साइन्स, खण्ड 28 (अप्रैल, 1960), 12-15, रिचार्ड ए0 रीहवर्ग तथा डेविड एल0 बेस्टबाई, "पेरेण्ट्स इनकरजमेन्ट, अकुपेशन, एजूकेशन, एण्ड फैमिली साइज : आर्टीफिशियल आर इण्डिपेण्डेण्ट डिट्रमेन्ट्स आफ़ एडोलोसेन्ट एजुकेशनल, एक्सपौक्टेशन्स "सोशल फोर्सेज, खण्ड 45 (मार्च, 1967) गेराल्ड डी0 बेल, "प्रोसेस इन द फारमेशन आफ एडोलोसेन्ट ऐस्पिरेशन्स" सोशल फोर्सेज, खण्ड 42 (1963), फारेस्ट हैरिसन, "ऐस्पिरेशन्स ऐज रिलेटेड टू स्कूल परफार्मेन्स एण्ड सोशियो-इकोनामिक स्टेटस", सोशियोमेट्री, खण्ड 32 (मार्च 1969), इरविंग क्राउस, "सोर्सेज आफ एजूकेशनल ऐस्पिरेशन्स एमंग वर्किंग क्लास यूथ", अमेरिकन सोशियोलाजिकल रिव्यू, खण्ड 29 (दिसम्बर, 1964).

**शैक्षणिक आयाम -**

1. नगरीय युवाओं की शैक्षणिक आकांक्षाएं ग्रामीण युवाओं की अपेक्षा उच्च हैं[6] और ग्रामीण नगरीय पृष्ठभूमि का प्रभाव विषयों के चयन पर पड़ता है[7] ।

---

6. ली0जी0 बुर्चिनाल, "डिफरेन्सेज इन एजूकेशनल एण्ड अकुपेशनल ऐस्पिरेशन्स आफ, स्माल टाउन, एण्ड सिटी ब्वायज," रूरल सोशियोलाजी खण्ड 26 (जून, 1961), पृष्ठ 107-121, जैम्स0डी0 फाउहिग और चार्ल्स वी0 नाम, एजुकेशनल स्टेटस, कालेज प्लान्स एण्ड अकुपेशनल स्टेटस आफ फार्म एण्ड नान फार्म यूथ्स (वाशिंगटन, डी0 सी0 सेन्सस सीरीज, इ0आर0एस0 नम्बर 30, अगस्त 1961), चार्ल्स एस0 ग्रिग एण्ड रसल मिडिलटन, "कम्युनिटी आफ ओरयिनटेशन एण्ड अकुपेशनल ऐस्पिरेशन्स आफ नाइन्थ ग्रेड स्टूडेण्ट्स, सोशल फोर्सेज, खण्ड 36 (मई 1960), पृष्ठ 303-308, विलियम एच0 सिवले, "कम्युनिटी आफरेजिडेन्स एण्ड कालेज प्लान्स), अमेरिकन सोशियोलाजिकल रिव्यू, खण्ड 29 (फरवरी, 1964), पृष्ठ 24-38 विलियम एच0 सिवले एण्ड ऐलन एम0 ओरेस्टाइन, "कम्युनिटी आफ रेजिडेन्स एण्ड अकुपेशनल च्वाइज, "अमेरिकन जरनल आफ सोशियोलाजी, खण्ड 70 (मार्च, 1965), पृष्ठ 551-563, वाल्टर एम0 स्लोकम, "अकुपेशनल एण्ड एजुकेशनल प्लान्स आफ हाईस्कूल सीनियर फार्म एण्ड नान-फार्म होम्स, फुलमैन:वाशिंगटन, अमि0एक्स0स्टे0 बुलेटिन, 664-1956),

7. देखें बुर्चिनाल, (हू इज गोइंग टू फार्म), ए0ओ0 हालर' इन्फ्लूएन्स आफ प्लानिंग टू फार्म आन प्लान्स टू अटेन्ड कालेज", रूरल सोशियोलाजी, खण्ड 22 (जून 1957), पृष्ठ 137-141, "प्लानिंग टू फार्म ए सोशल साइकोलोजिकल इण्टरप्रिटेशन" सोशल फोर्सेज, खण्ड 37 (मार्च, 1959), पृष्ठ 263-268, और 'द अकुपेशनल च्वाइस प्रोसेस आफ फार्म-रियर्ड यूथ इन अर्बन-इण्डस्ट्रियल सोसायटी," रूरल सोशियोलाजी, खण्ड 25 (सितम्बर, 1960), पृष्ठ 321-333, सेवेल तथा हालर, 1965, भूरे ए0 स्ट्राल, "परसनल करेक्टरिस्टक्स एण्ड फंक्शनल नीड्स इन च्वायस आफ फार्मिग ऐज ऐन अकुपेशन", रूरल सोशियोलाजी, खण्ड 21) सितम्बर-दिसम्बर, 1956, पृष्ठ 227-266, और "सोशल नीड्स पर्सनेलिटी कैरेक्टरिस्टिक्स इन च्वाइस आफ फार्म, ब्यू- कालर एण्ड ह्वाइट कालर अकुपेशनल वाई फारमर्स सन्स "रूरल सोशियोलाजी, खण्ड 29 (दिसम्बर, 1964), पृष्ठ 408-425.

2. उच्च शिक्षा की आकांक्षा अभिव्यक्त करने वाले युवा वर्ग का अनुपात[8] पिता के व्यवसाय[9] तथा शिक्षा[10] के आधार पर पृथक होता है ।

---

8. युवाओं के शैक्षणिक अनुस्थापन पर व्यापक पुस्तक अनुसूची के लिए, देखें विलियम पी0 कुवलेस्की और जार्ज डब्लू ओहलेनडार्फ, ए विविलयोग्राफी आफ लिटरेचर आन एजुकेशनल ओरिएण्टेशन्स आफ यूथ (कालेज स्टेशन, टेक्साज : डिपार्टमेन्ट आफ एग्रिकल्चरल एकोनामिक्स एण्ड सोशियोलाजी, डिपार्टमेन्ट आफ इनफारमेशन, रिपोर्ट नं0 65-66, एन0डी0), रिचार्ड ए0 रीहबर्ग तथा डेबिट एल0 वेस्टवाई, "पैरेन्ट्ल इनकरजमेन्ट, अकुपेशनल एजूकेशन एण्ड फेमिली साइज : आर्टिफिशियल आर इण्डिपेण्डेण्ट डिटर्मिनेन्ट्स आफ एडोलिसेण्ट्स एजूकेशनल एक्स्पेक्टेशन" सोशल फोर्सेज, खण्ड 45 (मार्च, 1967), पृष्ठ 362-374, में 200 संन्दर्भो का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाला कि उच्च शिक्षा का पिता की शिक्षा-स्तर, व्यवसाय-स्तर, और पिता के प्रोत्साहन से सापेक्ष सम्बन्ध है तथा परिवार के आकार से नकारात्मक संबंध है ।

9. उदाहरणार्थ, देखें अनेस्ट क्यू0 कैम्पवेल और सी0 नार्मन अलैक्जेण्डर, जूनियर "पीयर इन्फ्लूयेन्सेज आन एडोलीसेण्ट्स ऐस्पिरेशन्स एण्ड अटेनमेण्ट्स" अमेरिकन सोशियोलाजिकल रिव्यू, खण्ड 29 (अगस्त, 1964), पृष्ठ 59-75, गैराल्ड डी0 बेल, "प्रोसेस इन द फार्मेशन आफ एडोलिसेन्ट्स" सोशल फोर्सेज, खण्ड 42( दिसम्बर 1963), पृष्ठ 178-186, हैलर एण्ड सेवेल, 1957, अगस्त वी0 हालिंगशेड, एल्मटाइन्स यूथ( न्यूयार्क : जान वाइली एण्ड सन्स, 1949), लेयोनार्ड रिजमैन, "लेवेल्स आफ ऐरिपरेशन्स एण्ड सोशल क्लास", अमेरिकन सोशियोलाजिकल रिव्य (जन

3. उच्च सामाजिक वर्ग के युवाओं की आकांक्षायें निम्न सामाजिक वर्ग के युवाओं की तुलना में निम्न होती हैं[11]। युवा वर्ग की शैक्षणिक आकांक्षा उनकी जीवन पद्धति से प्रभावित होती है[12]।

**आर्थिक आयाम -**

ग्रामीण युवाओं की तुलना में नगरीय युवाओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं का स्तर उच्च है[13]। सामाजिक-आर्थिक दशा का प्रभाव युवाओं की आकांक्षा पर पड़ता है। उच्च सामाजिक आर्थिक पृष्ठ भूमि के युवाओं की व्यावसायिक आकांक्षा निम्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के युवाओं की अपेक्षा उच्च है[14]।

---

11. सेवेल एण्ड शाह, 1964.

12. ई0 डेस ब्रनर, डेविट0एस0 विल्डेन, सी0 कर्चनर और जान एस0यूबरी, ऐन ओवरव्यू आफ एडल्ट एजूकेशन रिसर्च (शिकार्गो : एडल्ट एजूकेशनल एसोशिएशन आफ अमेरिका, 1959)., अध्याय 4,9,10,12 तथा जोन केसेल काम्निविट डाइमेन्स एण्ड पोलिटिकल ऐक्टिविटी, पब्लिक ओपीनियन क्वाटर्ली, खण्ड 24 (पाल, 1973), पृष्ठ 377-389.

13. प्रारम्भिक अध्ययन है ग्रेस जी0 लेवार्न, "अर्बन ऐडजस्टमेण्ट आफ माइग्रेट्स फ्राम द साउदर्नअपलरचियन प्लेटयु, "सोशल फोर्सेज, खण्ड 14 (दिसम्बर 1937), पृष्ठ 238-246 हावर्ड डब्लू0 वीयर्स तथा कैथेरिन पी0 हेपलीन, "सोशल माबिललिटी इन स्टाकहोम," ट्रांजैक्सन आफ द सेकण्ड वल्ड कांग्रेस आफ सोशियोलाजी, 2 (लंदन : इण्टरनेशनल सोशियोलाजिकल एसोसियेशन, 1954 (पृष्ठ 67-73 हैलर एण्ड सेवेल "फार्म रेजीडेन्स एण्ड लेवेल आफ एजूकेशनल एण्ड अकुपेशनल ऐस्पिरेशन्स"।

14. राबर्ट एस0लिण्ड एण्ड हेलेन. एम0लिण्ड, मिडिल टाउन इन ट्रांजिशन (न्यूयार्क : हरकोर्ट ब्रेस एण्ड बर्ल्ड, 1929), मीरा कोमोरोवस्की, "कल्चरल कन्ट्रडिक्शन एण्ड सेक्स रोल्स, "अमेरिकन जर्नल आफ सोशियोलाजी, खण्ड 11 (नवम्बर 1946), पृष्ठ 184-199, विलियम एच0 सिवेल, आरजीवाल्ड ओ0 हैलट तथा मुसे ए0 स्ट्रैस, "सोशल स्टैट्स एण्ड एजुकेशनल एण्ड अकुपेशनल ऐस्पिरेशन्स, "अमेरिकन सोशियोलाजिकल रिव्यू खण्ड 22 (फरवरी, 1957), पृष्ठ 67-73, विलियम एच0सेवेल तथा माइकेल आर्मर, "नेबरहुड कन्टैक्ट एण्ड कालेज प्लान्स, "अमेरिकन सोशियोलाजिकल रिव्यू, खण्ड 31 (अप्रैल, 1966), पृष्ठ 159-168 विलियम एच0 सेवेल एण्ड विमल पी0 शाह, सोशियो-इकोनामिक स्टेटस, इण्टेलिजेन्स, एण्ड 'द अटैनमेन्टआफ हायर एजूकेशन" सोशियोलाजी आफ एजूकेशन खण्ड 11 ((विन्टर, 1967), पृष्ठ 1.23, तथा एल0टी0 इम्पे, "क्लास एण्ड अकुपेशनल ऐस्पिरेशन्स : ए कम्पेरिजन आफ एब्स्योल्यूट एण्ड रिलेटिव मेजरमेण्ट' अमेरिकन सोशियोलाजिकल रिव्यू खण्ड 21 (1956), पृष्ठ 703-708.

**राजनीतिक आयाम -**

1. युवावस्था में राजनीति के प्रति दृष्टिकोण ठोस हो जाता है[15]। युवावस्था में विद्रोह की भावना अत्यधिक प्रबल हो जाती है[16]।

2. ग्रामीण युवाओं की अपेक्षा नगरीय युवा वर्ग संगठनों में अधिक रूचि रखते हैं[17]।

3. युवाओं की राजनीतिक आकांक्षा उनकी सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि पर निर्भर करती है। जितनी ही अधिक उच्च सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि होती है, उतनी ही अधिक राजनीति

---

15. हरवर्ट एच0 हाइमैन, पोलिटिकल सोसलाइजेशन (न्यूयार्क: द फ्री प्रेस, (1959), पृष्ठ 51.58 तथा रोवर्ट इ0 लेन, पोलिटिकल लाइफ : ह्वाई पिपुल गेटइन्वाल्ब्ड इन पालिटिक्स (न्यूयार्क : द फ्री प्रेस 1959), पृष्ठ 517.

16. किंग्सले डैविस, "सोशियोलाजी आफ पैरेन्टयूथ कान्फिल्कट" अमेरिकन सोशियोलाजिकल रिव्यू, खण्ड 5 (अगस्त, 1940), पृष्ठ 523-35 तथा "एडोलसेन्स एण्ड द सोशल स्ट्रक्चर", ऐनल्स आफ द अमेरिकन अकादमी आफ पालिटिकल एण्ड सोशल साइन्स, खण्ड 230 (नवम्बर 1944), पृष्ठ 8-16, जेसी बरनार्ड, सोशल प्राब्लेम्स एक्ट मिडसेंचुरी (न्यूयार्क : ड्राइडैन 1957), डब्लू0 एच0 डनहल तथा एम0 ई0 कार्नर, "द जुवेनाइल कोर्ट एण्ड इट्स रिलेशनशिप टू एडल्ट क्रिमिनैलिटी" सोशल फोर्सेज, खण्ड 32 (मार्च, 1945), पृष्ठ 229-296 टालकाट पारसन्स, "एज एण्ड सेक्स इन द सोशल स्ट्रैक्चर आफ द यूनाइटेड स्टेट्स" अमेरिकन सोशियोलाजिकल रिव्यू खण्ड 7 (अक्टूबर 1982), पृष्ठ 604-616, उपर्युक्त चिंतकों से पृथक विचारों के लिये, देखें आर0 सी0 वीलर एण्ड एफ0 के0 विलिट्स "रूरल यूथ : ए केस स्टडी इन द रिबेलियसनेस आफ ऐडलोसेन्ट्स", अमेरिकन अकादमी आफ पालिटिकल एण्ड सोशल साइन्स, खण्ड 338 (नवम्बर, 1961), पृष्ठ 63-69, बी0 एम0 वर्जर, "आन यूथफुलनेस आफ यूथ कल्चर", सोशल रिसर्च खण्ड 30 अंक 3 (1963), पृष्ठ 319-342, और येहूदी ए0 कोहेन", एडोलिसेण्ट कान्फिलक्ट इन जमाइनकान कम्यूनिटी", उनके द्वारा रचित सोशल स्ट्रैक्चर एण्ड पर्सनाल्टी (न्यूयार्क : हाल्ट, रेइनहार्ट एण्ड विन्सटन, 1961), पृष्ठ 167-182.

17. बेयनान, पूर्वोक्त, लेबरली, पूर्वोक्त, बीयर्स और हेफलिन, पूर्वोक्त, लिफसेट, 1955, पूर्वोक्त.

में भाग लेने की सम्भावना बढ़ जाती है[18] ।

## मौलिक प्रत्ययों की परिभाषा -

### युवती -

समाज विज्ञानों में युवक या 'युवती' की परिभाषा विभिन्न प्रकार से की जाती रही है । चिन्तकों में युवाओं की अवधारणा को लेकर मत विभिन्नता पायी जाती है । समाजशास्त्रीय दृष्टि से युवावस्था मानव जीवन की वह अवस्था है जब समाज व्यक्ति को, चाहे पुरुष या स्त्री, न तो बच्चा मानता है और न ही प्रौढ़ । अतः युवक या युवती की स्थिति "सीमान्त व्यक्ति"[19] की होती है । यहाँ 'युवती' से तात्पर्य 16-24 वर्ष आयु वर्ग की उन छात्राओं से है जो महाविद्यालयों में स्नातक एवं परास्नातक स्तर की शिक्षा ग्रहण कर रही हैं ।

### आकांक्षा-

आकांक्षा से अभिप्राय उन लक्ष्यों से है जो एक युवा अपने लिये निर्धारित करता है[20] । आकांक्षाएं दो प्रकार की होती हैं- आदर्श और वास्तविक ।

इस अध्ययन में छात्राओं की दोनों प्रकार की आकांक्षाओं को सम्मिलित किया गया है । वास्तविक आकांक्षा का अर्थ उन लक्ष्यों से है जिन्हें छात्रा प्राप्त कर

---

18. डेविड एल0 वेस्टबाई तथा रिचार्ड जी ब्राउनगार्ट, "क्लास एण्ड पालिटिक्स इन द फेमिली बैक ग्राउण्ड्स आफ स्टूडेण्ट्स पोलिटिकल एक्टिविटीज", अमेरिकन सोशियालाजिकल रिव्यू, खण्ड 31, अंक 5 (अक्टूबर, 1966) पृष्ठ 690-93, फिलिप. कनवर्स, 'द सिफटिंग रोल आफ क्लास इन पोलिटिकल ऐटिच्यूड एण्ड विहैवियर इलीनर मैकोवाइ आकद (सम्पादक), रीडिंगस इन सोशल साइकोलाजी न्यूयार्क : हेनरी हाल्ट एण्ड कम्पनी, 1958) में प्रकाशित

19. सीमान्त व्यक्ति की अवधारणा के लिये, देखें : आई0 सार्नी आफ, पर्सनेलटी डाइनेमिक्स एण्ड डेवलपमेण्ट) न्यूयार्क : जान वाइली एण्ड सन्स, 1962).

20. विलियम पी0 कुवलेस्की और राबर्ट सी0 वाल्ट, 'द रेलीवेन्स आफ ऐडलोसेण्ट्स अकुपेशनल ऐस्पिरेशन्स फार सब्सीक्वेण्ट जाब अटेनमेण्ट "रूरल सोशियोलाजी, खण्ड 32) सितम्बर, 1967) पृष्ठ 290-301.

लेगी । "आदर्श आकांक्षा का अभिप्राय उन लक्ष्यों से है जिसे छात्रा जीवन में प्राप्त करना चाहेगी"[21] ।

## मूल्य -

मूल्य वांछनीयता के प्रति अवधारणा है जो समाजीकरण के माध्यम से अन्तर्ग्राह्य होती है, जो व्यक्तियों के समूह द्वारा धारण किये जाते हैं, जिससे मूल्य-मूल्यवाहक संविगिक रूप से सम्बद्ध है । जे अधिमान्यतायें हैं जिनके आधार पर विवेकपूर्ण ढंग से प्रदत्त प्रारूपों, साधनों, वस्तुओं तथा स्थितियों से चयन किया जाता है और जो मूल्य वाहक के लिये महत्वपूर्ण हैं ।

## अनुसंधान अभिकल्प -

इस अध्ययन का शोध अभिकल्प अन्वेषणात्मक तथा वर्णनात्मक है । जहाँ एक ओर नगरीय छात्राओं के मूल्यों और आकांक्षाओं का अन्वेषण किया जायेगा, वहीं कतिपय निश्चित परिकल्पनाओं की सत्यता का परीक्षण भी किया जायेगा ।

## समग्र तथा अध्ययन इकाइयाँ -

यह अनुसंधान भारत के उत्तर प्रदेश प्रान्त में स्थित बांदा जनपद के नगरीय परिवेश के महाविद्यालयों की छात्राओं पर आधारित हैं । इस जनपद में कुल पांच (5) महाविद्यालय हैं जो मऊ, कर्वी, अतर्रा तथा शेष दो महाविद्यालय, बांदा नगर में स्थित हैं । यह सभी महाविद्यालय बुन्देलखण्ड विश्व-विद्यालय, झांसी से सम्बद्ध हैं और इसी से उनकी शिक्षा प्रणाली और पाठ्यक्रम में समानता हैं ।

इन अनुसंधान के अन्तर्गत नगरीय परिवेश के तीन महाविद्यालय की छात्राओं को लिया गया है । वे हैं :- (1) अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (11) पं0 जवाहर

---

21. फारेस्ट हैरिसन, "ऐस्पिरेशन्स ऐज रिलेटेड टू स्कूल परफार्मेन्स एण्ड सोशियो एकोनामिक स्टेट्स, "सोशियोमेट्री, खण्ड 32 (मार्च, 1969), पृष्ठ 69-70.

लाल नेहरू महाविद्यालय, बांदा तथा (III) राजकीय महिला महाविद्यालय, बांदा । इन समस्त महाविद्यालयों में से राजकीय महिला महाविद्यालय, बांदा में केवल महिलाएं तथा शेष दो महाविद्यालयों में सह-शिक्षा प्रणाली हैं ।

मऊ और कर्वी के महाविद्यालयों में छात्राओं की संख्या अत्यल्प होने के कारण उन्हें शोधार्थ नहीं लिया गया है ।

यह अध्ययन शैक्षणिक सत्र 1988-89 में अध्ययनरत छात्राओं पर आधारित हैं । शैक्षिणिक सत्र 1988-89 में तीनों महाविद्यालयों में कुल 655 छात्राएं प्रविष्ट हुई जिनमें से 55 छात्राएं अनेक कारणों से अनुपलब्ध रहीं । कुछ छात्राओं ने प्रवेश के पश्चात् अध्ययन छोड़ दिया, कुछ से महाविद्यालय में अक्सर अनुपस्थित रहने के कारण सम्पर्क नहीं किया जा सका और कुछ ने साक्षात्कार देने से इनकार कर दिया कुल मिलाकर 600 छात्राएं अध्ययन हेतु उपलब्ध हो सकीं । अध्ययन क्षेत्र सीमित होने के कारण तथा निष्कर्षो की प्रमाणिकता को दृष्टि में रखकर समग्र की समस्त इकाईयों अर्थात् सभी 600 छात्राओं को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है जिनका विवरण सारणी 1.1 (चित्र 1.1) में प्रस्तुत हैं ।

**सारणी 1.1**

**शैक्षणिक सत्र 1988-89 में बांदा जनपद में नगरीय परिवेश के महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राएं**

| क्र0सं0 | महाविद्यालय | वास्तविक | साक्षात्कार हेतु उपलब्ध |
|---|---|---|---|
| 1. | अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा | 128 | 111 |
| 2. | पं0 जवाहर लाल नेहरू महाविद्यालय बांदा. | 142 | 126 |
| 3. | राजकीय महिला महाविद्यालय, बांदा. | 385 | 363 |
| | योग | 655 | 600 |

## शैक्षिक सत्र 1988–89 में बाँदा जनपद के नगरीय परिवेश के महाविद्यालय एवं अध्ययनरत छात्राएं
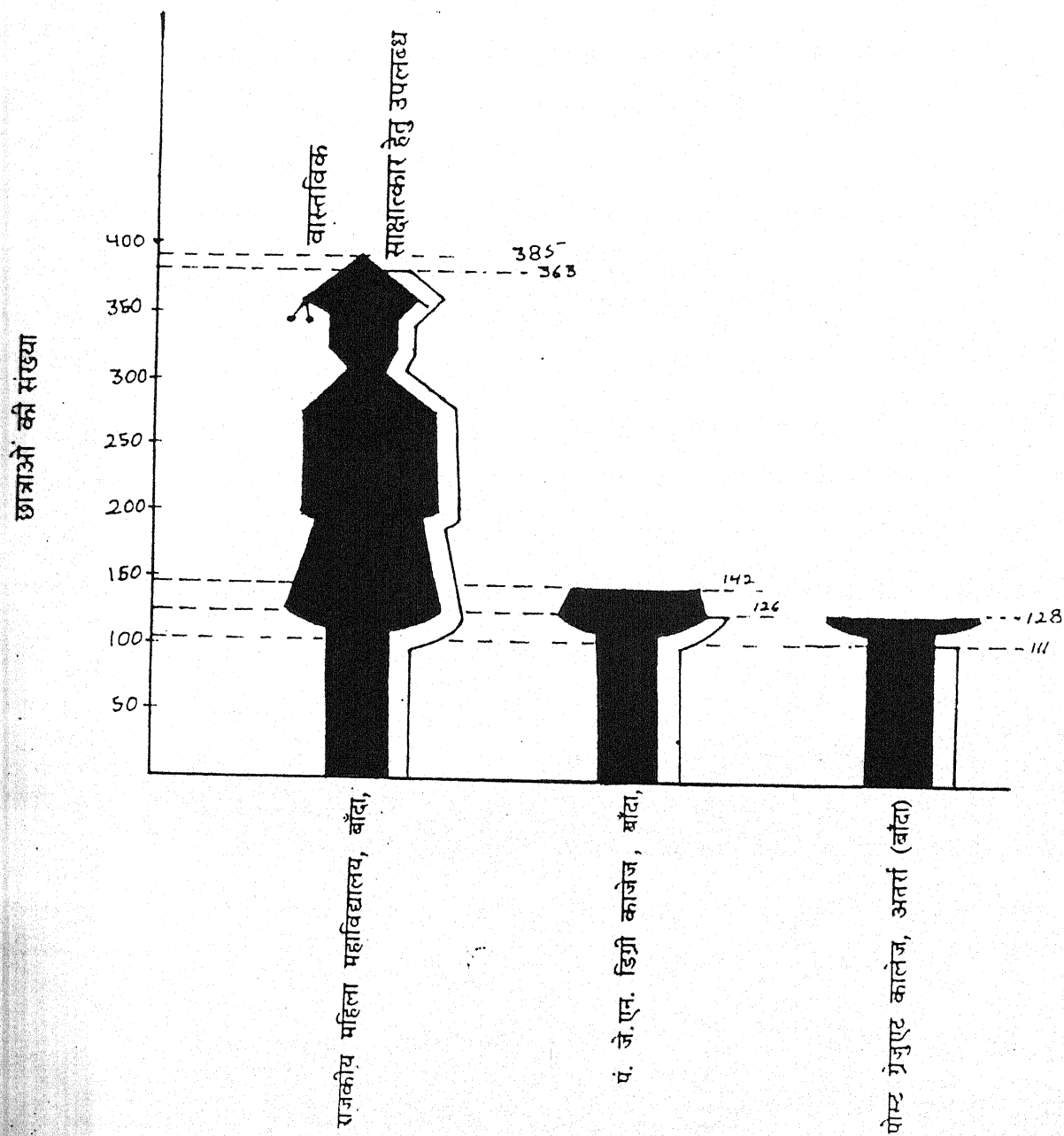
चित्र 1.1

## आधार सामग्री संग्रह -

आधार सामग्री का संग्रह साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया। समस्या के प्रत्येक पक्ष को ध्यान में रखकर प्रश्नों का निर्माण किया गया। खुले तथा संरचित दोनों प्रकार के प्रश्न साक्षात्कार-अनुसूची में समाहित किये गए। जब साक्षात्कार अनुसूची पूर्ण रूप से तैयार हो गयी, तब उसका पथ निर्देशक परीक्षण किया गया। परीक्षण के समय पायी गयी उलझनों और कठिनाइयों का निवारण कर साक्षात्कार अनुसूची को अन्तिम रूप दिया गया। गुणात्मक दृष्टि से तथ्य संकलन के लिये अवलोकन पद्धति का प्रयोग किया गया।

## क्षेत्र कार्य -

प्रथमतः, समस्त महाविद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया। महाविद्यालयों के प्राचार्यो तथा अध्यापकों से सम्पर्क स्थापित कर उनका सहयोग प्राप्त करने की चेष्टा की गयी। महाविद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विषय तथा उनमें पढ़ने वाली छात्राओं के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की गयी। फलस्वरूप क्षेत्रकार्य की अवधि में शोध कर्ता को महाविद्यालय प्रशासन, प्राचार्य, प्राध्यापक तथा छात्राओं का काफी सहयोग प्राप्त हो सका। साक्षात्कार लगभग 45 मिनट की अवधि का था। छात्राओं का साक्षात्कार प्राचार्य द्वारा महाविद्यालयों में निर्धारित स्थान पर किया गया। तथ्य संकलन का कार्य 1988-89 के पूरे शैक्षणिक सत्र तक चला।

## स्वतन्त्र चर -

छात्राओं के मूल्यों एवं आकांक्षाओं तथा स्वतन्त्र चरों के बीच सह-सम्बन्ध का अध्ययन करना इस शोध का एक प्रमुख उद्देश्य है। इसके लिये जिन स्वतन्त्र चरों को चुना गया, वे हैं : सामाजिक, आर्थिक प्रस्थिति तथा जाति।

## सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति -

सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति अनुमाप केलिये संध्या[22] द्वारा प्रयुक्त प्रमापक का उपयोग

## सारणी 1.2

### सामाजिक आर्थिक प्रास्थिति प्रमापक में सामाजिक-आर्थिक चरों का समूहीकरण

| परिवार की आय | जाति / मकान का स्वरूप | कच्चा/कोई मकान नहीं | | | मिश्रित | | | पक्का | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | शिक्षा का स्तर | निम्न | मध्यम | उच्च | निम्न | मध्यम | उच्च | निम्न | मध्यम | उच्च |
| रू0 1000 | निम्न | 1 | 1 | 2 | 1 | 2 | 3 | 2 | 3 | 4 |
| और | मध्यम | 1 | 2 | 3 | 2 | 3 | 4 | 3 | 4 | 5 |
| कम | उच्च | 2 | 3 | 4 | 3 | 4 | 5 | 4 | 5 | 6 |
| रू0 1001 | निम्न | 1 | 2 | 3 | 2 | 3 | 4 | 3 | 4 | 5 |
| से | मध्यम | 2 | 3 | 4 | 3 | 4 | 5 | 4 | 5 | 6 |
| 2000 तक | उच्च | 3 | 4 | 5 | 4 | 5 | 6 | 5 | 6 | 7 |
| रू0 2001 | निम्न | 4 | 5 | 6 | 5 | 6 | 7 | 6 | 7 | 8 |
| और | मध्यम | 5 | 6 | 7 | 6 | 7 | 8 | 7 | 8 | 9 |
| अधिक | उच्च | 7 | 8 | 9 | 8 | 9 | 10 | 9 | 10 | 11 |

किया गया है । इस प्रमापक में समाहित सामाजिक तथा आर्थिक पक्षों तथा प्रत्येक को दिये गये अंको का विवरण सारणी 1.2 में प्रस्तुत है :

विविध चरों और उन्हें दिये जाने वाले अंकों के आधार पर कुल पाँच वर्ग प्राप्त हुए जिनका विवरण सारणी 1.3 में प्रस्तुत है ।

सारणी 1.3

छात्राओं का वर्ग, प्रतिशत में

| वर्ग | प्राप्तांक | छात्रायें |
|---|---|---|
| 1. उच्च वर्ग | 9,10,11 | 30.17 |
| 2. उच्च मध्यम वर्ग | 7,8 | 19.00 |
| 3. निम्न मध्यम वर्ग | 5,6 | 30.00 |
| 4. निम्न वर्ग | 3,4 | 18.83 |
| 5. अति-निम्न वर्ग | 1,2 | 2.00 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | | 100.00 |

सांख्यिकीय दृष्टि से विविध चरों के साथ सम्बन्ध देखने के लिये केवल तीन वर्ग रखे गये हैं - (1) उच्च वर्ग को उच्च वर्ग का ही नाम दिया गया (2) उच्च मध्यम और निम्न मध्यम को एक साथ मिलाकर उसे मध्यम वर्ग कहा गया और (3) निम्न और अति निम्न को एक साथ मिलाकर निम्न वर्ग कहा गया । इस प्रकार सुविधाजनक विश्लेषण के लिये तीन वर्ग श्रेणियाँ रह गयीं, जिन्हें सारणी 1.4 में दर्शाया गया है ।

22. संध्या, एस0, 1986, सोशियो-कल्चरल एण्ड इकोनामिक कोरिलेट्स आफ इनफैण्ट मारटैलिटी : ए केस स्टडी आफ आन्ध्र प्रदेश, डेमोग्राफी इण्डिया, वा0 15, सं0 1, पृष्ठ 89.

सारणी 1.4

छात्राओं की वर्ग श्रेणी, प्रतिशत में

| वर्ग श्रेणी | छात्राओं का प्रतिशत |
|---|---|
| उच्च वर्ग | 30.17 |
| मध्यम वर्ग | 49.00 |
| निम्न वर्ग | 20.83 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

**जाति -**

यों तो सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति प्रमापक में जाति समाहित है, परन्तु जाति को यहाँ अलग से स्वतन्त्र चर के रूप में लिया है । जाति आज भी नगरीय परिवेश में गहनता से सजीव है । परम्परात्मक ढंग से शिक्षा, धन तथा नागरिक अधिकार जाति से निबद्ध रहे हैं । अतः ऐसा माना गया कि आज भी जाति का प्रभाव नगरीय छात्राओं के मूल्यों और आकांक्षाओं पर स्वतन्त्र रूप से होगा ।

छात्राओं की जाति संरचना के विषय में जानकारी निम्न श्रेणियों में संकलित की गयी : ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य, पिछड़ी जाति, अनुसूचित जाति और गैर जाति । सांख्यिकीय दृष्टि से सह-सम्बन्धों के अनुमाप के लिये इन जातियों को तीन श्रेणियों में रखा गया-

1. उच्च जाति (ब्राह्मण तथा क्षत्रिय)
2. मध्यम जाति (वैश्य तथा पिछड़ी जाति) और
3. निम्न जाति (अनुसूचित जाति एवं गैर जाति).

छात्राओं का जाति श्रेणी के आधार पर वर्गीकरण सारणी 1.5 में प्रस्तुत है ।

सारणी 1.5

छात्राओं की जाति श्रेणी, प्रतिशत में

| जाति | प्रतिशित |
|---|---|
| उच्च | 36.00 |
| मध्यम | 53.83 |
| निम्न | 11.17 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

**नगर-निवास की अवधि -**

जाति के पश्चात् मानव की आयु ही ऐसी महत्वपूर्ण जैविक विशेषता है जिसकी कोई भी समाज अनदेखी नहीं कर सकता । पारिवारिक पृष्ठभूमि युवा की मानसिक स्थिति को प्रभावित करती है कि वह ग्राम की है या नगरीय । (देखें सारणी 1.6 (चित्र 1.2)) ।

सारणी 1.6

छात्राओं की नगर निवास की अवधि, प्रतिशत में

| छात्राओं की आयु (जब से वह नगर में रह रही हैं) | छात्रायें |
|---|---|
| 1. 10 वर्ष से कम आयु से | 82.50 |
| 2. 11-15 वर्ष की आयु से | 12.00 |
| 3. 16-20 वर्ष की आयु से | 5.50 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश छात्राएं (82.50 प्रतिशत) 10 वर्ष से कम आयु से नगर में निवास करती हैं । 11 वर्ष से 15 वर्ष की आयु से निवास

छात्राओं की नगर निवास की अवधि, प्रतिशत में

चित्र 1.2
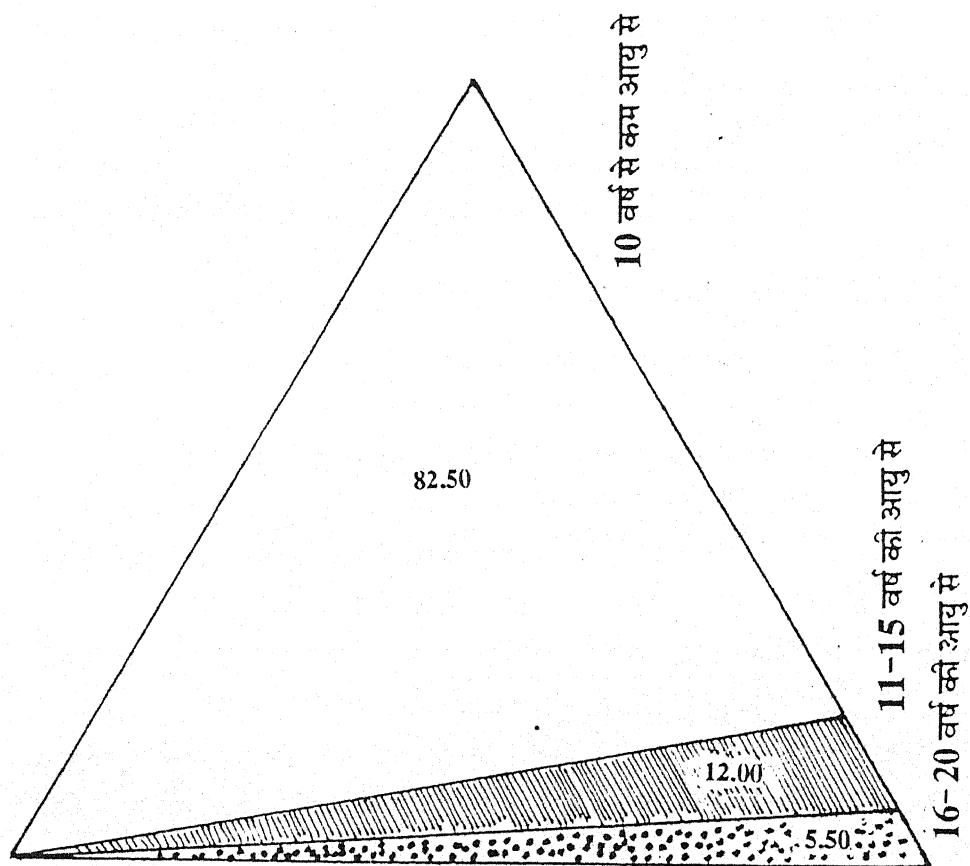
करने वाली छात्राएं (12.00 प्रतिशत) दूसरे स्थान पर हैं । बहुत कम छात्राएं (5.50 प्रतिशत) 16 वर्ष या उससे अधिक आयु से नगर में रह रही हैं ।

**परिप्रेक्ष्य -**

युवा-समाजशास्त्र में दो प्रधान सिद्धान्त हैं :

संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक तथा मार्क्सवादी[23] । संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक तथा अनेक प्रकार के आदर्शवादी सिद्धान्तों का काफी समय से प्रभुत्व रहा है । संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक सिद्धान्त को ही सर्वप्रथम "युवा संस्कृति" की अवधारणा को प्रचलित करने का श्रेय है जो कालान्तर में उप-संस्कृति के रूप में प्रचलित हुआ[24] । युवा संस्कृति ने क्रमशः और अधिक आमूल परिवर्तनवादी रूप ले लिया[25] । फलस्वरूप "प्रति संस्कृति" की अवधारणा का विकास हुआ[26] ।

संरचनात्मक प्रकार्यवादी उक्त दोनों अवधारणाओं के विरोध में नव-मार्क्सवादी विचाराधारा उत्पन्न हुई जिसमें यहाँ-वहाँ, प्रति-संस्कृति के स्वरूपों की भी चर्चा पायी

---

23. युवा समाजशास्त्र में प्रचलित समाजशास्त्री सिद्धान्तों के लिए है डेविड एस0 स्मिथ "न्यू मूवमेन्टस इन द सोशियालाजी आफ यूथ : ए क्रिटी", ब्रिटिश जर्नल आफ सोशियालाजी, खण्ड 32, अंक 2 (जून 1981), पृष्ठ 239-251 में देखें ।

24. उदाहरण के लिये देखें : टालकाट पार्सन्स, "एज एण्ड सेक्स इन द सोशल स्ट्रक्चर आफ द यूनाइटेड, स्टेट्स", अमेरिकन सोशियालाजिकल रिव्यू, खण्ड 7 (अक्टूबर 1942), पृष्ठ 604-611, जे0एस0 कोलमैन द एडोलिसेण्ट सोसाइटी (न्यूयार्क : द फ्री प्रेस, 1961), बी0 सुगरमैन, "इनवाल्वमेण्ट इन यूथ कल्चर, अकेडेमिक अचीवमेण्ट एण्ड कनफर्मिटी इन स्कूल्स", ब्रिटिश जर्नल आफ सोशियालाजी, खण्ड 18 (1967), पृष्ठ 151-164 वी0 विल्सन, द यूथ कल्चर एण्ड द यूनिवर्सिटीज (लन्दन : पेबर एण्ड पेबर 1970).

25. एल0 फ्योर, द कन्फिलक्ट आफ जेनेरेशन्स ( लन्दन हाइनेमैन, 1969), सी0ए0रेइक, द ग्रीनिज आफ अमेरिका (हारमण्डसवर्थ, ऐलेन लेन, द पेनग्विन प्रेस, 1972), टी0 रोशजाक, द मेकिंग आफ काउण्टर कल्चर( लन्दन : डबल डे, 1969).

26. मार्क्यूज की रचनाएँ इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं ।

जा सकती हैं[27] । लेकिन नवमार्क्सवादी विचारधारा ने सम्बन्धित वाद-विवाद को आगे बढ़ाया[28] । शनैः शनैः इन सिद्धान्तों पर बल देने की परिपाटी चल पड़ी[29]।

आधुनिक समय में युवा समाजशास्त्र में दो सैद्धान्तिक प्रवाह प्रचलित हुए हैं । एक प्रवाह है प्रतिक्रिया सिद्धान्त[30], जिसने युवा उप-संस्कृति को "समस्या निवारण"[31] के रूप में देखा है । दूसरा प्रवाह है मार्क्सवादी सिद्धान्त जिसमें वर्ग के आधार पर युवाओं का विश्लेषण किया जाता है[32] । इस अध्ययन में युवतियों के मूल्य एवं आकांक्षा के विश्लेषण के लिये संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक परिप्रेक्ष्य को अपनाया गया है ।

---

27. देखे-के0 क्रेनिस्टन, "ए सेकेण्ड लुक एट द कमिटेड, "सोशल पालिसी" (जुलाई-अगस्त, 1971), पृष्ठ 6-18, आइ0सी0होरोविज और डब्लू0 एच0 फाण्लैण्ड, द नालेज फैक्ट्री : स्टूडेण्ट पावर एण्ड अकेडेमिक पालिटिक्स इन अमेरिका, (शिकागों : अल्डाइन प्रेस, 1970).

28. उदाहरणार्थ, देखें-जे0 राउनट्री तथा एम0 राउनट्री, 'द पालिटिकल इकोनामी आफ यूथ", इण्टरनेशनल सोशलिस्ट जर्नल, (फरवरी, 1968).

29. इन सिद्धान्तों से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण आधुनिकतम अध्ययन के लिये, देखें : डी मार्शलैण्ड, सोशियोलाजिकल एक्सप्लोरेशन्स इन द सर्विगं आफ यूथ (लाइसेस्टर : यूथ ब्यूरों, 1978), एस0मसग्रोव, एक्सटेसी एण्ड होलीनेस : काउन्टर कल्चर एण्ड द ओपेन सोसाइटी (लन्दनः मेथुएन, 1974), आर0जे0हेवीवर्स्ट तथा पी0एच0हेसर (सम्पादक), यूथ (शिकागों, नेशनल सोसाइटी फार द स्टडी आफ एजूकेशन, 1975).

30. सामाजिक प्रतिक्रिया सिद्धान्त के लिए, देखेः स्टेन कोहेन, मारल पैनिक्स एण्ड फाक डेविल्स ( लन्दन : मैकगिव्वन एण्ड को, 1972) डेविड एम0 स्मिथ, 'एडोलिसेन्सः स्टडीआफ स्टीरियों टाइपिंग", सोसियोलाजिकल रिव्यू, खण्ड 18, अंक 2 (जुलाई 1970), पृष्ठ 197-211.

31. जे यंग, 'द डिम्पीज-एन ऐसे इन द पालिटिकल्स आफ लेजर", आई0 टेलर तथा सी0 टेलर (सम्पादक), पालिटिक्स एण्ड डेविएन्स (हारमान्डसवर्थ : पेनग्विन प्रेस, 1973) में इस सिद्धान्त को हरवर्ट कोहेन ने काफी समय पहले ही प्रतिपादित कर दिया था । देखें ए0के0कोहेन, डेलिविवेण्ट व्यायज (न्यूयार्कः द फ्री प्रेस, 1955) विशेष जानकारी के लिये देखें एम0 ब्रेक, द सोशियालाजी आफ यूथ कल्चर एण्ड यूथ सब कल्चर्स (लन्दन : राउटलेज एण्ड केगान पाल, 1980).

32. मार्क्सवादी विश्लेषण की वैधता के लिये, देखें : आई0 टेलर, पी0 वाल्टन और जे यंग, क्रिटिकल क्रिमिनालाजी (लन्दन : राउटलेज एण्ड केगानपाल, 1973).

**आकांक्षाओं के मूल्यांकन के दृष्टिकोंण -**

आकांक्षाओं के मूल्यांकन के दो प्रचलित दृष्टिकोंणं हैं, आदर्शवादी और उपयोगितावादी । आदर्शवादी दृष्टिकोंण के अनुसार उपाधि प्राप्त करना ही शिक्षा का उद्देश्य नहीं है वरन् शिक्षा का उद्देश्य है "ज्ञान, ज्ञान के लिये", । इस दृष्टिकोंण से स्नातक या पंरास्नतक या उससे आगे की उपाधि उच्च उपाधि कही जायेगी, क्योंकि इसके अर्जन में विस्तृत विषयों का अध्ययन करना पड़ता है । आदर्शवादी आधार पर एम0ए0 उपाधि, एम0बी0बी0एस0 या बी0ई0 की उपाधि से उच्च है, परन्तु आदर्शवादी मानदण्ड सम-सामयिक परिवेश में उपयोगी नहीं है, क्योंकि व्यवहार रूप में एम0बी0बी0एस0 या बी0ई0 की उपाधियॉं, एम0ए0 की तुलना में अधिक प्रतिष्ठापूर्ण समझी जाती हैं ।

उपयोगितावादी दृष्टिकोंण के अनुसार शिक्षा, अर्थ, सुविधा और सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने का साधन है । उदाहरणार्थ, बी0ई0 या एम0बी0बी0एस0 की उपाधियॉं एम0ए0, एम0एस-सी0 या एम0काम0 की उपाधियों से अधिक सम्मानित मानी जाती हैं क्योंकि उसमें अर्थ और प्रतिष्ठा अपेक्षाकृत अधिक प्राप्त होती हैं ।

इस अध्यन में शैक्षणिक और व्यावसायिक आकांक्षाओं के मूल्यांकन के लिए उपयोगितावादी दृष्टिकोंण को अपनाया गया है । जहॉं प्राविधिक और व्यावसायिक शिक्षा और उससे सुलभ व्यवसाय जैसे चिकित्सक तथा अभियन्ता को सफेदपोश व्यवसाय जैसे - अध्यापन और अन्य नौकरियों और स्वतंत्र व्यवसाय जैसे - कृषि, व्यापार और सामाजिक सेवा की तुलना में उच्च समझा गया है ।

**आधार-सामग्री संसाधन -**

आधार सामग्री संसाधन काई-स्क्वायर ( $x^2$ ) के माध्यम से स्वतन्त्र चर तथा युवतियों की आकांक्षाओं और मूल्यों के बीच सह सम्बन्ध की परीक्षा की गई है । काई-स्क्वायर में 5% सम्भावना के स्तर को स्वीकार किया गया है ।

विगत विवरण में अध्ययन क्षेत्र तथा पद्धति पर प्रकाश डाला गया है प्रथमतः समस्या का निरूपण करते हुये अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्यों का उल्लेख किया गया, तदुपरान्त प्राक्कल्पनाओं को प्रस्तुत कर सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा की गई, मौलिक प्रत्ययों की परिभाषा के पश्चात् अनुसंधान-अभिकल्प का विवरण प्रस्तुत किया गया । इसी तारतम्य में समग्र तथा उसकी इकाइयों एवं तथ्य संकलन प्रविधि क्षेत्र कार्य आदि को स्पष्ट किया गया । स्वतंत्र चरों का उल्लेख कर आकांक्षाओं के स्तर निर्धारण के दृष्टिकोणों का वर्णन किया गया ।

अध्याय – दो

# सामुदायिक परिवेश

पूर्ववर्ती अध्याय में अध्ययन-क्षेत्र तथा अनुसंधान अभिकल्प का विवरण प्रस्तुत किया गया । इस अध्याय में उस सामुदायिक परिवेश पर ध्यान केन्द्रित किया जायेगा जहाँ प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित तथ्यों को एकत्र किया गया है । भौगोलिक दशाओं तथा सामाजिक संस्थाओं का समुदाय की सामाजिक संरचना और संस्कृति तथा उसके सदस्यों के प्रत्यक्ष ज्ञान पर बहुत हद तक प्रभाव देखने में आया है । अनेक चिन्तकों[1] ने, जिनका नाम और विचार लिखित इतिहास में सुरक्षित हैं, संकेत किया है कि किसी न किसी रूप में मनुष्य के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक विशेषताओं तथा सामाजिक और ऐतिहासिक घटनाओं पर भौगोलिक तथ्यों का प्रभाव पड़ता हैं । कोजिन ने तो यहाँ तक कह डाला है :

> "मुझे किसी देश के मानचित्र को, उसकी समाकृति, उसकी जलवायु, उसके जल साधन, उसकी हवाओ और उसकी समस्त भौतिक भूगोल को दें । उसके प्राकृतिक उत्पादन, उसकी वनस्पति, उसके प्राणितत्व को दें, और मैं आपको यह बताने का वचन देता हूँ कि उस देश का आदमी कैसा होगा और वह देश इतिहास में कौन सी भूमिका निभायेगा और, यह आकस्मिक नहीं हैं, वरन आवश्यक है, किसी एक युग के लिए ही नहीं वरन् समस्त युगों के लिये सत्य हैं[2]।"

यों कोजिन का उक्त कथन सही भी हो तो भी हीगल की चेतावनी को ध्यान में रखना होगा, जो उन्होंने भौगोलिक परिवेश के सम्बन्ध में दी थी, "मेरे समक्ष भौगोलिक निर्धारण की बात न करें । जहाँ एक समय ग्रीक रहते थे आज वहीं

---

1. लार्ड काम्ब्रे, स्केचेंज आफ द हिस्ट्री आफ मैन, खण्ड 4 (1928) लार्ड काम्ब्रे ने अपनी इस कृति में अनेक चिन्तकों का उल्लेख किया है जिन्होंने जलवायु के महत्व पर प्रकाश डाला है । इससे सम्बन्धित आधुनिक आलोचनात्मक अध्ययन के लिये देखें पितिरिम ए० सोरोकिन, कन्टेम्पोरेरी सोशियोलाजिकल थियरीज टू द फर्स्ट क्वार्टर आफ द ट्वेण्टिएथ सेन्चुरी (न्यूयार्क : हार्पर टार्च बुक्स, 1928) अध्याय 3.

2. कोजिन, इन्ट्रोडक्शन ए० एल० हिस्ट्री डी० ला फिलासफी, लुसिएन फ्रेबे ए ज्योग्राफिकल इण्ट्रोडक्शन टू हिस्ट्री ( लन्दन : राउटलेज एण्ड केगान पाल 1925) पृष्ठ 10 पर उद्धृत ।

तुर्क रहते हैं यह इस प्रश्न का सही उत्तर हैं" । हीगल की इस चेतनावनी के बावजूद भी भौगोलिक तथ्यों के महत्व को नकारा नहीं जा सकता । भौगोलिक तथ्यों से कहीं अधिक महत्व सामाजिक संस्थाओं को प्रदान किया गया है । विचारधाराओं में मत वैषम्यता के होने पर भी यह एक समाजशास्त्रीय सत्य है कि मनुष्य का प्रत्यक्ष ज्ञान सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश और सामाजिक वास्तविकता की उपज है[3] । एक विचारक ने तो यहाँ तक कह डाला है कि -

"हम उन संस्थाओं की ही उपज है जिनका हमनें निर्माण किया और यह ऐसा इसलिए है कि हमने उनका निर्माण किया है, मनुष्य और उसके कार्यों के बीच इतनी पेचीदी अन्तर्क्रिया है कि मनुष्य के ऊपर उसके कार्य का प्रभाव पड़ता है, जिसके कारण वह अन्य कार्य करने के लिये उत्तेजित होता हैं, और उसका प्रभाव उस पर पुनः पड़ता है और यह क्रम सतत चलता रहता है । इससे यह कह पाना असम्भव हो जाता है कि कौन सा काम मनुष्य का मनुष्य की हैसियत से है और कौन सा काम उसके कार्य की हैसियत से है ।"[4]

भौगोलिक तथा सामाजिक संस्थाओं के महत्व को ध्यान में रखकर अनुवर्ती पृष्ठों में अध्ययन के सामुदायिक परिवेश का विवरण प्रस्तुत करेंगे ।

---

3. ऑगस्त काम्टे, द पाजिटिव फिलासफी, खण्ड 2 पृष्ठ ।। कार्ल मार्क्स, एकोनामिक एण्ड फिलासफिकल मैन्यूस्क्रिप्ट्स आफ 1984 (मास्को : फॉरेन लैंग्वेज पब्लिशिंग हाउस, 1961 (पृष्ठ 105, इमाइल बेन्वायटस्मुल्यान, "द सोशलिज्म आफ इमाइल दुरखीम एण्ड हिज स्कूल," पृष्ठ 499-537, एच ई बार्न्स (सम्पादक) ऐन इन्ट्रोडक्शन आफ सोशियोलाजी, (शिकागों यूनिवर्सिटी आफ शिकागो प्रेस, 1948), राबर्ट के मर्टन, सोशल थियरी एण्ड सोशल स्ट्रक्चर ( नई दिल्ली : अमेरिण्ड पब्लिशिंग कंपनी, 1975) पृष्ठ 162 चार्ल्स एच0 कूले, ह्यूमैन नेचर एण्ड द सोशल आर्डर ( न्यूयार्क : स्क्रिबनर्स 1902), पृष्ठ 33, 152, मुजफर शरीफ, द साइकोलाजी आफ सोशल नामन, (न्यूयार्क : हार्पर एण्ड रो, 1936)

4. जे0 के0 पेबुलमैन, द इन्स्टिच्यूशन्स आफ सोसायटी( 1956)पृ 80

प्रस्तुत अध्ययन भारतवर्ष के उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित बांदा जनपद के नगरीयं परिवेश में स्थित महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं पर किया गया है । भारत का क्षेत्रफल 32.87 लाख वर्ग कि0मी0 हैं । तथा 1991 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 84 करोड 90 लाख थी । जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर 1981 और 1991 के बीच 23.50 प्रतिशत रही थी[5] । जनसंख्या का घनत्व 267 व्यक्ति प्रति वर्ग कि0मी0 हो गया[6] । वर्ष 1991 में 54 करोड़ 97 लाख हिन्दू, 7 करोड़ 55 लाख मुसलमान, 1 करोड़ 61 लाख इसाई, 1 करोड़ 30 लाख सिख, 4 लाख 719 हजार बौद्ध, 3 लाख 206 हजार जैन तथा 2 लाख 866 हजार लगभग अन्य धर्म वाले थे । प्रतिशत के पदों में कुल जनसंख्या का 82.64 प्रतिशत हिन्दू, 11.35 प्रतिशत मुसलमान, 2.43 प्रतिशत ईसाई, 1.96 प्रतिशत सिख, 0.71 प्रतिशत बौद्ध, 0.48 प्रतिशत जैन तथा 0.43 प्रतिशत अन्य धर्मो के लोग थे । भारत की समस्त जनसंख्या में 23.51 प्रतिशत अनुसूचित जाति व जनजाति के लोग थे[7] ।

भारत 25 राज्यों में बंटा हुआ है जिसमें एक राज्य उत्तर प्रदेश है जिसका क्षेत्रफल 2,94,411 वर्ग कि0मी0 है जनसंख्या 1,38,760,417 है जिसमें 73,745,994 पुरूष तथा 65,014,423 स्त्रियाँ हैं । साक्षरता प्रतिशत 41.71 प्रतिशत है । उत्तर प्रदेश में 63 जिले हैं[8] जिसमें से बांदा भी एक जिला है । बांदा जनपद का अपना स्वतंत्र अस्तित्व है । इसका अक्षांशीय विस्तार 24°53' उत्तर से 25°55' उत्तर तक तथा देशान्तरीय 80°07' पूर्व से 81°34' पूर्व तक है । इसका क्षेत्रफल[9] 7624 वर्ग कि0मी0 है । इसको यमुना नदी उत्तरी भाग में, इलाहाबाद पूर्वी भाग में, हमीरपुर पश्चिम में तथा दक्षिण में मध्य प्रदेश का प्रान्त आवृत किये हुए है । यमुना नदी ने

---

5. मनोरमा इयर बुक 1993 मलयाला मनोरमा कोट्टयम, केरल, पृष्ठ 231 ।
6. जनसंख्या के घनत्व में आसाम और जम्मू कश्मीर का आंकड़ा सम्मिलित नहीं है ।
7. मनोरमा इअर बुक 1993 मलयाला मनोरमा कोट्टयम, केरल पृष्ठ सं0 246-247
8. पूर्वोक्त पृष्ठ 179
9. जिला बांदा का औद्योगिक रूपरेखा, प्रतिवेदन, उद्योग निदेशालय उ0 प्र0 कानपुर पृष्ठ 1 से उद्धृत ।

इस जनपद को अपना अमूल्य योगदान देकर इसका महत्व अधिक बढ़ा दिया है । बांदा का दक्षिणी भाग ग्रेनाइट एवं नीस चट्टानों द्वारा निर्मित हैं । यहाँ की भूमि का ढाल दक्षिण पूर्व से उत्तर की ओर है । इस जनपद की अधिकांश नदियाँ बरसाती हैं । गर्मी के दिनों में ये नदियाँ या तो एकदम सूख जाती हैं या इनमें पानी बहुत कम रह जाता है । बांदा जनपद के क्षेत्र में मार, काबर, पडुआ व राकड़ मिट्टयों में मार मिट्टी सर्वोत्तम है । इसमें उर्वरा शक्ति भी अधिक हैं ।

कर्क रेखा जिस पर सूर्य की सीधी किरेणें 21 जून को पड़ती हैं, इसी भू-भाग के मध्य से होकर जाती है । इस भू-भाग के उत्तर-पश्चिम भाग की ओर थार का बड़ा मरुस्थल है । जिससे जलवायु में विषमता है । गर्मी का तापक्रम 118° फा0 तथा जाड़ों का तापक्रम 50° फा0 से 76° फा0 के बीच में रहता है । जिले में वर्षा का वार्षिक औसत 40 इंच है । अधिकांश वर्षा ग्रीष्म ऋतु के बाद होती है । जाड़े की वर्षा जो अपर्याप्त है, 'महावट' कहलाती है । यह रबी की फसल के लिए रामबाण[10] है ।

बांदा जनपद का अपना एक इतिहास है जिसकी झलक 1882 ई0 में खोजे गये पत्थरों तथा अन्य औजारों में पायी जाती है । पाषाण कालीन औजारों के नमूने मानिकपुर और निकटवर्ती क्षेत्र में पाये गये है । ऐसा प्रतीत होता है कि प्रागैतिहासिक काल में इस क्षेत्र में आदिम जाति के लोगों जैसे भील कोल का निवास रहा हो जिनके वंशज आज भी जिले के विन्ध्य वनों में निवास करते हैं । इस क्षेत्र से सम्बन्धित सर्वप्रथम ज्ञात आर्य लोग चेदि वंश के थे ।

इस क्षेत्र का सर्वप्रथम ज्ञात पारम्परिक शासक ययाति था । ययाति के पाँच पुत्र थे । उसके बाद उसके सबसे बड़े पुत्र यदु ने चर्मनवती (चम्बल) वेत्रवती

---

10. 'कामद क्रान्ति' 1972 "बुन्देल प्रदेश का आर्थिक अध्ययन' बांदा जिले के शिक्षा विभाग की ओर से प्रकाशित

(बेतवा) और शुक्तिमती (केन) नदियों के जल से सिंचित प्रदेश को पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त किया जो वर्तमान बांदा जिले में है ।

ऐसा कहा जाता है कि यह क्षेत्र महर्षि वाल्मीकि और बामदेव (राम के समकालीन) की तपोभूमि थी । महर्षि बामदेव के नाम पर इस जिले का नाम बाँदा पड़ा । चित्रकूट की पवित्र पहाड़ियाँ राम, सीता और लक्ष्मण के बनवास के समय निवास के रूप में प्रसिद्ध हैं । पयस्वनी के तट पर स्थित सीतापुर के बारे में कहा जाता है कि यहाँ राम और सीता रहते थे । सीतापुर से डेढ़ कि0मी0 दूर कामदगिरि की चोटियों पर बहुत से सन्तों ने ध्यान और तपस्या से मोक्ष प्राप्त किया । पयस्विनी के दक्षिणी तट पर स्थित 'अनुसूइया जी' पौराणिक काल से सम्बन्धित अनुसूइया के निवास स्थान के रूप में प्रसिद्ध है । कालिंजर की प्रसिद्ध पहाड़ियों के बारे में कहा जाता है कि उन्हें यह नाम (कालिंजर) स्वयं शिव से मिला जो काल के रूप में समस्त तत्वों का विनाश करते हैं । इस प्रकार यह पवित्र और रमणीय गाथा इस जनपद की ईसा से हजारों वर्ष पूर्व ऐतिहासिकता पर प्रकाश डालती है[11] ।

232 ई0 पूर्व तक बांदा मौर्य साम्राज्य का अंग रहा । 326 ई0 के आसपास यह जनपद समुद्र गुप्त द्वारा जीत लिया गया । बांदा जिले की मऊ तहसील से आठ मील दूर गढ़वा नामक स्थान पर चन्द्रगुप्त द्वितीय के शिलालेख प्राप्त हुए हैं । जिससे यह सिद्ध होता है कि 525 ई0 तक यह जनपद गुप्त साम्राज्य के अन्तर्गत रहा ।

प्रथम स्वतंत्रता में भी बांदा का प्रमुख स्थान रहा है । तत्कालीन बांदा के नवाब और राव साहब तात्याटोपे के प्रबल सहायक थे । यही कारण है कि चित्रकूट की संस्कृति के साथ साथ युद्ध, आतंक और कठोरता का सामानान्तर विकास होता रहा गत सौ वर्षो में इस जनपद में केवल दो लाख व्यक्तियों की वृद्धि हुई । प्रदेश के प्रतिवर्ग

---

11. "उ0 प्र0 बांदा जिले का गजेटियर" उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रकाशित-1988, पेज सं0 29 ।

वर्ग मील जनसंख्या के परिप्रेक्ष्य में बांदा की प्रति मील जनसंख्या आधी ही है । प्रदेश के शिक्षित व्यक्तियों की तुलना में अभी यहाँ के आधे से अधिक व्यक्ति अशिक्षित हैं । जनसंख्या के लगभग नगण्य प्रतिशत लोग उद्योग में लगे है और यह उद्योग भी मुख्यतः लघु एवं कुटीर उद्योग हैं । निर्धनता चारों ओर मुँह बाये खड़ी हैं । पेयजल की समस्या यहाँ के निवासियों को यह कहने पर बाध्य करती है कि हम अपने प्रिय जन की मृत्यु तो सहन कर सकते हैं, किन्तु पानी से भरा घड़ा टूटना सहन नहीं होता ।

बांदा के रमणीय ग्राम्य अंचलों के मध्य अपनी पौराणिक एवं ऐतिहासिक गरिमा को अक्षुण्य रखे बांदा नगर आंशिक आधुनिकता का बोध कराता है । नगर के दक्षिण भाग में स्थित हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि पद्‌माकर जी का मन्दिर यहाँ की साहित्यक परम्परा की ओर संकेत करता है जो रीति-काव्य पम्परा के कवि शिरोमणि थे । ज्ञातव्य है कि इसी जनपद में स्थित राजापुर नामक स्थान में महान लोकनायक एवं समन्वयकारी कवि तुलसीदास जी ने जन्म लेकर इसे समृद्ध और विभूति सम्पन्न किया और आत्मचेतना की ज्योति जलाई[12] ।

वर्ष 1991 की जनगणनानुसार जनपद की कुल जनसंख्या 18,74,541 थी जिसमें पुरूषों की संख्या 10,17,760 और स्त्रियों की संख्या 8,56,781 है ।

बांदा जनपद में कुल छः तहसीलें है जिनके नाम हैं - बांदा, बबेरू, अतर्रा, नरैनी, कर्वी और मऊ । प्रशासनिक दृष्टि से जनपद ग्रामों तथा नगरों में विभक्त है । तीन नगरपालिकाएं हैं जो बांदा, चित्रकूटधाम तथा अतर्रा में हैं । कुल 1204 ग्राम हैं जिनमें 918 ग्रामसभायें है, 8 टाउनएरिया तथा एक जिला परिषद है । जनपद में कुल 13 विकास खण्ड है जिनके नाम हैं : चित्रकूट, पहाड़ी, मानिकपुर, नरैनी, महुआ, कमासिन, बबेरू, बिसण्डा, जसपुरा, तिन्दवारी, बड़ोखर खुर्द, मऊ तथा रामनगर ।

---

12. "कामद क्रान्ति", "बांदा जनपद : एक ऐतिहासिक परिचय" बांदा जिले के शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित पेज सं0, 185-189 ।

इस जनपद में 118 न्याय पंचायत, 276 डाकघर जिनमें से 254 ग्रामीण क्षेत्र में तथा शेष नगरीय क्षेत्र में हैं । 989 टेलीफोन है जो सभी नगरीय क्षेत्र में है[13] ।

बांदा जनपद में रेलवे लाइन की कुल लम्बाई 200 कि0मी0 है । ये बांदा को इलाहाबाद, झाँसी, कानपुर, लखनऊ, मानिकपुर तथा जबलपुर से जोड़ती है । मध्य रेलवे की तीन लाइनें यहाँ से जाती हैं (1) झांसी-मानिकपुर लाइन (2) बांदा-कानपुर-लखनऊ लाइन (3) इलाहाबाद-इटारसी लाइन । जिले की सम्पूर्ण सड़कों की लम्बाई 1324 कि0मी0 हैं ।

इस जनपद में जल विद्युत शक्ति रिहन्द से आती है जिसका उपयोग लघु उद्योगों तथा दैनिक घरेलू कार्यो में होता है ।

जनपद में इस समय 36 राष्ट्रीयकृत बैंक शाखायें तथा 83 ग्रामीण बैंक हैं, 4 भूमि विकास बैंक की शाखाएं हैं, किसानों की आर्थिक सहायता के लिए जिला सहकारी बैंकों की भी व्यवस्था है, जिनके माध्यम से किसानों को कृषि कार्य हेतु ऋण प्रदान किये जाते हैं । पशुओं की नस्लों में सुधार करने के लिए प्राप्त आंकड़ों के आधार पर 1991 तक जनपद में 34 पशु सेवा केन्द्र तथा 33 पशु चिकित्सालय खोले गये जहाँ नस्ल सुधार तथा पशुओं की देखभाल का कार्य होता है[14]।

जनपद बांदा उत्तर प्रदेश में अन्य जिलों की तुलना में कम वर्षा का क्षेत्र हैं । सिंचाई प्रधानतया नहर, नलकूप, कुंए तथा तालाबों से की जाती हैं । कुल 84015 हैक्टेयर सिंचित क्षेत्र हैं ।

यह जनपद औद्योगीकरण के क्षेत्र में बहुत ही पिछड़ा है ।

---

13. सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद बाँदा 1991, कार्यालय अर्थ एवं संख्याधिकारी, बाँदा, अर्थ एवं संख्या प्रभाग राज्य नियोजन संस्थान उ0 प्र0 ।

**शैक्षणिक सुविधा -**

जनपद में साक्षरता का प्रतिशत बहुत ही कम है । 1991 की जनगणना के अनुसार जनपद में प्रति हजार में 541 व्यक्ति साक्षर थे जिसमें पुरुषों की संख्या प्रति हजार में 426 थी तथा स्त्रियों की संख्या 115 थी ।

1991 में जनपद में कुल 1313 प्राथमिक विद्यालय, 287 सीनियर बेसिक विद्यालय, 63 हाईस्कूल एवं इण्टर कालेज तथा 5 महाविद्यालय थे, जिनमें से बालिकाओं के 53 सीनियर बेसिक विद्यालय, 8 हाईस्कूल एवं इण्टर कालेज तथा एक महाविद्यालय है[15] । सारणी 2.1 में शिक्षा सुविधा को स्पष्ट किया गया है ।

सारणी 2.1

जनपद में शिक्षा सुविधा

| विद्यालय | 1981 | | 1991 | |
|---|---|---|---|---|
| | कुल | बालिका | कुल | बालिका |
| 1. प्राथमिक विद्यालय | 1350 | - | 1313 | - |
| 2. सीनियर बेसिक विद्यालय | 188 | 289 | 287 | 53 |
| 3. हाईस्कूल एवं इण्टर कालेज | 48 | 6 | 63 | 8 |
| 4. महाविद्यालय | 3 | - | 5 | 1 |

1981 में प्राथमिक विद्यालय 1350 थे जिनमें से 27 विद्यालयों को प्रोन्नत (अपग्रेड) कर सीनियर बेसिक विद्यालयों में परिवर्तित कर दिया गया । 188 सीनियर बेसिक विद्यालयों की संख्या बढ़कर 1991 में 287 हो गयी जिसमें से बालिकाओं के लिए 8 विद्यालय

---

14. सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद बांदा 1991, कार्यालय अर्थ एवं संख्याधिकारी बांदा, अर्थ एवं संख्या प्रभाग राज्य नियोजन संस्थान उ0 प्र0 ।

15. पूर्वोक्त ।

हैं । 1981 में 3 महाविद्यालय थे जिनमें सहशिक्षा प्रणाली थी जो बढ़कर पांच हो गए हैं जिनमें से एक महिलाओं के लिये हैं ।

बांदा जिले में अध्ययन वर्ष 1988-89 में नगरीय परिवेश के कुल पाँच महाविद्यालय थे जिनमें से अध्ययन हेतु 3 (चित्र 2.1) को चुना गया है ।

अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कालेज जिले का प्रथम महाविद्यालय है जिसकी स्थापना 1960 में हुई । महाविद्यालय में चार संकाय हैं - कला, विज्ञान, शिक्षा एवं वाणिज्य । वाणिज्य संकाय में 88-89 के सत्र में किसी भी छात्रा ने प्रवेश नहीं लिया था । कला संकाय में हिन्दी, संस्कृत, राजनीति विज्ञान, भूगोल एवं अर्थशास्त्र तथा शिक्षा संकाय (बी0एड0, एम0एड0) परास्नातक स्तरीय अध्ययन एवं शोध की सुविधा सीमित साधनों की अनूठी उपलब्धि हैं । विज्ञान संकाय में जन्तुविज्ञान, वनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान एवं गणित विषय हैं । इस महाविद्यालय में पुस्तकालय तथा क्रीड़ा भवन को छोड़कर शिक्षण, कार्यालय तथा प्रशासनिक कक्षों की कुल संख्या 168 हैं । बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय में मात्र यही एक ऐसा महाविद्यालय हैं जहाँ पर छात्रावास की सुविधा उपलब्ध हैं । इसमें 40 आवासीय कक्ष हैं । इसमें सहशिक्षा प्रणाली है[16] ।

पं0 जवाहर लाल नेहरू महाविद्यालय की स्थापना 1964 में पं0 नेहरू की पुण्य स्मृति में की गयी । इस महाविद्यालय में छात्र-छात्राओं के एक साथ अध्ययन करने की सुविधा हैं । 1964 में महाविद्यालय स्नातक (कला) कक्षाओं से प्रारम्भ हुआ था । वर्ष 1966 में गणित-वर्ग तथा 1968 में जीव विज्ञान वर्ग में विज्ञान संकाय की कक्षाएं प्रारम्भ हुई । 1968 में ही भूगोल तथा सैन्य अध्ययन विषयों को भी मान्यता प्राप्त हुई । 1969 में परास्नातक कक्षाएं व बी0एड0 कक्षाएं प्रारम्भ करने का गौरव

---

16. अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, अतर्रा कालेज द्वारा प्राप्त प्रगति आख्या पर आधारित वर्ष 1988-89 ।

# बांदा जनपद के नगरीय परिवेश के तीन महाविद्यालय

## सूची

- अतर्रा नगर
  1. पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, अतर्रा (बाँदा)
- बांदा नगर
  2. पं. जे.एन. डिग्री काजेज बाँदा
  3. राजकीय महिला महाविद्यालय, बाँदा,

जनपद बांदा

फतेहपुर

हमीरपुर

बबेरू

बाँदा 2 3

इलाहाबाद

अतर्रा 1

करवी

नरैनी

मध्य प्रदेश

मऊ

इलाहाबाद

मानिकपुर

मध्य प्रदेश

45′ 30′ 15′ 25°

80° 15′ 30′ 45′ 81° 15′ 30′
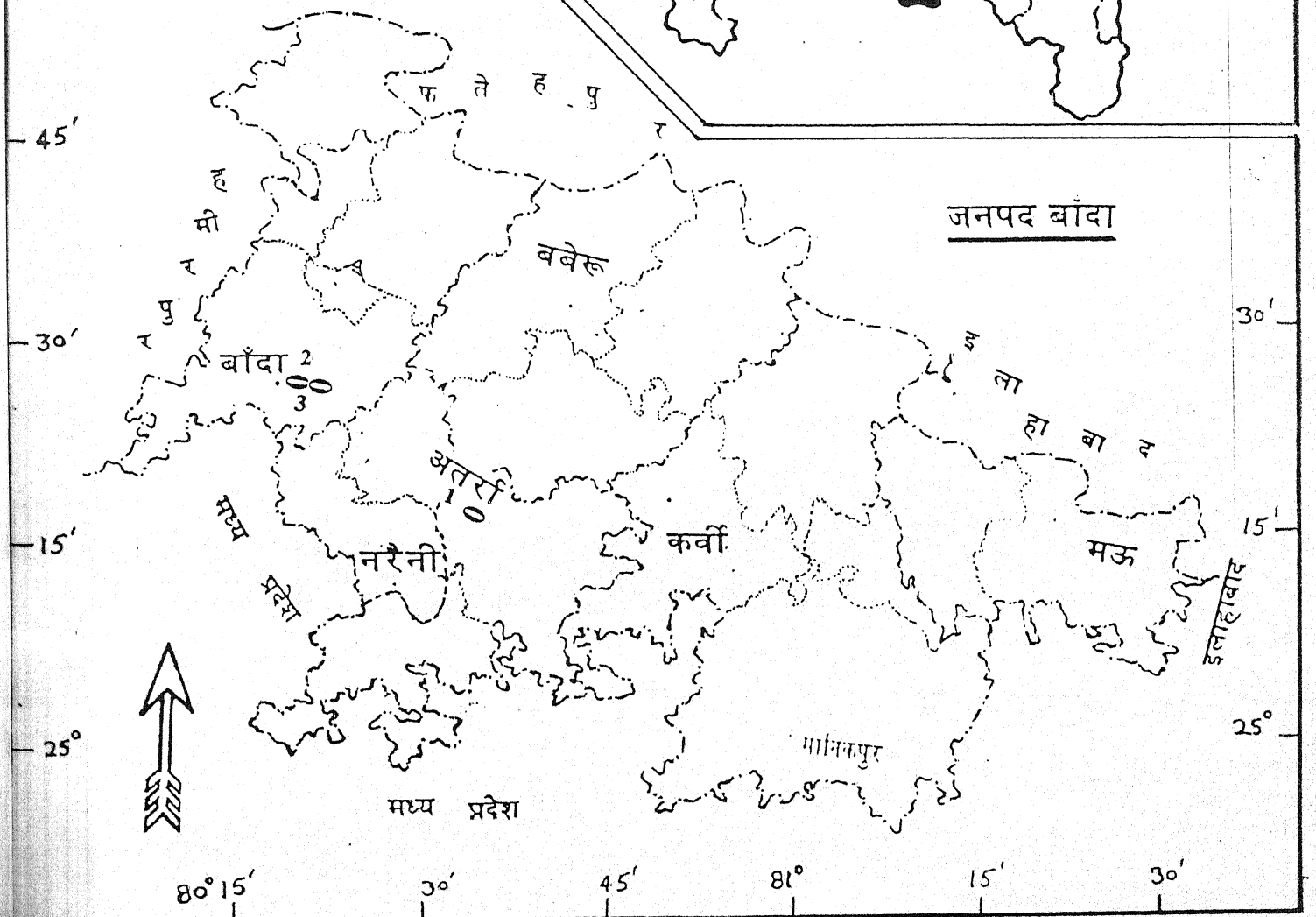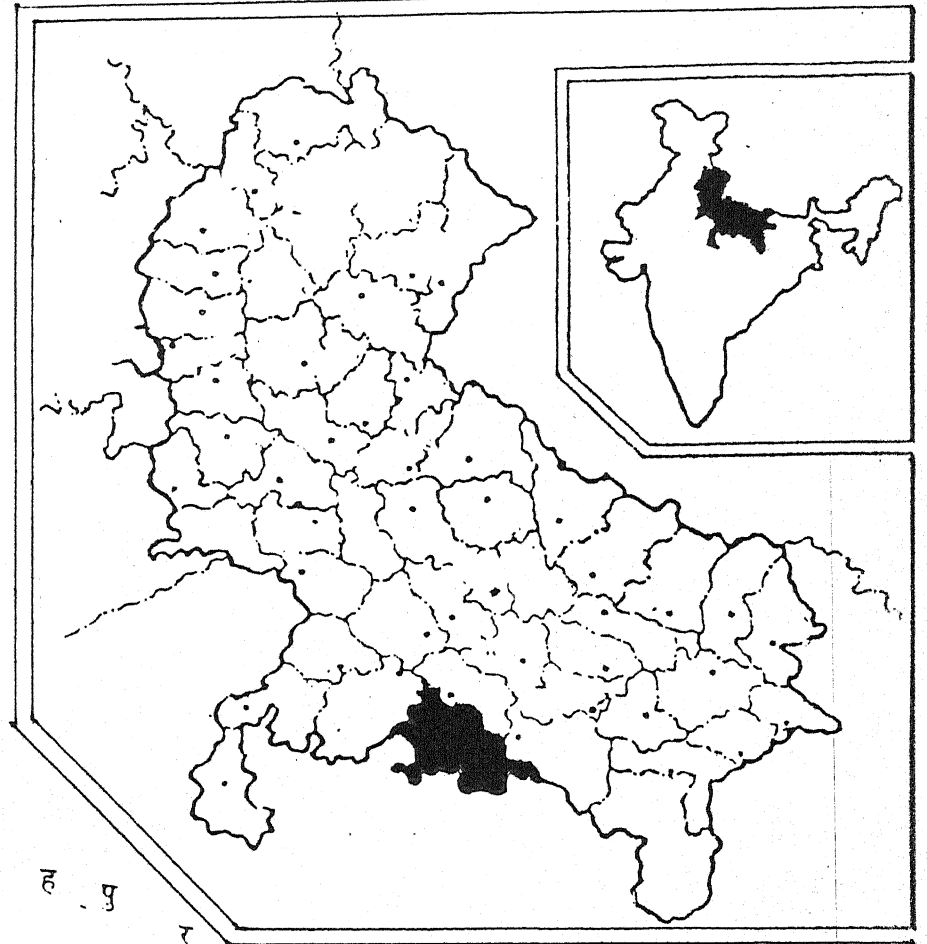
चित्र 2.1

महाविद्यालय को प्राप्त हुआ[17] ।

महिलाओं की शिक्षा सुविधा को ध्यान में रखते हुये राजकीय महिला महाविद्यालय की स्थापना 15 अगस्त, 1978 में की गई थी । अपने स्थापना वर्ष में इस महाविद्यालय में कुल सात विषयों हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, शिक्षाशास्त्र एवं अर्थशास्त्र में स्नातक कक्षायें प्रारम्भ हुईं । 1980 में गृह विज्ञान, इतिहास एवं संगीत विषय की कक्षायें प्रारम्भ हुई । वर्ष 1986 से एम0 ए0 समाजशास्त्र एवं हिन्दी की कक्षायें भी प्रारम्भ कर दी गयीं । छात्राओं के सर्वतोन्मुखी विकास की दृष्टि से उन्हें भावी जीवन के संग्राम के लिये स्वस्थ एवं बौद्धिक योग्यता प्रदान करना शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य हैं । अतः छात्राओं को स्वावलम्बी बनाने की दृष्टि से बुनाई की शिक्षा भी दी जा रही हैं । इस महाविद्यालय में केवल कला संकाय है[18] ।

उपरोक्त तीनों महाविद्यालय, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी से सम्बद्ध हैं ।

जनपद में प्रौढ़ व्यक्तियों को साक्षर बनाने की भी योजना चल रही है ।

विगत विवरण में अध्ययन क्षेत्र तथा पद्धति पर प्रकाश डाला गया । अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्यों का उल्लेख करने के पश्चात् प्राक्कल्पनाओं को प्रस्तुत किया गया । तदपुरान्त साहित्य समीक्षा और मौलिक प्रत्ययों की अवधारणा को स्पष्ट करके अनुसंधान अभिकल्प का विवरण प्रस्तुत किया गया । इसी तारतम्य में समग्र तथा तथ्य संकलन पद्धति, क्षेत्र कार्य आदि को स्पष्ट किया गया । स्वतन्त्र चरों का उल्लेख कर आकांक्षाओं के स्तर निर्धारण के दृष्टिकोणों का भी वर्णन किया गया ।

---

17. पं0 जवाहर लाल नेहरू महाविद्यालय, बांदा की प्रवेश विवरणिका सन् 1991-92 ।

18. राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बांदा की वार्षिक पत्रिका "सुरसरि" दशक विशेषांक ।

अध्याय – तीन

# छात्राओं की सामाजिक पृष्ठभूमि

विगत अध्याय में छात्राओं के सामुदायिक परिवेश का विवरण प्रस्तुत किया गया । जिससे यह तथ्य उभर कर सामने आ सका कि आज की छात्रायें किस विशिष्ट सामुदायिक परिवेश में रह कर अध्ययन कर रही हैं । सामुदायिक परिवेश की विस्तृत विवेचना प्रस्तुत की जा चुकी है । इस अध्याय में छात्राओं की सामाजिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण किया जायेगा ताकि लघु स्तर पर उस सामाजिक परिवेश का पता चल सके, जिसमें छात्राएं अभिसक्त हैं । सर्वविदित है कि सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश व्यक्ति के प्रत्यक्ष-ज्ञान[1], मूल्यों और आकांक्षाओं तथा व्यक्तित्व को प्रभावित करता है । छात्राओं के संदर्भ में सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश का महत्व और भी बढ़ जाता हैं क्योंकि युवावस्था जीवन निर्माण का समय है । इस अवस्था में युवती सामाजिक एवं सांस्कृतिक मान्यताओं को न केवल आत्मसात् करती है, अपितु वह उन्हें व्यवहार रूप में परिणित करने की भी चेष्टा करती हैं । छात्राओं के सामाजिक पृष्ठभूमि विवरण को दो व्यापक श्रेणियों में प्रस्तुत किया जायेगा- जीवन चक्र तथा जीवन पद्धति । जीवन चक्र से तात्पर्य उस निरन्तर क्रमिक परिवर्तन से है जो किसी जीव विशेष में एक प्रारम्भिक स्वरूप से दूसरे स्वरूप में होता रहता है, जैसे आयु, विवाह, धर्म आदि । जीवन पद्धति का अर्थ है मनुष्य का अपने सांस्कृतिक संदर्भ में जीवन निर्वाह करने का स्वरूप । इसके उदाहरण है : शिक्षा, आय, भौतिक प्रसाधन आदि ।

## जीवन चक्र -

**आयु** - यों तो आयु बुनियादी रूप में जैविक विशेषता है, तथापि समाज में आयु के अनेक अभिप्रेत अर्थ हैं । अतः कोई भी समाज आयु के महत्व की उपेक्षा नहीं कर सकता । आयु एक ऐसा जैविक तथ्य है जो पद एवं कार्य की सामाजिक

---

1. कार्ल मैनहोम, आइडियोलाजी एण्ड यूटोपिया (लन्दन राउटलेज एण्ड कंगान पाल, 1936), पृष्ठ 5-12, जार्ज हरवर्ट मीड, माइण्ड, सेल्फ एण्ड सोसाइटी (शिकागो: यूनिवर्सिटी आफ शिकागो प्रेस, 1934) पृष्ठ 135

परिभाषा की सीमा का निर्धारण करता है । विविध समाजों में पाये जाने वाले आयु-वर्गीकरणों से आयु के महत्व का पता चलता है[2] । समस्त मानव समाज 'युवा' की आयु श्रेणी को स्वीकार करता है[3] । फिर भी, उनकी मान्यताओं में अन्तर होता है उदाहरणार्थ, आदिम तथा कृषक समाजों में युवतियों के ऊपर उत्तरदायित्व कम आयु में ही आ जाता है, जबकि औद्योगिक समाजों में स्थिति भिन्न होती है[4] । परिवर्तित समाज में समूह के रूप में युवाओं[5] का विशेष महत्व है । इस आयु में युवा तीव्र शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन का अनुभव करते हैं । युवावस्था व्यक्ति के जीवन का वह समय है जब उसमें उतनी बौद्धिक[6] तथा लैंगिक[7] शक्ति होती हैं, जितनी मनुष्य के जीवन की किसी भी अन्य अवस्था में नहीं होती, तथापि युवा को समस्त समाजों में सामाजिक दृष्टि से अपरिपक्व समझा जाता है[8] । उसकी गिनती न तो बच्चों में की जाती है और न ही प्रौढ़ो में

---

2. एस0 एन0 आइजेनस्टाट, फ्राम जेनरेशन टू जेनरेशन : एज ग्रुप एण्ड सोशल स्ट्रक्चर (न्यूयार्क : दी फ्री प्रेस, 1956).

3. विलवर्ट इ0 मूर, मैन, टाइम एण्ड सोसाइटी (न्यूयार्क : वाइली एण्ड सन्स, 1963) एस0 एन0 आइजेनस्टाट, "आर्केटाइपल पैटनर्स आफ यूथ, डीलक्स (विन्टर, 1962)

4. अर्नाल्ड वैन जेन्नेप, लेस राइट्स डी पैसेज (पेरिस : इमाइल नौवी, 1909), टालकाट पार्सन्स, "एज एण्ड सेक्स इन द सोशल स्ट्रक्चर आफ द यूनाइटेड स्टेट्स', अमेरिकन सोशियोलाजिकल रिव्यू, खण्ड 7 (1942), पृष्ठ 604-616.

5. युवकों को ("पीढ़ी" या 'हम उम्र साथी' (ए कोहार्ट) भी कहते हैं देखों नार्मन वी0 राइटर, 'द कोहार्ट एँज, कांसेप्ट इन द थ्योरी आफ सोशल चेन्ज" (अमेरिकन सोशियोलाजिकल एसोशियेशन की सितम्बर 1959 में प्रस्तुत निबन्ध), तथा मूर, पूर्वोक्त, पृष्ठ 58.

6. पी0 इ0 वर्नान, इण्टेलिजेन्स एण्ड अटेनमेण्ट टेस्ट्स, ( लन्दन : यूनिवर्सिटी आफ लन्दन प्रेस, 1960) पृष्ठ 152-154.

7. ए0सी0 किन्से, डब्लू0पी0 पोमरी और सी0इ0 मर्टिन, सेक्सुवल बिहैवियर इन द ह्यूमैन मेल ( फिलाडेलफिया : सौन्डर्स, 1941), पृष्ठ 219.

8. किंगसले डैविस, 'एडोलीसेन्स एण्ड द सोशल स्ट्रक्चर, ऐनल्स आफ द अमेरिकन अकादमी आफ पालिटिकल एण्ड सोशल साइन्स, खण्ड 236 (1944), पृष्ठ 8-16

छात्राओं के आयु विषयक तथ्य सारणी 3.1 में प्रस्तुत हैं ।

सारणी 3.1

छात्राओं की आयु, प्रतिशत में

| आयु कोष्ठक | छात्रायें |
|---|---|
| 16-20 वर्ष | 71.67 |
| 21-25 वर्ष | 28.33 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |
| छात्राओं की औसत आयु | 19.40 वर्ष |

सारणी के तथ्यों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक छात्रायें (71.67 प्रतिशत) 16 से 20 वर्ष की आयु की हैं । इसकी तुलना में 21 से 25 वर्ष की आयु की छात्राओं का अनुपात कम (28.33 प्रतिशत) है, । छात्राओं की औसत आयु 19.40 वर्ष पायी गयी ।

**धर्म** - धर्म का अस्तित्व प्रत्येक समाज में है, चाहे वह आदिम समाज हो या आधुनिकतम । धर्म अनेक महत्वपूर्ण सामाजिक भूमिकायें निभाता हैं । सामाजिक दृष्टि से धर्म समाज के मूल्य तथा व्यक्ति की आचरण संहित निर्धारित करता है[9] ।

9. बरनार्ड एस फिलिप्स, सोशियोलाजी : सोशल स्ट्रक्चर एण्ड चेन्ज (लन्दन) द मैकमिलन कम्पनी, 1969), पृष्ठ 304 धार्मिक और नैतिक एकीकरण में धर्म की भूमिका के लिये, देखें किंगसले डेविस, ह्यूमैन सोसाइटी (न्यूयार्क : द मैकमिलन कम्पनी 1969), पृष्ठ 141-144.

व्यक्तिगत दृष्टि से धर्म निराशा के क्षणों में व्यक्ति को सम्बल प्रदान करता है[10]। जबव्यक्ति दुखों मे फॅस जाता है, तो धर्म उसे सुरक्षा प्रदान करता है क्योंकि वह दुख को दैवी कोप मान लेता है । छात्राओं की धार्मिक पृष्ठभूमि उनके मूल्य एवं आकांक्षाओं पर प्रभाव डाल सकती है । सारणी 3.2 (चित्र 3.1) में छात्राओं की धार्मिक पृष्ठभूमि का विवरण प्रस्तुत है :

सारणी 3.2

छात्राओं की धार्मिक पृष्ठभूमि, प्रतिशत में

| धर्म | छात्रायें |
|---|---|
| हिन्दू | 91.67 |
| इस्लाम | 6.17 |
| जैन | 1.33 |
| इसाई | 0.50 |
| सिंख | 0.33 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

सारणी से स्पष्ट है कि अध्ययन की इकाइयों में हिन्दू छात्राओं की प्रधानता है (91.67 प्रतिशत) । दूसरे स्थान पर इस्लाम धर्म को मानने वाली छात्रायें हैं (6.17 प्रतिशत) ।जैन धर्म (1.33 प्रतिशत), इसाई धर्म (0.50 प्रतिशत) तथा सिख धर्म की अनुयायी छात्राओं का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम है (0.33 प्रतिशत) ।

---

10. टालकाट पारसन्सन, रेलिजस पर्सपेक्टिवस आफ कालेज टीचिंग इन सोशियालाजी एण्ड सोशल साइकोलाजी, (न्यू हैवेन द हैजेन फाउण्डेशन, 1952) पृष्ठ 15.

छात्राओं की धार्मिक पृष्ठभूमि (प्रतिशत में)
इस्लाम, 6.17
हिन्दू, 91.67
जैन, 1.33
ईसाई, 0.50
सिक्ख, 0.33
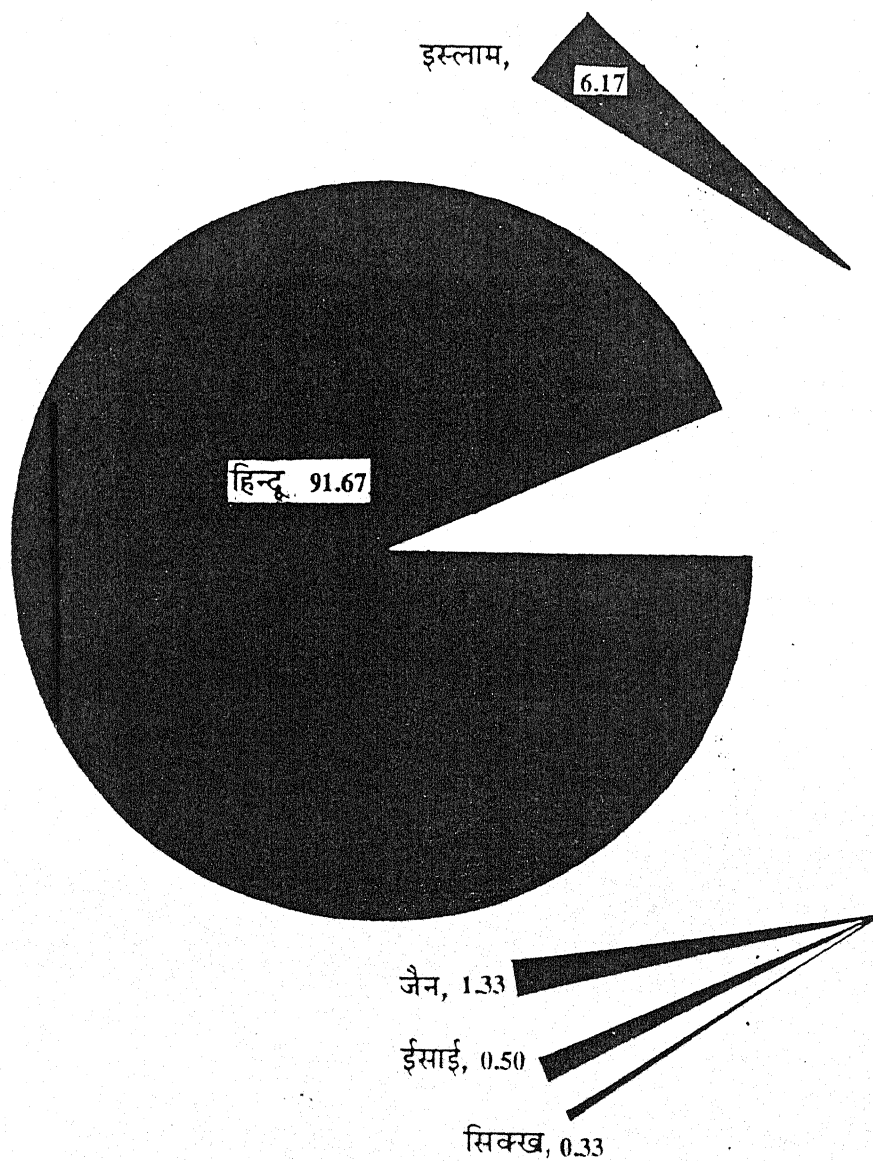
चित्र 3.1

**धार्मिक अभिरूचि -**

छात्राओं की धार्मिक भावनाओं पर भी एक दृष्टि डालना उचित होगा । धार्मिक भावनाओं को विभिन्न प्रकार से प्रकट किया जा सकता है । प्रायः देखा गया है कि महिलाएं स्वभाव से धर्मभीरू प्रकृति की होती हैं । अतः इसी तारतम्य में छात्राओं से पूछाॅ गया कि आप किन किन धार्मिक क्रियाओं में भाग लेती हैं । अधिकांश छात्रायें ईश्वर का स्मरण करती हैं और धार्मिक पुस्तकों का पाठ करती हैं । उनसे यह भी पूछाॅ गया कि ईश्वर का स्मरण किन-किन अवसरों पर करती हैं । छात्राओं से प्राप्त उत्तरों का उल्लेख सारणी 3.3 में किया गया है :

सारणी 3.3

छात्राओं द्वारा ईश्वर की आराधना के अवसर, प्रतिशत में

| अवसर | छात्रायें |
|---|---|
| कठिनाई में | 24.67 |
| कभी कभी | 49.67 |
| प्रत्येक समय | 25.16 |
| कभी नहीं | 0.50 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि अधिकांश छात्रायें (49.67 प्रतिशत) कभी-कभी ईश्वर का स्मरण करती हैं । दूसरे स्थान पर वे छात्रायें (25.16 प्रतिशत) हैं, जो हर समय ईश्वर का स्मरण करती हैं । 24.67 प्रतिशत छात्रायें कठिनाई पड़ने पर तथा कभी नहीं स्मरण करने वाली छात्राओं की संख्या अत्यल्प (0.50 प्रतिशत) हैं ।

उक्त तथ्यों की जानकारी करने के पश्चात् छात्राओं से पूछा गया कि "आप प्रायः किन-किन धार्मिक पुस्तकों का पाठ करती है" प्राप्त उत्तर सारणी 3.4 (चित्र 3.2) में प्रदर्शित हैं ।

सारणी 3.4

छात्राओं द्वारा प्रायः पाठ की जाने वाली धार्मिक पुस्तकें, प्रतिशत में

| धार्मिक पुस्तकें | छात्रायें |
|---|---|
| रामचरित मानस | 52.17 |
| शिव चालीसा, दुर्गा चालीसा | 11.00 |
| भगवत गीता | 9.00 |
| कुरान शरीफ | 5.50 |
| बाइबिल | 0.33 |
| धार्मिक पत्रिकाएं | 1.50 |
| अन्य धार्मिक पुस्तकें | 4.00 |
| कोई नहीं | 16.50 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

सारणी से ज्ञात होता है कि छात्राओं की रूचि धार्मिक पुस्तकों के पढ़ने में हैं । सबसे ज्यादा लोकप्रिय रामचरित मानस (52.17 प्रतिशत) है । शिव तथा दुर्गा चालीसा (11.00 प्रतिशत) तथा भगवत गीता (9.00 प्रतिशत) में रूचि रखने वाली छात्रायें दूसरे तथा तीसरे स्थान पर हैं । कुरान शरीफ बाइबिल तथा अन्य धार्मिक पुस्तकें पढ़ने की तुलना में ऐसी छात्राओं की (16.50 प्रतिशत) अधिकता है, जो किसी भी धार्मिक पुस्तक को नहीं पढ़ती हैं ।

छात्राओं द्वारा प्रायः पाठ की जाने वाली धार्मिक पुस्तकें (प्रतिशत में)
50
40
30
20
10
52.17
11.00
9.00
5.50
0.33
1.50
4.00
16.50
रामचरित मानस
दुर्गा चालीसा, शिवचालीसा
भगवद्गीता
कुरान शरीफ
बाइवल
धार्मिक पत्रिकाएं
अन्य धार्मिक पुस्तकें
कोई नहीं
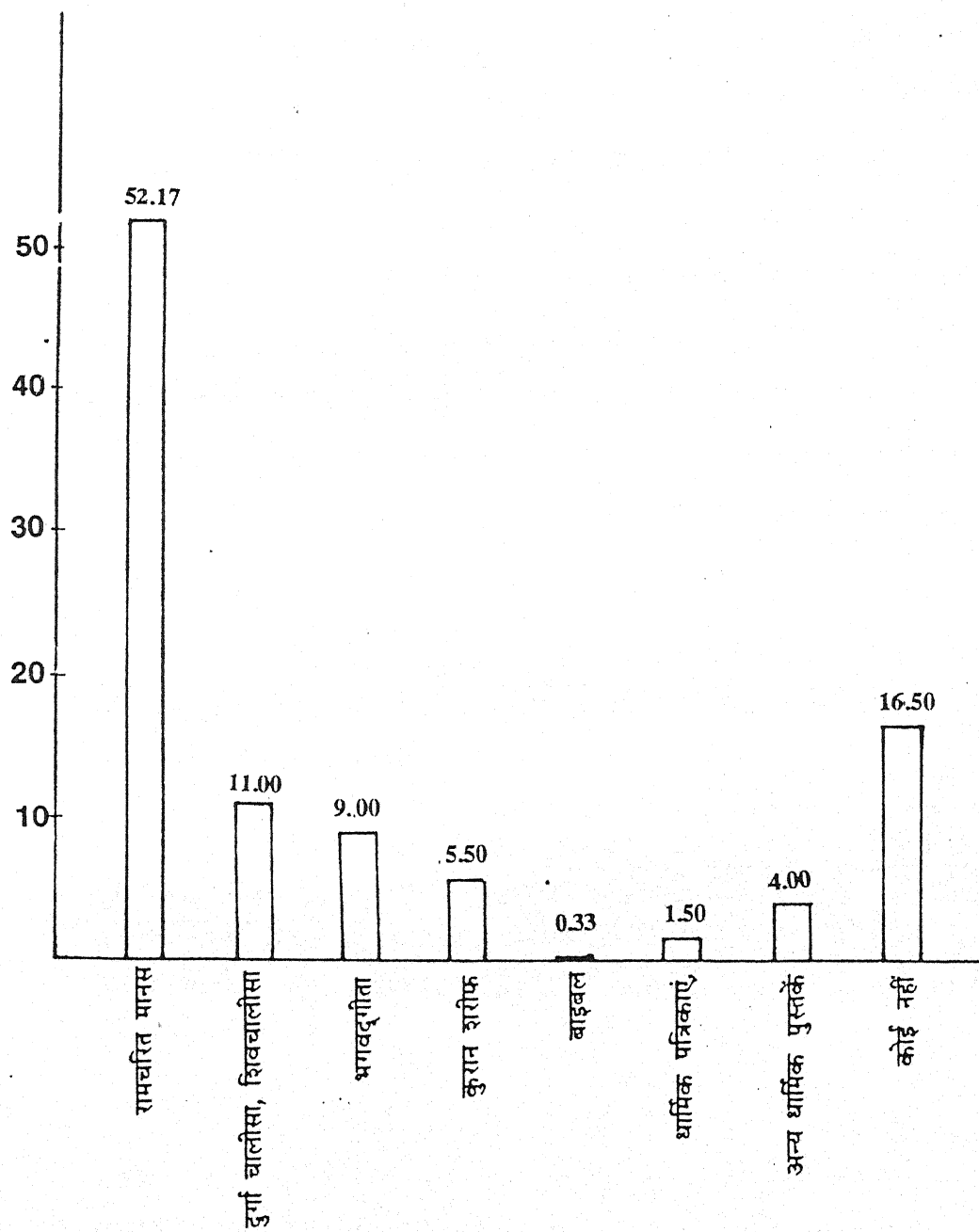
चित्र 3.2

<u>जाति -</u> यद्यपि जातीय भेदभावों को भारतीय संविधान स्वीकृति नहीं देता तथापि जाति की छाप हिन्दू समाज पर आज भी देखी जा सकती हैं । निःसंदेह ऐतिहासिक क्रम में जाति में अनेक परिवर्तन हुये हैं, परन्तु अभी भी जाति के धुरीय तत्व मौजूद हैं[11] । जाति भारतीय समाज को अतीत काल से प्रभावित करती रही है और आज भी प्रभावित कर रही है[12] । स्वतंत्रता के पश्चात् अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा पिछड़ी जाति के लोगों की सामाजिक और आर्थिक दशा में यथेष्ट सुधार लाने की चेष्टा की गयी है । विविध मूल्यांकनात्मक अध्ययनों से पता चलता है कि उच्च जाति के लोगों ने निम्न जाति के लोगों की अपेक्षा विविध योजनाओं से लाभ उठाया है[13] । इसलिये छात्राओं के मूल्यों और आकांक्षाओं के निर्धारण में जाति के महत्व को आज भी नकारा नहीं जा सकता । जैसा कि सारणी 3.5 से स्पष्ट हैं ।

---

11. उदाहरण स्वरूप देखे : योगेश हाटल, <u>चेन्जिंग फ्रण्टियर्स आफ कास्ट</u> (दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1968).

12. लूइस डूमा, <u>होमोहायरारकिक्स</u> (नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस, 1970), एम0 एन0 श्रीनिवास <u>कास्ट इन मार्डन इण्डिया एण्ड अदर एसेज</u> (बम्बई : एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1962).

13. एफ0 आर0 फैकेल, <u>इण्डियाज ग्रीन रिवोल्यूशन एकोनामिक गेन्स एण्ड पालिटिकल कास्ट्स</u> (न्यूजर्सी : प्रिन्सटन युनिवर्सिटी प्रेस, 1971), विक्टर एस0 डी0 सूजा, 'सोशल इनइक्वेलिटीज एण्ड डेवलपमेन्ट इन इण्डिया", <u>इकोनामिक एण्ड पालिटिकल वीकली,</u> खण्ड 19 (10 मई, 1975), पृष्ठ 770-73.

## सारणी 3.5

### छात्राओं की जाति, प्रतिशत में

| जाति | छात्रायें |
|---|---|
| ब्राम्हण | 25.00 |
| क्षत्रिय | 11.00 |
| वैश्य | 44.33 |
| पिछड़ी जातियाँ | 8.50 |
| अनुसूचित जातियाँ | 2.84 |
| अन्य गैर जाति (मुसलमान, इसाई, जैन व सिख) | 8.33 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

इन आकंड़ों को देखने से ज्ञात होता हैं कि वैश्य जाति की छात्राओं (44.43 प्रतिशत) की प्रधानता है । दूसरा स्थान ब्राम्हण जाति की छात्राओं (25.00 प्रतिशत) का है । तीसरे स्थान पर क्षत्रिय जाति की (11.00 प्रतिशत), चौथे स्थान पर पिछड़ी जातियाँ (8.50 प्रतिशत), पाँचवें स्थान पर अनुसूचित जातियाँ (2.84 प्रतिशत) की छात्रायें हैं । शेष 8.33 प्रतिशत छात्रायें मुसलमान, जैन, इसाई अथवा सिख हैं ।

छात्राओं का जातीय विवरण देखने से ज्ञात होता है कि वैश्य जाति की छात्रायें ब्राम्हण और क्षत्रिय जाति की छात्राओं की अपेक्षा अधिक संख्या में महाविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रही हैं । साथ ही, अनुसूचित जाति की छात्राओं की अपेक्षा पिछड़ी जाति की छात्राओं की संख्या अधिक हैं । उच्च शिक्षा ग्रहण करने में पिछड़ी जाति की छात्रायें मुसलमान, इसाई, जैन तथा सिख जाति की छात्राओं से अधिक हैं । उक्त

विश्लेषण से स्पष्ट है कि उच्च तथा मध्यम स्तर की जातियों में लड़कियों को शिक्षित करने हेतु जागरूकता है, जबकि निम्न स्तर की जातियों में यह कम देखने को मिलती है । वैश्यों में यह जागरूकता सर्वाधिक है ।

सांख्यिकीय दृष्टि से, जाति संबंधी आंकड़ों को तीन श्रेणियों मे विभक्त किया गया है - ब्राम्हण और क्षत्रिय को "उच्च" वैश्य और पिछड़ी जातियों को "मध्यम" तथा अनुसूचित जातियों और अन्य को "निम्न" कहा गया है ।

आवश्यक तथ्य सारणी 3.6 में प्रस्तुत हैं ।

**सारणी 3.6**

**छात्राओं की जातीय श्रेणियाँ, प्रतिशत में**

| जातीय श्रेणी | छात्रायें |
|---|---|
| उच्च | 36.00 |
| मध्यम | 52.83 |
| निम्न | 11.17 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

सारणी 3.6 से ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में "मध्यम जाति" (52.83 प्रतिशत) की छात्राओं की प्रधानता हैं । दूसरा स्थान 'उच्च जाति" (36.00 प्रतिशत) का और तीसरा स्थान निम्न जाति (11.17 प्रतिशत) की छात्राओं का है । निम्न जाति की छात्रायें सबसे कम हैं ।

**वैवाहिक स्तर** - नगरीय क्षेत्र होने के कारण छात्राओं में जागरूकता आना स्वाभाविक हैं । वे कम आयु में विवाह की पक्षधर नहीं हैं । ग्रामीण क्षेत्रों की

अपेक्षा नगरीय परिवेश की छात्राओं में देर से विवाह करने की मन:स्थिति रहती हैं, क्योंकि वह पढ़ लिखकर कुछ बनाना चाहती हैं । सारणी 3.7 के तथ्यों के अवलोकन से यह स्पष्ट होता हैं कि अधिकांश छात्राएं अविवाहित हैं, विवाहित छात्राओं की संख्या अपेक्षाकृत बहुत कम हैं ।

**सारणी 3.7**

**छात्राओं की वैवाहिक स्थिति, प्रतिशत में**

| वैवाहिक स्थिति | छात्रायें |
| --- | --- |
| अविवाहित | 90.84 |
| विवाहित | 9.16 |
| उत्तरदाताओं की सख्या (600) | 100.00 |

विवाह व्यक्ति को पद प्रदान करता है[14] तथा विवाहित स्त्री, पुरुषों की अभिवृत्तियों में परिवर्तन लाती है । विवाहित व्यक्ति के ऊपर वैवाहिक जीवन का उत्तरदायित्व बढ़ जाता है[15] । इन परिस्थितियों में, नगरीय परिवेश की अविवाहित छात्राओं (90.84 प्रतिशत) का प्रतिशत अधिक हैं और इसके विपरीत, विवाहित छात्राओं (9.16 प्रतिशत) का प्रतिशत बहुत कम हैं ।

इससे स्पष्ट होता है कि नगरों में शीघ्र विवाह करने का प्रचलन बहुत कम हैं ।

---

14. जैम्स एच0एस0 बोगार्ड, " मैरेज एज ए स्टेट्स अचीविंग डिवाइस", सोशियोलाजी एण्ड सोशल रिसर्च, खण्ड 29 (सितम्बर-अक्टूबर, 1944) पृष्ठ 6.

15. भारतीय समाज में विवाह के महत्व के लिये देखें के0एम0कपाडिया मैरेज एण्ड फैमिली इन इण्डिया ( लन्दन : आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1968 ) पृष्ठ 30.

## जीवन पद्धति

**मैत्री संरूप -**

यह एक वास्तविक सत्य है कि व्यक्ति का उसके जीवन के विभिन्न चरणों में स्वयं का एक संसार होता हैं । अतः यह स्वाभाविक है कि युवा वर्ग का अपना अलग दृष्टिकोण होता हैं । युवाओं की मान्यतायें अपने से छोटे तथा बड़ों से भिन्न होती हैं[16] । इसके अतिरिक्त, कुछ ऐसी बातें भी होती हैं । जिन्हें एक युवा सार्वजनिक रूप से गुप्त रखना चाहता है[17] । शारीरिक तथा मानसिक विकास के बावजूद उसे "सीमान्त व्यक्ति[18]" ही समझा जाता है । यों तो युवा प्रौढ़ समाज के मूल्यों को आत्मसात् करता हैं, लेकिन प्रौढ़ समाज उसे प्रौढ़ की भूमिका निभाने के लिये अयोग्य समझता हैं । अतः युवा इन भूमिकाओं को निभाने से सम्बन्धित अवसरों से वंचित कर दिया जाता है । इन सामाजिक, शारीरिक और मानसिक विशेषताओं तथा

**सारणी 3.8**

**मैत्री संरूप, प्रतिशत में**

| मैत्री संरूप | छात्रायें |
|---|---|
| उच्च जाति, अधिक आयु और उच्च शिक्षा | 6.90 |
| समान जाति, समान आयु और समान शिक्षा | 31.60 |
| निम्न जाति, कम आयु और कम शिक्षा | 1.40 |
| मिश्रित जाति, मिश्रित आयु तथा मिश्रित शिक्षा | 60.10 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

16. जेम्स कोलमैन, द एडोलिसेन्ट सोसाइटी (न्यूयार्क: दि फ्री प्रेस, 1961) ।
17. ई0 ए0 स्मिथ अमेरिकन यूथ कल्चर (न्यूयार्क : द फ्री प्रेस, 1962) ।
18. ए0 एच0 एयरलिट, द एडोलिसेन्ट (न्यूयार्क : मैकग्राहिल बुक कम्पनी, 1938 ।

नैसर्गिक आवश्यकताओं के कारण युवाओं का आकर्षण हम-उम्र मित्रों में बढ़ जाता है[19]। इसलिए छात्राओं की मैत्री-संरूप का विवरण संकलित किया गया जो सारणी 3.8 में प्रस्तुत है ।

मैत्री संरूप सम्बन्धी तथ्यों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अधिकांश छात्रायें मिश्रित जाति, मिश्रित आयु, तथा मिश्रित शिक्षा वाली छात्राओं के साथ मित्रता करती हैं (60.10 प्रतिशत) । इसके बाद, पर्याप्त संख्या में छात्राओं की मित्रता समान जाति, समान आयु तथा समान शिक्षा वाली छात्राओं के साथ होती है (31.60 प्रतिशत) इसकी तुलना में, अपने से उच्च जाति, अधिक आयु तथा अधिक शिक्षा वाली छात्राओं तथा निम्न जाति कम आयु तथा कम शिक्षा वाली छात्राओं की ओर, छात्राओं का अपेक्षाकृत कम आकर्षण है । (क्रमशः 6.90 तथा 1.40 प्रतिशत) ।

उक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि छात्राओं की मित्रता का स्वरूप काफी उदार है क्योंकि वे अपनी जाति, आयु तथा शिक्षा के स्तर की कम ही परवाह करती हैं । इसका कारण यह हो सकता है कि छात्राओं को मित्रता के लिये पात्र कम मिलते हैं और बांदा जिले का नगरीय परिवेश अभी इतना आधुनिक नहीं हुआ है कि छात्राओं को मैत्री चयन की खुली स्वतंत्रता मिल सके ।

**अध्ययन विषय -**

अध्ययन विषय का चयन काफी हद तक छात्राओं के मूल्यों एवं आकांक्षाओं का द्योतक है । उदाहरणार्थ, विज्ञान विषयों का अध्ययन करने वाली छात्राओं के मूल्य कला विषयों का अध्ययन करने वाली छात्राओं से पृथक हो जाते हैं ।

सारणी 3.9 से स्पष्ट है कि अधिकांश छात्राओं का आकर्षण कला विषयों की ओर है (90.33 प्रतिशत) । कला विषयों की तुलना में विज्ञान (9.67 प्रतिशत)

---

19. जे0 ए0 वेसलर, <u>द ऐज आफ ससपिशन</u> (न्यूयार्क 3 रेन्डम हाऊस, 1953) ।

पढ़ने वाली छात्राओं का अनुपात अपेक्षाकृत बहुत कम है ।

**सारणी 3.9**

**अध्ययन विषय, प्रतिशत में**

| विषय | छात्रायें |
|---|---|
| कला | 90.33 |
| विज्ञान | 9.67 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

नगरीय परिवेश में छात्रायें उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये अधिकता से आगे आती हैं । इसमें से कला विषयों की ओर आकृष्ट होने के कई कारण हो सकते हैं । एक कारण तो यह हो सकता है कि उन्हें अध्ययन के साथ गृह कार्यो में भी हाथ बटाना पड़ता है जिससे वे अध्ययन की ओर जितना ध्यान देना चाहिए, नहीं दे पाती और दूसरा मुख्य कारण यह है कि जनपद में स्थित महिला महाविद्यालय में जिसमें केवल छात्रायें ही पढ़ती हैं, वहां विज्ञान शिक्षा सुलभ नहीं है । जिन महाविद्यालयों में विज्ञान संकाय है वहां भी उनका प्रतिशत कला संकाय की अपेक्षा कम है । बांदा जनपद में वाणिज्य शिक्षा का अभाव हैं ।

चाहे जो भी हो, कला विषयों की ओर अधिकांश छात्राओं का आकर्षण उपनिवेशिक शिक्षा-नीति का परिणाम प्रतीत होता है ।

**शैक्षणिक उपलब्धि -**

छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धियां उनके मूल्यों और आकांक्षाओं को प्रभावित करती हैं । एक मेधावी छात्रा निम्न उपलब्धि स्तर वाली छात्रा से अधिक आशावान हो सकती है । सारणी 3.10 में प्रदर्शित छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धियों से सम्बन्धित

तथ्यों से ज्ञात होता है कि अधिकांश छात्रायें मध्यम श्रेणी की (58.83 प्रतिशत) अथवा निम्न श्रेणी की (33.67 प्रतिशत) शैक्षणिक उपलब्धता वाली हैं । इनकी तुलना में, उच्च शैक्षणिक स्तर की छात्रायें (7.50 प्रतिशत) बहुत कम हैं ।

सारणी 3.10

**छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धियाँ, प्रतिशत में**

| शैक्षणिक स्तर | छात्रायें |
|---|---|
| उच्च | 7.50 |
| मध्यम | 58.83 |
| निम्न | 33.67 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

शैक्षणिक उपलब्धि ज्ञात करने के लिए निम्न प्रमापक प्रयोग में लाया गया -

1. परीक्षा उत्तीर्ण करने की प्रयास संख्या
2. प्राप्त श्रेणी
3. विशेष योग्यता ।

उक्त तीनों विषयवस्तु को इस प्रकार महत्व (वेटेज) दिया गया कि प्रथम प्रयास को 3 अंक, प्रथम से अधिक प्रयास को 2.50 अंक, प्रथम श्रेणी को 6 अंक, द्वितीय श्रेणी को 4.50 अंक तथा तृतीय श्रेणी को 3.50 अंक एवं विशेष योग्यता को 7.50 अंक निर्धारित करके 16 अंक अर्जित करने वाली छात्राओं को उच्च, 14 अंक को मध्यम तथा इससे कम को निम्न शैक्षणिक उपलब्धि वाला माना गया[20] ।

---

20. डा0 राजेन्द्र पाण्डे, "इण्डियाज यूथ एट दि क्रास रोड्स" पृष्ठ संख्या-66, प्रकाशक- वाणी विहार, बनारस, वर्ष 1975

उल्लेखनीय है कि शैक्षणिक उपलब्धियों का उक्त अन्तर निश्चित रूप से छात्राओं के बुद्धि स्तर का परिचायक नहीं है । यह अन्तर अध्ययन के लिए सुलभ अवसरों का परिणाम भी हो सकता है । परम्परा कुछ ऐसी है कि घरों में छात्रायें गृह कार्यों में तो हाथ बंटाती ही हैं, साथ ही, अन्य पारिवारिक कारक भी उत्तरदायी हो सकते हैं । उन्हें जब पढ़ने का अवसर मिलता है, उनकी प्रतिभा निखरती सी प्रतीत होती है ।

**पारिवारिक पृष्ठभूमि -**

यह सर्व विदित है कि व्यक्ति के समाजीकरण और सामाजिक नियंत्रण में परिवार महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । यहां पर यह समझना आवश्यक हो जाता है कि छात्रा की पारिवारिक पृष्ठभूमि कैसी है । सम-सामयिक परिवर्तनों का परिवार पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा है । परिवार के आकार और मूल्यों में अन्तर आये हैं[21] । परिवर्तित पारिवारिक परिवेश छात्राओं के मूल्यों और आकांक्षाओं को प्रभावित कर सकता है । सारणी 3.11 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अधिकांश छात्रायें एकाकी परिवार से सम्बन्धित हैं (52.50 प्रतिशत) ।

**सारणी 3.11**

**छात्राओं के परिवार का स्वरूप, प्रतिशत में**

| परिवार का स्वरूप | छात्रायें |
|---|---|
| एकाकी | 52.50 |
| संयुक्त | 47.50 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

21. भारतीय परिवारों में परिवर्तन के लिए, देखें : आई0पी0 देसाई, (सम्पादक) सिम्पोजियम : कास्ट एण्ड ज्वाइण्ट फैमिली, "सोसियोलाजिकल बुलेटिन" खण्ड 4 (1955), पृष्ठ 85-146 ।

एकाकी परिवारों की तुलना में संयुक्त परिवारों का प्रतिशत कुछ कम है (47.50 प्रतिशत) ।

ऐसा प्रतीत होता है कि मूल्यों एवं आकार में परिवर्तन होने के फलस्वरूप नगरों में एकाकी परिवारों की प्रधानता है । इसके साथ ही, पारम्परिक पारिवारिक व्यवस्था भी संयुक्त परिवार के रूप में परिलक्षित होती है ।

आकार के अनुसार परिवारों को चार मुख्य श्रेणियों में बांटा गया है (1) छोटा परिवार - जिसमें 1 से 5 सदस्य हों, (2) मध्यम- जिसमें 6 से 10 सदस्य हों (3) बड़ा - जिसमें 11 से 15 सदस्य हों और चौथा है विस्तृत - जिसमें 16 से अधिक सदस्य हों । परिवार के आकार से सम्बन्धित तथ्य सारणी 3.12 (चित्र 3.3) में प्रस्तुत हैं ।

**सारणी 3.12**

**छात्राओं से सम्बन्धित परिवार का आकार, प्रतिशत में**

| परिवार का आकार | छात्रायें |
|---|---|
| छोटा | 26.67 |
| मध्यम | 55.83 |
| बड़ा | 11.83 |
| विस्तृत | 5.67 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

उपर्युक्त तथ्य देखने से पता चलता है कि "मध्यम" आकार के परिवारों का अनुपात सबसे अधिक हैं (55.83 प्रतिशत), दूसरे स्थान पर 'छोटे' परिवार आते हैं (26.67 प्रतिशत), "बड़े" और "विस्तृत" परिवारों का स्थान क्रमशः

छात्राओं से सम्बन्धित परिवार का आकार, प्रतिशत में
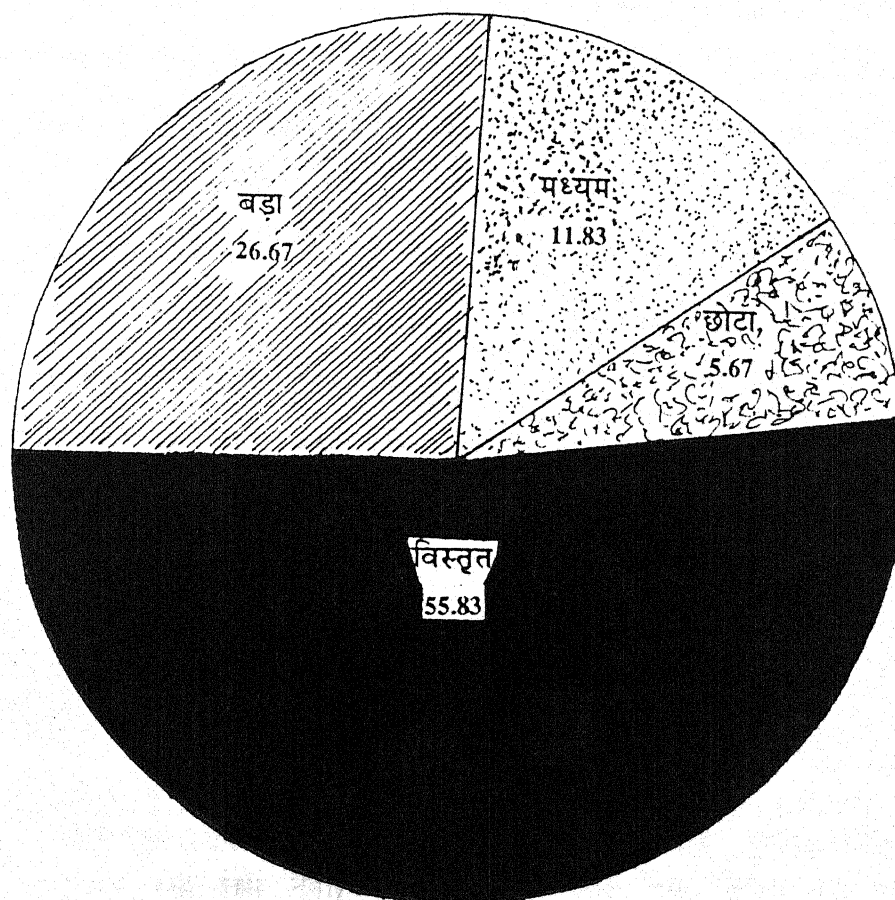
चित्र 3.3

तीसरा और चौथा है (11.83 प्रतिशत और 5.67 प्रतिशत)

निष्कर्ष यह निकलता है कि नगरीय परिवेश के परिवारों में मध्यम व छोटे आकार के परिवारों की संख्या अधिक है ।

## पिता की शिक्षा -

पिता की शिक्षा और छात्राओं के मूल्य और आकांक्षाओं में निकट का सम्बन्ध बताया जाता है । शिक्षित पिता अशिक्षित पिता की तुलना में अपने बच्चों को उच्च शिक्षा के लिये अधिक प्रेरित करते हैं[22] । ऐसा भी पाया गया है कि जो पिता अपनी शैक्षणिक उपलब्धियों से संतुष्ट नहीं होते, वे अपने बच्चों को उच्च शिक्षा की दिशा में अत्यधिक प्रोत्साहित करते है । इन दोनों दृष्टियों से पिता की शिक्षा छात्राओं के मूल्यों और आकांक्षाओं के लिये महत्वपूर्ण है । पिता की शिक्षा को तीन स्तरों में विभक्त किया गया है- (1) निरक्षर, साक्षर, प्रारम्भिक और जूनियर हाईस्कूल तक शिक्षा प्राप्त को 'निम्न' (2) हाईस्कूल तथा इण्टरमीडिएट तक को 'मध्यम) तथा (3) स्नातक और उससे अधिक शिक्षा प्राप्त को "उच्च" कहा गया है । सारणी 3.13 में छात्राओं के पिता के शिक्षास्तर विषयक तथ्य प्रस्तुत हैं ।

---

22. विलियम पी0 कुवलेस्की तथा जार्ज डब्ल्यू0 ओड्लेनडार्फ, ए बिब्लियोग्राफी आफ लिटरेचर ऑन एजूकेशनल ओरिएण्टेशन्स आफ यूथ (कालेज स्टेशन, टेक्सास : डिपार्टमेण्ट आफ एग्रीक्लचरल एकोनामिक्स एण्ड सोशियोलॉजी, डिपार्टमेन्ट आफ इनफार्मेशन, रिपोर्ट नं0 65, 66 कोई तिथि नहीं), विलियम एच0 सेवेल तथा बिमल पी0 शाह, "पैरेन्ट्स एजुकेशन एण्ड चिल्ड्रेन एजुकेशनल ऐस्पिरेशन्स एण्ड अचीवमेंन्ट्स" अमेरिकन सोशियोलाजिकल रिव्यू, खण्ड 33 अंक 2 (अप्रैल, 1968), पृष्ठ 161-209

सारणी 3.13

छात्राओं के पिता की शिक्षा का स्तर, प्रतिशत में

| शिक्षा-स्तर | छात्रायें |
|---|---|
| उच्च | 47.33 |
| मध्यम | 40.33 |
| निम्न | 12.34 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

अधिकांश छात्राओं के पिता का शैक्षणिक स्तर स्नातक और उससे अधिक अर्थात् "उच्च" स्तर (47.33 प्रतिशत) का है । इसके पश्चात्, हाईस्कूल तथा इण्टरमीडिएट अर्थात् "मध्यम" स्तर (40.33 प्रतिशत) का है । निरक्षर, साक्षर, प्रारम्भिक और जूनियर हाईस्कूल अर्थात् "निम्न" (12.34 प्रतिशत) स्तर वाले पिता का अनुपात अपेक्षाकृत बहुत कम है ।

उक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि पिता का शैक्षणिक स्तर लड़कियों की शिक्षा को प्रभावित करता है । उच्च शैक्षणिक स्तर वाले पिता की सर्वाधिक पुत्रियाँ शिक्षा प्राप्त कर रही हैं, दूसरा स्थान उन छात्राओं का है, जिनके पिता मध्यम स्तर तक शिक्षित हैं । सबसे कम छात्रायें उन परिवारों से हैं जिनमें पिता या तो निरक्षर हैं अथवा बहुत कम शिक्षित हैं ।

**पिता का व्यवसाय-**

छात्राओं के मूल्य और आकांक्षायें पिता के व्यवसाय से भी प्रभावित होती हैं । एक तरफ छात्रा अपने पिता के व्यवसाय को देखती है और उससे प्रेरणा लेती है, और दूसरी ओर पिता अपने व्यवसाय का मूल्यांकन करता है और तद्नुकूल अपने बच्चों को उस व्यवसाय को अपनाने या न अपनाने के लिये प्रोत्साहित करता

है । इतना ही नहीं, व्यवसाय व्यक्ति को पद, आय, प्रतिष्ठा एवं सुरक्षा प्रदान करता है । इस प्रकार, छात्राओं के पिता का व्यवसाय उनकी आकांक्षाओं और मूल्यों को निर्धारित कर सकता है । (सारणी 3.14 (चित्र 3.4)) ।

**सारणी 3.14**

**छात्राओं के पिता का व्यवसाय, प्रतिशत में**

| व्यवसाय | छात्रायें |
|---|---|
| कृषि | 9.17 |
| नौकरी | 51.33 |
| व्यापार | 31.17 |
| जातिगत पेशा | 1.50 |
| अन्य व्यवसाय/डाक्टरी, वकालत | 6.83 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

छात्राओं के अधिकांश पिता नौकरी में (51.33 प्रतिशत) लगे हुये हैं । दूसरे स्थान पर व्यापार हैं जिसमें 31.17 प्रतिशत पिता लगे हुये हैं । तीसरे स्थान पर कृषि है जो 9.17 प्रतिशत का व्यवसाय है । व्यवसायिक व्यवसायों जैसे चिकित्सा, वकालत आदि में 6.83 प्रतिशत तथा थोड़े से पिता (1.50 प्रतिशत) जातिगत पेशे में लगे हुये हैं ।

इससे स्पष्ट होता है कि नौकरी और व्यापार में लगे हुये पिता अपनी पुत्रियों को उच्च शिक्षा प्राप्त कराने के लिये प्रयत्नशील हैं ।

**आय -**

आय प्रतिष्ठा की प्रतीक है और उससे अधिक कार्य करने की प्रेरणा

छात्राओं के पिता का व्यवसाय, प्रतिशत में
51.33
31.17
9.17
6.83
1.50
कृषि
नौकरी
व्यापार
जातिगत पेशा
अन्य व्यवसाय / डॉक्टरी, वकालत
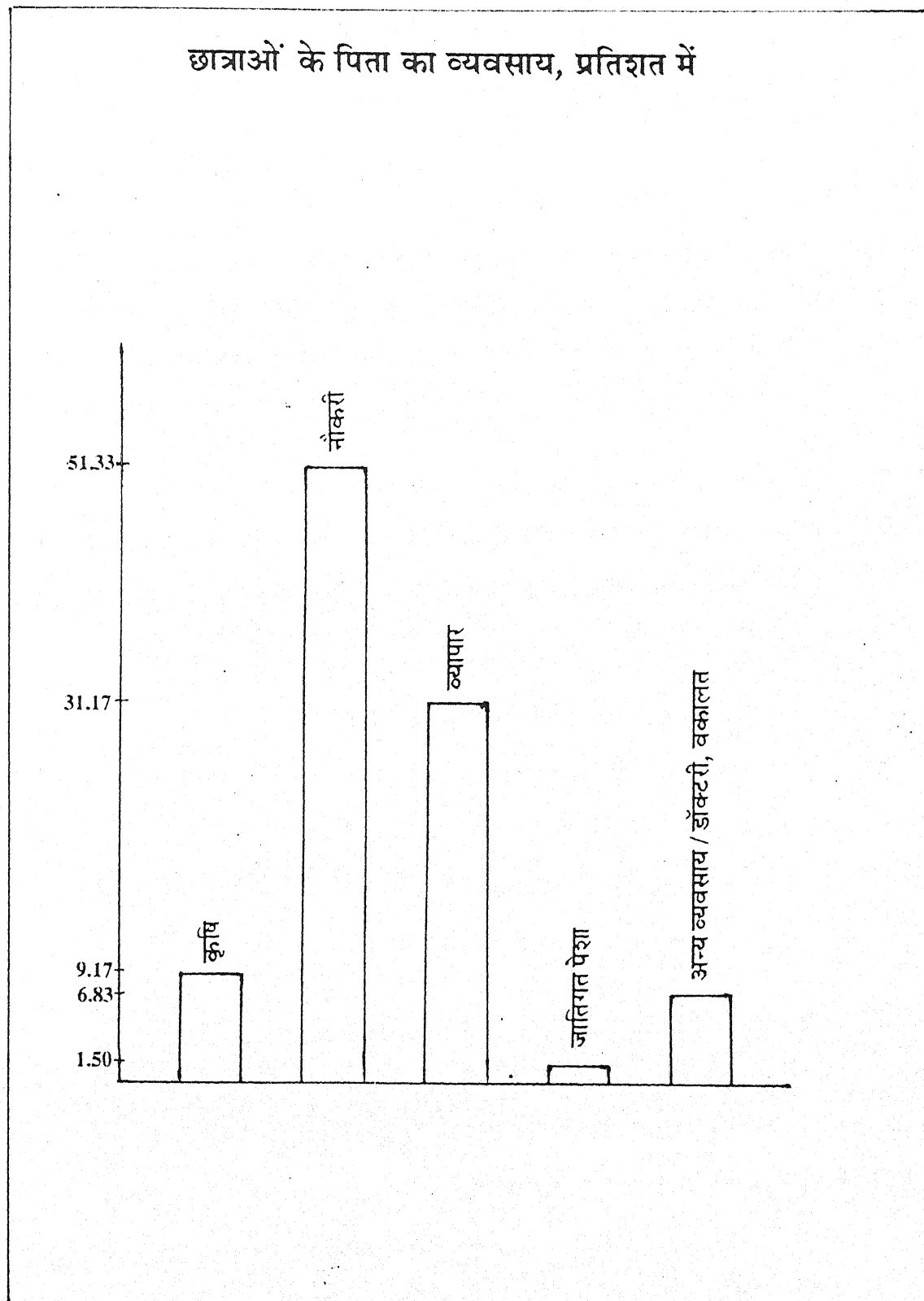
चित्र 3.4

मिलती है । आय भौतिक प्रसाधन एवं सेवाओं को प्राप्त करने में सहायक होती है जिससे जीवन पद्धति निर्धारित होती हैं । प्रसिद्ध अर्थशास्त्री मार्शल का कहना है, "जैसे-जैसे व्यक्ति की आय बढ़ती है वैसे-वैसे उसकी उपभोग की पिपासा भी बढ़ती है । चूँकि भूख प्रकृति द्वारा सीमित होती है, इसलिए व्यक्ति अपना धन व्यर्थ के खर्चों में व्यय करता है"[23] ।

आय का एक अभिप्रेत अर्थ यह है कि जो आर्थिक रूप से सम्पन्न होंगे वे अपने बच्चों की शैक्षणिक आवश्यकताओं को कम आय वालों की तुलना में अधिक अच्छे ढंग से पूरा करेगें । पिता की आय का विवरण सारणी 3.15 में प्रस्तुत है ।

**सारणी 3.15**

**छात्राओं के पिता की मासिक आय, प्रतिशत में**

| आय कोष्ठक | छात्रायें |
|---|---|
| रू0 1000 - और कम | 4.00 |
| रू0 1001 - 2000 | 49.83 |
| रू0 2001 - और अधिक | 46.17 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

अधिकांश छात्राओं के पिता (49.83 प्रतिशत) की मासिक आय मध्यम स्तर अर्थात् 1001-2000 के मध्य है । इसके बाद, दूसरा स्थान उन छात्राओं के पिता का है (46.17 प्रतिशत), जिनकी मासिक आय रू0 2001 से अधिक है और जो सर्वाधिक उच्च वर्ग में आते हैं । मात्र 4.00 प्रतिशत छात्राओं के पिता निम्नतम आय अर्थात्

23. विक्टर ब्रूम, वर्क एण्ड मोटीवेशन न्यूयार्क : जान वाइली एण्ड सन्स, 1964 पृष्ठ 30)

रूपये 1000 तथा उससे कम आय वाले वर्ग से हैं ।

उपर्युक्त आय सम्बन्धी तथ्य इस बात का संकेत करते हैं कि अपेक्षाकृत उच्च तथा मध्यम स्तर की आय वाले पिता अपनी पुत्रियों को उच्च शिक्षा ग्रहण कराने की दिशा में अधिक प्रत्यनशील हैं ।

**पिता की राजनीतिक अभिरुचि -**

पिता की राजनीतिक अभिरुचि का प्रभाव उनके बच्चों की राजनीतिक अभिरुचि पर पड़ सकता है । राजनीतिक परिवेश में पलने वाली छात्रा राजनीति में अधिक कुशलता और रुचि दिखा सकती है । इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुये छात्राओं के पिता की राजनीतिक अभिरुचि[24] के विषय में जानकारी प्राप्त की गयी ।

सारणी 3.16 के तथ्यों से स्पष्ट होता है कि अधिकांश छात्राओं के पिता (61.17 प्रतिशत) राजनीति में अभिरुचि रखते हैं । इसके विपरीत, अपेक्षाकृत

**सारणी 3.16**

**छात्राओं के पिता की राजनीतिक अभिरुचि, प्रतिशत में**

| पिता की राजनीतिक अभिरुचि | छात्रायें |
|---|---|
| अभिरुचि रखते हैं | 61.17 |
| अभिरुचि नहीं रखते हैं | 38.83 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

24. ए0 मार्शल, "वान्ट्स इन रिलेशन टू ऐक्टिविटीज", टालकाट पारसन्स तथा अन्य (सम्पादक), दि थियरीज आफ सोसायटी : फाउन्डेशन्स आफ मार्डन सोशियोलाजिकल थियोरी (न्यूयार्क : द फ्री प्रेस, 1961) खण्ड 1, में विशेषतया पृष्ठ 409.

कम छात्राओं (38.83 प्रतिशत) के पिता राजनीति में अभिरूचि रखने वाले नहीं हैं[25] ।

उक्त सारणी के तथ्यों से स्पष्ट होता है कि राजनीतिक सक्रियता नगरीय परिवेश में अधिक परिलक्षित होती है ।

इसी तारतम्य में, छात्राओं से उनके पिता की राजनीतिक दलों की पक्षधरता के बारे में जानकारी संकलित की गयी । अधिकांश पिता (31.00 प्रतिशत) कांग्रेस (आई) पार्टी के पक्षधर हैं । इसके बाद, भारतीय जनता पार्टी (28.83 प्रतिशत) दूसरे स्थान पर हैं । इसके लिये सारणी 3.17 (चित्र 3.5) का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है

**सारणी 3.17**

**छात्राओं के पिता की राजनीतिक दल वरीयता, प्रतिशत में**

| राजनीतिक दल, जिसके पिता पक्षधर हैं | छात्रायें |
|---|---|
| कांग्रेस (आई) | 31.00 |
| भारतीय जनता पार्टी | 28.83 |
| बहुजन समाजवादी पार्टी | 11.17 |
| जनता पार्टी | 9.17 |
| लोकतान्त्रिक समाजवादी पार्टी | 5.00 |
| लोकदल | 4.33 |
| अन्य राजनीतिक दल | 10.50 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

25. उत्तरदाताओं के उत्तर को 5 श्रेणियों में लिया गया : (1) कुछ नहीं, (2) बहुत कम, (3) थोड़ा बहुत, (4) अभिरूचि रखते हैं, और (5) अधिक अभिरूचि रखते हैं । 1, 2 और 3 श्रेणियों के उत्तर को "नहीं अभिरूचि" माना गया और 4 तथा 5 श्रेणियों को राजनीति में अभिरूचि माना गया ।

छात्राओं के पिता की राजनीतिक दल वरीयता, प्रतिशत में
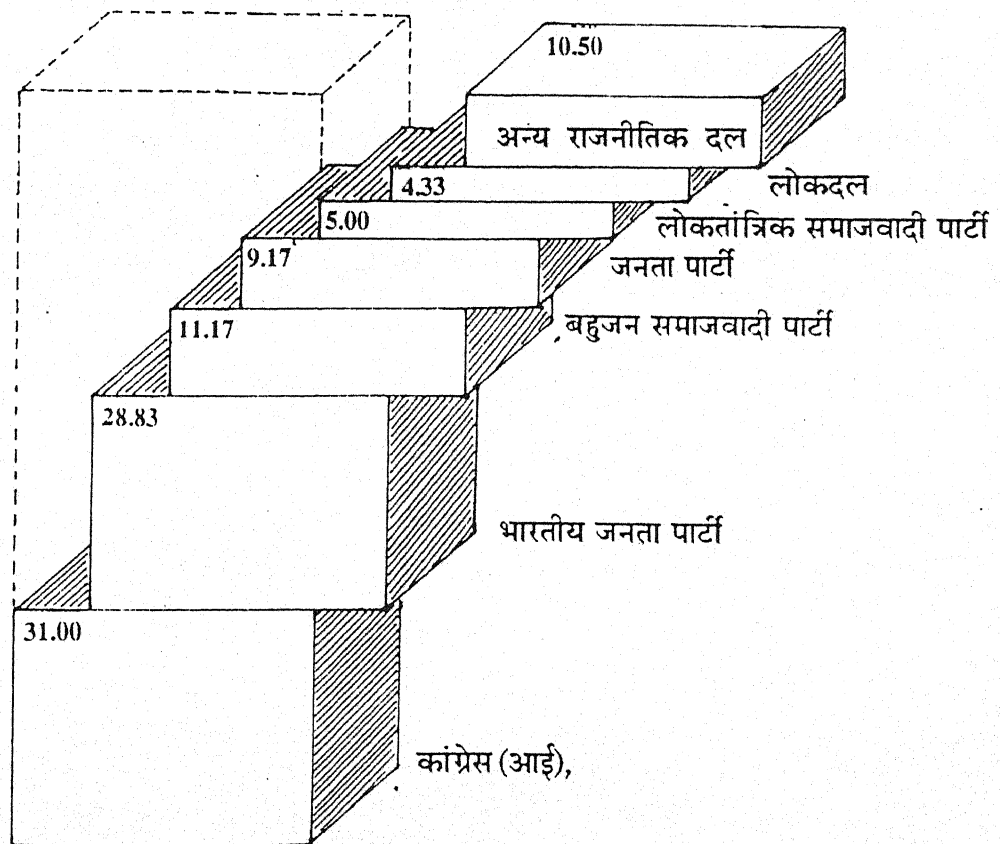
चित्र 3.5

कि बहुजन समाजवादी पार्टी तथा जनता पार्टी के पक्ष में अपेक्षाकृत कम ही (क्रमशः 11.17 तथा 9.17 प्रतिशत) छात्राओं के पिता आकर्षित हैं । अन्य राजनैतिक दलों का विशेष महत्व प्रतीत होता हैं ।

यदि यर्थाथ रूप में प्रस्तुत किया जाय तो अधिकांश छात्रायें 16-20 वर्ष आयु श्रेणी की है, हिन्दू धर्म को मानने वाली छात्राओं की बहुलता है, अधिकांश छात्रायें उच्च तथा मध्यम जातियों की हैं, वे अधिकतर मिश्रित जाति, मिश्रित आयु तथा मिश्रित शिक्षा वाली छात्राओं से मित्रता रखती हैं, उनमें सर्वाधिक छात्रायें कला विषय पढ़ने वाली हैं, वे अधिकाशंतः अविवाहित हैं, एकाकी परिवारों से संबंधित हैं, अधिकांश छात्राओं के पिता का शैक्षणिक एवं आर्थिक स्तर उच्च तथा मध्यम है तथा उनमें से अधिकांश के पिता राजनीति में अभिरुचि रखते हैं ।

अध्याय – चार

# शैक्षणिक मूल्य तथा आकांक्षायें

अध्याय तीन में छात्राओं की सामाजिक पृष्ठभूमि का आनुभविक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया और देखा गया कि नगरों में रहने वाली छात्रायें किस प्रकार जीवन चक्र तथा जीवन पद्धति में परस्पर समान और पृथक हैं । वर्तमान अध्याय में छात्राओं के शैक्षणिक मूल्य और आकांक्षाओं की ओर ध्यान केन्द्रित किया गया है ।

विश्व के विकसित देशों में उच्च शिक्षा उच्च वर्ग तक ही सीमित रही है[1] और आज भी है[2] ।

---

1. उदाहरणार्थ इंगलैण्ड में विश्वविद्यालय कुलीनतंत्र और भद्र पुरूषों के वर्ग के लिये ही सुरक्षित रहा है । इस संबंध में ए0एच0हैलसे, "द चेन्जिंग फंक्शन्स आफ युनिवर्सिटीज, "ए0एच0हैलसे, जीन क्लाउड तथा सी0 अर्नाल्ड एण्डर्सन (सम्पादक), एजुकेशन, इकोनामी एण्ड सोसाइटी (न्यूयार्क : द फ्री प्रेस, 1961) में संकलित, पृष्ठ 458. अमेरिकन गृहयुद्ध के पूर्व उच्च-शिक्षा भद्र पुरूष तक ही सीमित थी । इसके लिये रिचार्ड हाफस्टेडटर और सी0डी0 विटहार्डी, द डेवलपमेण्ट एण्ड स्कोप आफ हायर एजुकेशन इन द युनाइटेड स्टेट्स( न्यूयार्क : कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 1952) में संकलित, पृष्ठ 11.

2. वर्ष 1960 तक विश्व की जनसंख्या का केवल सातवॉ भाग स्कूल में अध्ययन कर रहा था । अमेरिका में, जहॉ जनसंख्या का सर्वाधिक अनुपात किसी एक देश की तुलना में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा था, 5 करोड़ के ऊपर, जो समस्त जनसंख्या का एक चौथाई भाग है, उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा था, और 5 तथा 20 वर्ष के बीच बच्चों में से केवल तीन-चौथाई विद्यार्थी थे । इंगलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी तथा रूस में जनसंख्या का एक-पॉचवा भाग 5 और 25 वर्ष के बीच किसी स्कूल में पढ़ रहे थे, और जापान में तीन-पॉचवा भाग पढ़ रहा था । 1962 में एशिया की जनसंख्या का एक-आठवॉ भाग तथा अफ्रीका की जनसंख्या का एक-दसवॉ भाग से कम लोग स्कूल में पढ़ रहे थे । उक्त ऑकड़ों के लिये देखें वर्ल्ड सर्वे आफ एजुकेशन, 4: हायर एजुकेशन (न्यूयार्क : यूनेस्को, 1966), अध्याय 2.

भारत वर्ष में तो विशेषरूप से शिक्षा अतीत काल से लेकर ब्रिटिश राज्य तक उच्च जातियों और वर्गो तक सीमित रही है[3] । इस प्रकार प्रत्येक समाज में उच्च शिक्षा को अपने-अपने ढंग से महत्व पूर्ण स्थान दिया गया है और इसे दुर्लभ वस्तु बना दिया गया है । अतः शिक्षा पाने की लोगों में उत्कट आकांक्षा बनी रहती है ।

आधुनिक समाज में शिक्षा ज्ञान के लिये ही नहीं, वरन् अनेक महत्वपूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति के लिये प्राप्त और प्रदान की जाती है[4] । सामाजिक दृष्टि से शिक्षा समाज की प्राद्योगिकी तथा आर्थिक प्रगति के लिये अपरिहार्य है[5] ।

राजनीतिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिये शिक्षा प्रशासकों को उत्पन्न करती है । समाज की विभिन्नता में एकता उत्पन्न करने में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । शिक्षा से ही मनुष्य वह व्यवहार सीख पाता है जिससे आधुनिक राज्य और समाज का संचालन और एकीकरण सम्भव हो पाता है । इतना ही नहीं, शिक्षा समाज की बौद्धिक व्यवस्था को सुरक्षित रखती है और उन व्यक्तियों को छांटती है जो भावी समाज में विशिष्ट वर्ग का निर्माण करते हैं । व्यक्तिगत दृष्टि से शिक्षा व्यक्ति

---

3. भारत वर्ष में अतीत काल में शिक्षा की प्रमुख प्रणाली आश्रम व्यवस्था थी, जिसमें केवल द्विज-ब्राम्हण, क्षत्रिय और वैश्य के बच्चे ही पढ़ते थे । स्त्रियों और शूद्रों के लिये शिक्षा की कोई वैसी या अन्य समानान्तर व्यवस्था नहीं थी । आश्रम व्यवस्था के लिये के0एम0कपाडिया, मैरेज एण्ड फेमिली इन इण्डिया, (न्यूयार्क आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1966), पी0एच0प्रभू, हिन्दू सोशल आर्गेनाइजेशन (बम्बई : पापुलर प्रकाशन, 1963) देखें । ब्रिटिश काल में शिक्षा के लिये डी0जी0वीयर्स, ब्रिटिश एट्टिट्यूड्स टूवार्डस इण्डिया 1748-1858 (लन्दन: आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1961), ए0 आई0 मेहयू, द एजुकेशन इन इण्डिया: ए स्टडी आफ इण्डिया टुडे (लन्दन : गेवर और ग्वीयर, 1926) देखें ।

4. शिक्षा के विविध उद्देश्यों के लिये सी0अर्नाल्ड एण्डर्सन, "द मार्डनाइजेशन आफ एजुकेशन, "अध्याय 5, माईनर टाइनर (सम्पादक), मार्डनाइजेशन : द डाइनेमिक्स आफ ग्रोथ (वाशिंगटन : वायस आफ अमेरिका फोरम लेक्चर्स, 1966) में संकलित देखें ।

5. बर्टन आर0 क्लार्क, एजुकेटिंग द एक्सपर्ट सोसायटी (सैन फ्रांसिस्को : चैण्डिलर, 1962) पृष्ठ 48 .

में नये विचारों तथा नये समूहों के प्रति निष्ठा पैदा करती है, तथा उसे बोध कराती है कि वह किस प्रकार का व्यक्ति है । शिक्षा सामाजिक पद का प्रतीक है । शिक्षा व्यवसाय से और व्यवसाय आय से निबद्ध है[6] । शिक्षित व्यक्ति ही विशिष्ट और उच्च वेतन की नौकरियों में प्रवेश कर सकता है । विकासशील देशों में शिक्षा वह कुंजी है जो "आधुनिकता के दरवाजे को खोलती है[7]" । शिक्षा नागरिकता का पाठ पढ़ाती है[8] और सामाजिक गतिशीलता प्रदान करती है[9] ।

इस प्रकार आर्थिक राजनैतिक, बौद्धिक, गतिशीलता आदि विविध दृष्टियों से शिक्षा छात्राओं के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है । अनुगामी पृष्ठों में छात्राओं के शैक्षणिक मूल्य तथा आकांक्षाओं का विश्लेषण किया गया है ।

**शैक्षणिक मूल्य -**

छात्राओं के शैक्षणिक मूल्य का विश्लेषण प्रधानतया दो आधारों पर किया गया है : शिक्षा का उद्देश्य और शिक्षा का प्रकार । इससे ज्ञात हो सकेगा कि छात्राओं की दृष्टि में आज शिक्षा का उद्देश्य क्या है और समकालीन समाज में किस प्रकार की शिक्षा पर बल दिया जाता है । इन शैक्षणिक मूल्यों के विश्लेषण से छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षाओं को समझने में सहायता मिल सकेगी ।

---

6. एम०एस०गोरे, "सम प्रोब्लेम आफ एजुकेटेड यूथ इन इण्डिया", ए०अप्पादोरई (सम्पादक), इण्डिया: स्टडीज इन सोशल एण्ड पालिटिकल डेवलपमेंट, 1847-1967 (नई दिल्ली : एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1968), पृष्ठ 79

7. फ्रेडरिक हार्बिसन और चार्ल्स मायर्स, एजुकेशन, मैन पावर एण्ड एकोनामिक ग्रोथ : स्ट्रेटैजीज आफ ह्यूमन रिसोर्सेज डेवलपमेण्ट (न्यूयार्क : मैकग्राहिल, 1964), पृष्ठ 181.

8. डेविड ग्लास, "एजुकेशन एण्ड सोशल चेन्ज इन मार्डन वर्ल्ड, "हैलसे आदि, पूर्वोक्त में, पृष्ठ 395.

9. मेलविन ट्यूगिन और अर्नाल्ड एस0फेल्डमैन, "स्टेटस पर्स्पेक्टिव एण्ड क्लास स्ट्रक्चर इन प्योरेटो रिका, "अमेरिकन सोशियोलाजिकल रिव्यू, (अगस्त 1956), पृष्ठ 470 देखें ।

**शिक्षा का उद्देश्य -**

छात्राओं की दृष्टि में शिक्षा के तीन प्रमुख उद्देश्य हैं - ज्ञानवृद्धि, धनोपार्जन तथा चरित्र निर्माण । इन तीनों उद्देश्यों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं ज्ञानोपार्जन ।

**सारणी 4.1**

**शिक्षा का उद्देश्य, प्रतिशत में**

| शिक्षा का उद्देश्य | छात्रायें |
|---|---|
| 1. ज्ञान वृद्धि | 38.67 |
| 2. धनोपार्जन | 34.50 |
| 3. चरित्रनिर्माण | 26.83 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

छात्राओं की दृष्टि में शिक्षा का प्रधान उद्देश्य ज्ञानवृद्धि (38.67 प्रतिशत) विशेष महत्वूपर्ण है । उसके बाद दूसरे स्थान पर धनोपार्जन (34.50 प्रतिशत) है क्योंकि नगरीय परिवेश में भौतिक साधनों तथा अन्य अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये धन विशेष महत्वपूर्ण है । तत्पश्चात् चरित्र निर्माण की श्रेणी आती है (26.83 प्रतिशत) ।

शिक्षा का पारम्परिक उद्देश्य "ज्ञान प्राप्ति तथा चरित्र निर्माण" रहा है । आज भी नगरीय छात्रायें शिक्षा में इन बुनियादी उद्देश्यों को सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानती हैं । तथापि छात्राओं पर समसामयिक उपयोगिता वादी मूल्यों का प्रभाव भी कम नहीं प्रतीत होता क्योंकि पर्याप्त संख्या में छात्राओं ने धनोपार्जन को अपना शैक्षिक उद्देश्य स्वीकार किया है ।

इसी तारतम्य में छात्राओं से यह ज्ञात करने की चेष्टा की गयी कि उनकी

दृष्टि में किस विशिष्ट शिक्षा पर अधिक बल देना चाहिये । सारणी 4.2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अधिकांश छात्रायें (75.00 प्रतिशत) प्राविधिक तथा व्यावसायिक शिक्षा पर अधिक बल देने के पक्ष में हैं ।

**सारणी 4.2**

**छात्राओं की दृष्टि में किस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए, प्रतिशत में**

| शिक्षा का प्रकार | छात्रायें |
|---|---|
| 1. प्राविधिक तथा व्यावसायिक शिक्षा | 75.00 |
| 2. नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा | 21.83 |
| 3. शारीरिक तथा सैनिक शिक्षा | 3.17 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

दूसरा स्थान नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा का है । जिसे 21.83 प्रतिशत छात्राओं द्वारा बल प्रदान किया गया है, शारीरिक तथा सैनिक शिक्षा को चाहने वाली छात्रायें कम (3.17 प्रतिशत) ही हैं ।

प्राविधिक और व्यावसायिक शिक्षा पर बल देना उनके आधुनिक मूल्यों का परिचायक है ।

**शैक्षणिक आकांक्षाएं -**

पूर्ववर्ती विवरण में छात्राओं के शैक्षणिक मूल्य का विश्लेषण किया गया । सामने आये तथ्यों के अनुसार छात्रायें शिक्षा के तीनों उद्देश्यों को न्यूनाधिक महत्वपूर्ण मानती हैं । साथ ही, उन्होंने प्राविधिक-व्यावसायिक शिक्षा पर अधिक बल दिया है परन्तु छात्राओं का उपर्युक्त मत सामान्य स्तर पर था ।

अब यह देखना समीचीन होगा कि छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षायें क्या है और इसे दो स्तरों - आत्म तथा अन्य स्त्रियों पर जानने की चेष्टा की गयी है । प्रथमतः, हम अन्य स्त्रियों के स्तर पर छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा का विश्लेषण करेगें और फिर उनके स्वयं के स्तर पर स्त्रियों के लिये छात्राओं द्वारा आकांक्षित शिक्षा के स्तर का विश्लेषण किया जायेगा ।

**स्त्रियों की शिक्षा के प्रति छात्राओं की आकांक्षा -**

लम्बे संघर्ष के बाद भारतीय महिलाओं ने समाज में अपने लिये कुछ जगह बनायी है । महिलाओं में अक्षर ज्ञान के प्रति रूचि बढ़ी है, साक्षरता भी बढ़ी है परिणामतः महिलाओं की स्थिति में बदलाव आ रहा है जो एक सकारात्मक दिशा है फिर भी भारत में स्त्रियों की शिक्षा सदैव उपेक्षित रही है और आज भी अपनी मनचाही शिक्षा प्राप्त करने के लिये कम ही स्त्रियाँ आगे आ पाती हैं । इसका प्रमुख कारण यह था कि पहले शिक्षा व्यवस्था केवल पुरुषों के लिये थी स्त्रियों के लिये नहीं । लेकिन स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् स्त्रियों की स्थिति को सुधारने की दिशा में अनेक प्रयास किये गये हैं, जिसमें उन्हें शिक्षा प्रदान करना महत्वपूर्ण माना गया । आज शिक्षा के प्रति उनका झुकाव बढ़ रहा है । इस परिवर्तित परिवेश में स्त्रियों की शिक्षा के प्रति छात्राओं की आकांक्षाओं का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है ।

सारणी 4.3 (चित्र 4.1) को देखने से स्पष्ट होता है कि अधिकांश छात्रायें स्त्रियों को महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर तक शिक्षा देने के पक्ष में हैं ।

92.17 प्रतिशत छात्रायें स्त्रियों को महाविद्यालय / विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा प्रदान करने की पक्षधर हैं, जबकि 5.17 प्रतिशत छात्रायें माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा देना उपयुक्त समझती हैं । ध्यान देने की बात यह है कि मात्र 2.66 प्रतिशत छात्रायें ही स्त्रियों के लिये प्राथमिक/जूनियर स्तर तक की शिक्षा के पक्ष में हैं । स्त्रियों को अशिक्षित रखने के पक्ष में कोई भी छात्रा नहीं हैं ।

अध्याय तीन में छात्राओं की सामाजिक पृष्ठभूमि का आनुभविक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया और देखा गया कि नगरों में रहने वाली छात्रायें किस प्रकार जीवन चक्र तथा जीवन पद्धति में परस्पर समान और पृथक हैं । वर्तमान अध्याय में छात्राओं के शैक्षणिक मूल्य और आकांक्षाओं की ओर ध्यान केन्द्रित किया गया है ।

विश्व के विकसित देशों में उच्च शिक्षा उच्च वर्ग तक ही सीमित रही है[1] और आज भी है[2] ।

---

1. उदाहरणार्थ इंगलैण्ड में विश्वविद्यालय कुलीनतंत्र और भद्र पुरूषों के वर्ग के लिये ही सुरक्षित रहा है । इस संबंध में ए0एच0हैलसे, "द चेन्जिंग फंक्शन्स आफ युनिवर्सिटीज, "ए0एच0हैलसे, जीन क्लाउड तथा सी0 अर्नाल्ड एण्डर्सन (सम्पादक), एजुकेशन, इकोनामी एण्ड सोसाइटी (न्यूयार्क : द फ्री प्रेस, 1961) में संकलित, पृष्ठ 458. अमेरिकन गृहयुद्ध के पूर्व उच्च-शिक्षा भद्र पुरूष तक ही सीमित थी । इसके लिये रिचार्ड हाफस्टेडटर और सी0डी0 विटहार्डी, द डेवलपमेण्ट एण्ड स्कोप आफ हायर एजुकेशन इन द युनाइटेड स्टेट्स( न्यूयार्क : कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 1952) में संकलित, पृष्ठ 11.

2. वर्ष 1960 तक विश्व की जनसंख्या का केवल सातवॉ भाग स्कूल में अध्ययन कर रहा था । अमेरिका में, जहॉ जनसंख्या का सर्वाधिक अनुपात किसी एक देश की तुलना में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा था, 5 करोड़ के ऊपर, जो समस्त जनसंख्या का एक चौथाई भाग है, उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा था, और 5 तथा 20 वर्ष के बीच बच्चों में से केवल तीन-चौथाई विद्यार्थी थे । इंगलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी तथा रूस में जनसंख्या का एक-पॉचवा भाग 5 और 25 वर्ष के बीच किसी स्कूल में पढ़ रहे थे, और जापान में तीन-पॉचवा भाग पढ़ रहा था । 1962 में एशिया की जनसंख्या का एक-आठवॉ भाग तथा अफ्रीका की जनसंख्या का एक-दसवॉ भाग से कम लोग स्कूल में पढ़ रहे थे । उक्त ऑकड़ों के लिये देखें वर्ल्ड सर्वे आफ एजुकेशन, 4: हायर एजुकेशन (न्यूयार्क : यूनेस्को, 1966), अध्याय 2.

भारत वर्ष में तो विशेषरूप से शिक्षा अतीत काल से लेकर ब्रिटिश राज्य तक उच्च जातियों और वर्गो तक सीमित रही है[3] । इस प्रकार प्रत्येक समाज में उच्च शिक्षा को अपने-अपने ढंग से महत्व पूर्ण स्थान दिया गया है और इसे दुर्लभ वस्तु बना दिया गया है । अतः शिक्षा पाने की लोगों में उत्कट आकांक्षा बनी रहती है ।

आधुनिक समाज में शिक्षा ज्ञान के लिये ही नहीं, वरन् अनेक महत्वपूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति के लिये प्राप्त और प्रदान की जाती है[4] । सामाजिक दृष्टि से शिक्षा समाज की प्राद्योगिकी तथा आर्थिक प्रगति के लिये अपरिहार्य है[5] ।

राजनीतिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिये शिक्षा प्रशासकों को उत्पन्न करती है । समाज की विभिन्नता में एकता उत्पन्न करने में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । शिक्षा से ही मनुष्य वह व्यवहार सीख पाता है जिससे आधुनिक राज्य और समाज का संचालन और एकीकरण सम्भव हो पाता है । इतना ही नहीं, शिक्षा समाज की बौद्धिक व्यवस्था को सुरक्षित रखती है और उन व्यक्तियों को छांटती है जो भावी समाज में विशिष्ट वर्ग का निर्माण करते हैं । व्यक्तिगत दृष्टि से शिक्षा व्यक्ति

---

3. भारत वर्ष में अतीत काल में शिक्षा की प्रमुख प्रणाली आश्रम व्यवस्था थी, जिसमें केवल द्विज-ब्राम्हण, क्षत्रिय और वैश्य के बच्चे ही पढ़ते थे । स्त्रियों और शूद्रों के लिये शिक्षा की कोई वैसी या अन्य समानान्तर व्यवस्था नहीं थी । आश्रम व्यवस्था के लिये के0एम0कपाडिया, मैरेज एण्ड फेमिली इन इण्डिया, (न्यूयार्क आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1966), पी0एच0प्रभू, हिन्दू सोशल आर्गेनाइजेशन (बम्बई : पापुलर प्रकाशन, 1963) देखें । ब्रिटिश काल में शिक्षा के लिये डी0जी0वीयर्स, ब्रिटिश एट्टिटयूड्स टूवार्डस इण्डिया 1748-1858 (लन्दनः आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1961), ए0 आई0 मेहयू, द एजुकेशन इन इण्डिया: ए स्टडी आफ इण्डिया टुडे (लन्दन : गेवर और ग्वीयर, 1926) देखें ।

4. शिक्षा के विविध उद्देश्यों के लिये सी0अर्नाल्ड एण्डर्सन, "द मार्डनाइजेशन आफ एजुकेशन, "अध्याय 5, माईनर टाइनर (सम्पादक), मार्डनाइजेशन : द डाइनेमिक्स आफ ग्रोथ (वाशिंगटन : वायस आफ अमेरिका फोरम लेक्चर्स, 1966 ) में संकलित देखें ।

5. बर्टन आर0 क्लार्क, एजुकेटिंग द एक्सपर्ट सोसायटी (सैन फ्रांसिस्को : चैण्डिलर, 1962 ) पृष्ठ 48 .

में नये विचारों तथा नये समूहों के प्रति निष्ठा पैदा करती है, तथा उसे बोध कराती है कि वह किस प्रकार का व्यक्ति है । शिक्षा सामाजिक पद का प्रतीक है । शिक्षा व्यवसाय से और व्यवसाय आय से निबद्ध है[6] । शिक्षित व्यक्ति ही विशिष्ट और उच्च वेतन की नौकरियों में प्रवेश कर सकता है । विकासशील देशों में शिक्षा वह कुंजी है जो "आधुनिकता के दरवाजे को खोलती है[7]" । शिक्षा नागरिकता का पाठ पढ़ाती है[8] और सामाजिक गतिशीलता प्रदान करती है[9] ।

इस प्रकार आर्थिक राजनैतिक, बौद्धिक, गतिशीलता आदि विविध दृष्टियों से शिक्षा छात्राओं के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है । अनुगामी पृष्ठों में छात्राओं के शैक्षणिक मूल्य तथा आकांक्षाओं का विश्लेषण किया गया है ।

## शैक्षणिक मूल्य -

छात्राओं के शैक्षणिक मूल्य का विश्लेषण प्रधानतया दो आधारों पर किया गया है : शिक्षा का उद्देश्य और शिक्षा का प्रकार । इससे ज्ञात हो सकेगा कि छात्राओं की दृष्टि में आज शिक्षा का उद्देश्य क्या है और समकालीन समाज में किस प्रकार की शिक्षा पर बल दिया जाता है । इन शैक्षणिक मूल्यों के विश्लेषण से छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षाओं को समझने में सहायता मिल सकेगी ।

---

6. एम0एस0गोरे, "सम प्रोब्लेम आफ एजुकेटेड यूथ इन इण्डिया", ए0अप्पादोरई (सम्पादक), इण्डिया: स्टडीज इन सोशल एण्ड पालिटिकल डेवलपमेंट, 1847-1967 (नई दिल्ली : एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1968), पृष्ठ 79

7. फ्रेडरिक हार्विसन और चार्ल्स मायर्स, एजुकेशन, मैन पावर एण्ड एकोनामिक ग्रोथ : स्ट्रेटैजीज आफ ह्यूमन रिसोर्सेज डेवलपमेण्ट (न्यूयार्क : मैकग्राहिल, 1964), पृष्ठ 181.

8. डेविड ग्लास, "एजुकेशन एण्ड सोशल चेन्ज इन मार्डन वर्ल्ड, "हैलसे आदि, पूर्वोक्त में, पृष्ठ 395.

9. मेलविन टयूगिन और अर्नाल्ड एस0फेल्डमैन, "स्टेटस पर्स्पेक्टिव एण्ड क्लास स्ट्रक्चर इन प्योरेटो रिका, "अमेरिकन सोशियोलाजिकल रिव्यू, (अगस्त 1956), पृष्ठ 470 देखें ।

**शिक्षा का उद्देश्य -**

छात्राओं की दृष्टि में शिक्षा के तीन प्रमुख उद्देश्य हैं - ज्ञानवृद्धि, धनोपार्जन तथा चरित्र निर्माण । इन तीनों उद्देश्यों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं ज्ञानोपार्जन ।

**सारणी 4.1**

**शिक्षा का उद्देश्य, प्रतिशत में**

| शिक्षा का उद्देश्य | छात्रायें |
|---|---|
| 1. ज्ञान वृद्धि | 38.67 |
| 2. धनोपार्जन | 34.50 |
| 3. चरित्रनिर्माण | 26.83 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

छात्राओं की दृष्टि में शिक्षा का प्रधान उद्देश्य ज्ञानवृद्धि (38.67 प्रतिशत) विशेष महत्वूपर्ण है । उसके बाद दूसरे स्थान पर धनोपार्जन (34.50 प्रतिशत) है क्योंकि नगरीय परिवेश में भौतिक साधनों तथा अन्य अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये धन विशेष महत्वपूर्ण है । ततपश्चात् चरित्र निर्माण की श्रेणी आती है (26.83 प्रतिशत) ।

शिक्षा का पारम्परिक उद्देश्य "ज्ञान प्राप्ति तथा चरित्र निर्माण" रहा है । आज भी नगरीय छात्रायें शिक्षा में इन बुनियादी उद्देश्यों को सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानती हैं । तथापि छात्राओं पर समसामयिक उपयोगिता वादी मूल्यों का प्रभाव भी कम नहीं प्रतीत होता क्योंकि पर्याप्त संख्या में छात्राओं ने धनोपार्जन को अपना शैक्षिक उद्देश्य स्वीकार किया है ।

इसी तारतम्य में छात्राओं से यह ज्ञात करने की चेष्टा की गयी कि उनकी

दृष्टि में किस विशिष्ट शिक्षा पर अधिक बल देना चाहिये । सारणी 4.2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अधिकांश छात्रायें (75.00 प्रतिशत) प्राविधिक तथा व्यावसायिक शिक्षा पर अधिक बल देने के पक्ष में हैं ।

**सारणी 4.2**

**छात्राओं की दृष्टि में किस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए, प्रतिशत में**

| शिक्षा का प्रकार | छात्रायें |
|---|---|
| 1. प्राविधिक तथा व्यावसायिक शिक्षा | 75.00 |
| 2. नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा | 21.83 |
| 3. शारीरिक तथा सैनिक शिक्षा | 3.17 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

दूसरा स्थान नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा का है । जिसे 21.83 प्रतिशत छात्राओं द्वारा बल प्रदान किया गया है, शारीरिक तथा सैनिक शिक्षा को चाहने वाली छात्रायें कम (3.17 प्रतिशत) ही हैं ।

प्राविधिक और व्यावसायिक शिक्षा पर बल देना उनके आधुनिक मूल्यों का परिचायक है ।

**शैक्षणिक आकांक्षाएं -**

पूर्ववर्ती विवरण में छात्राओं के शैक्षणिक मूल्य का विश्लेषण किया गया । सामने आये तथ्यों के अनुसार छात्रायें शिक्षा के तीनों उद्देश्यों को न्यूनाधिक महत्वपूर्ण मानती हैं । साथ ही, उन्होंने प्राविधिक-व्यावसायिक शिक्षा पर अधिक बल दिया है परन्तु छात्राओं का उपर्युक्त मत सामान्य स्तर पर था ।

अब यह देखना समीचीन होगा कि छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षायें क्या है और इसे दो स्तरों - आत्म तथा अन्य स्त्रियों पर जानने की चेष्टा की गयी है । प्रथमतः, हम अन्य स्त्रियों के स्तर पर छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा का विश्लेषण करेगें और फिर उनके स्वयं के स्तर पर स्त्रियों के लिये छात्राओं द्वारा आकांक्षित शिक्षा के स्तर का विश्लेषण किया जायेगा ।

<u>स्त्रियों की शिक्षा के प्रति छात्राओं की आकांक्षा -</u>

लम्बे संघर्ष के बाद भारतीय महिलाओं ने समाज में अपने लिये कुछ जगह बनायी है । महिलाओं में अक्षर ज्ञान के प्रति रूचि बढ़ी है, साक्षरता भी बढ़ी है परिणामतः महिलाओं की स्थिति में बदलाव आ रहा है जो एक सकारात्मक दिशा है फिर भी भारत में स्त्रियों की शिक्षा सदैव उपेक्षित रही है और आज भी अपनी मनचाही शिक्षा प्राप्त करने के लिये कम ही स्त्रियाँ आगे आ पाती हैं । इसका प्रमुख कारण यह था कि पहले शिक्षा व्यवस्था केवल पुरुषों के लिये थी स्त्रियों के लिये नहीं । लेकिन स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् स्त्रियों की स्थिति को सुधारने की दिशा में अनेक प्रयास किये गये हैं, जिसमें उन्हें शिक्षा प्रदान करना महत्वपूर्ण माना गया । आज शिक्षा के प्रति उनका झुकाव बढ़ रहा है । इस परिवर्तित परिवेश में स्त्रियों की शिक्षा के प्रति छात्राओं की आकांक्षाओं का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है ।

सारणी 4.3 (चित्र 4.1) को देखने से स्पष्ट होता है कि अधिकांश छात्रायें स्त्रियों को महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर तक शिक्षा देने के पक्ष में हैं ।

92.17 प्रतिशत छात्रायें स्त्रियों को महाविद्यालय / विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा प्रदान करने की पक्षधर हैं, जबकि 5.17 प्रतिशत छात्रायें माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा देना उपयुक्त समझती हैं । ध्यान देने की बात यह है कि मात्र 2.66 प्रतिशत छात्रायें ही स्त्रियों के लिये प्राथमिक/जूनियर स्तर तक की शिक्षा के पक्ष में हैं । स्त्रियों को अशिक्षित रखने के पक्ष में कोई भी छात्रा नहीं हैं ।

## स्त्रियों की शिक्षा के प्रति छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षायें (प्रतिशत में)
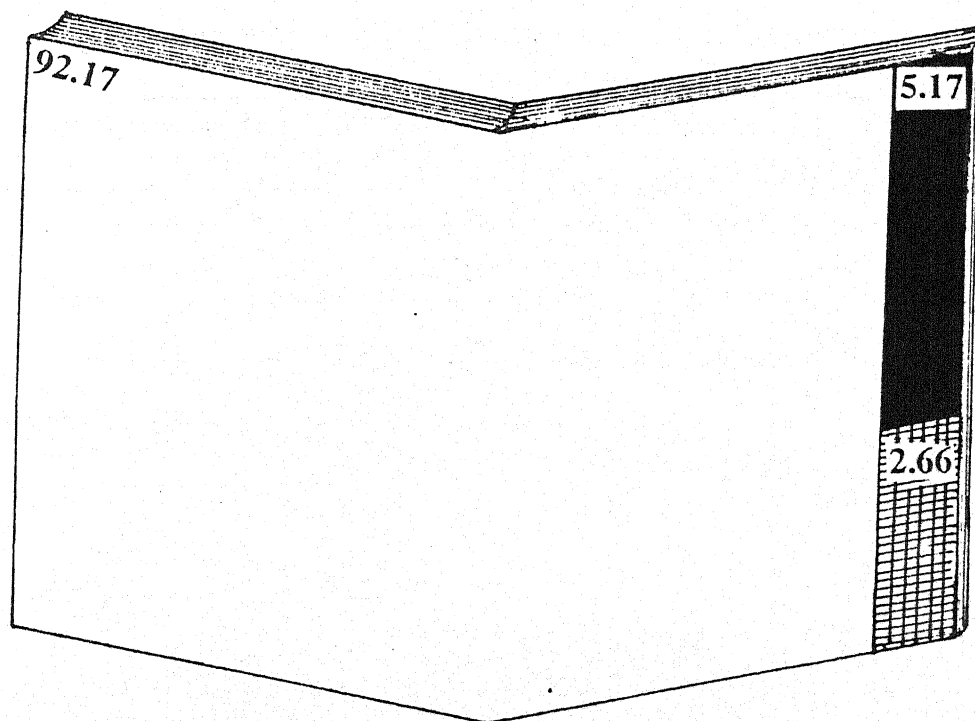
चित्र 4.1

**सारणी 4.3**

**स्त्रियों की शिक्षा के प्रति छात्राओं की आकांक्षायें, प्रतिशत में**

| शिक्षा का स्तर | छात्रायें |
|---|---|
| 1. महाविद्यालय/विश्वविद्यालय स्तर | 92.17 |
| 2. माध्यमिक स्तर | 5.17 |
| 3. प्राथमिक / जूनियर स्तर | 2.66 |
| 4. कोई शिक्षा नहीं | - |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

विभिन्न शैक्षणिक स्तरों को सांख्यकीय विश्लेषण की दृष्टि से तीन स्तरों में रखा गया है - (1) कोई शिक्षा नहीं तथा प्राथमिक/जूनियर स्तर की शिक्षा को "निम्न" (2) माध्यमिक स्तर की शिक्षा को "मध्यम" तथा (3) महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा को "उच्च" कहा गया है ।

सारणी 4.4 में प्रस्तुत तथ्यों से ज्ञात होता है कि नगरीय परिवेश की अधिकांश छात्रायें "उच्च" शिक्षा की पक्षधर हैं ।

**सारणी 4.4**

**स्त्रियों के लिए छात्राओं द्वारा आकांक्षित शिक्षा का स्तर, प्रतिशत में**

| शिक्षा का स्तर | छात्रायें |
|---|---|
| निम्न | 2.66 |
| मध्यम | 5.17 |
| उच्च | 92.17 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

उक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि स्त्रियों को (92.17 प्रतिशत) छात्रायें "उच्च" शिक्षा देने के पक्ष में हैं । "मध्यम" तथा "निम्न" स्तर तक शिक्षा की आकांक्षा प्रदर्शित करने वाली छात्रायें (5.17 प्रतिशत) तथा (2.66 प्रतिशत) ही हैं ।

सारांशतः, नगरीय क्षेत्र की छात्राओं का स्त्रियों को शिक्षा देने की आकांक्षा का स्तर उच्च है, तथा उनका शैक्षणिक स्तर उठाकर समाज में उन्हें समुचित स्थान देने के पक्ष में हैं ।

उपर्युक्त निष्कर्ष, भारतीय समाज के लिये महत्वपूर्ण अर्थ रखता है स्त्रियों की शिक्षा के लिये छात्राओं की जागरूकता आधुनिक समाज की मांग का परिचायक है ।

अब स्वतंत्र चर तथा स्त्रियों के प्रति छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा के बीच सम्बन्धों को देखना उपयुक्त होगा । सारणी 4.5 (चित्र 4.2) में सामाजिक वर्ग तथा स्त्रियों के प्रति छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा सम्बन्धी तथ्य प्रस्तुत किये गये हैं ।

**सारणी 4.5**

**सामाजिक वर्ग तथा स्त्रियों की शिक्षा के प्रति छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा, प्रतिशत में**

| शैक्षणिक आकांक्षा | सामाजिक वर्ग | | | |
|---|---|---|---|---|
| | उच्च | मध्यम | निम्न | समग्र प्रतिशत |
| उच्च | 90.06 | 95.58 | 87.20 | 92.17 |
| मध्यम | 6.63 | 3.40 | 7.20 | 5.17 |
| निम्न | 3.31 | 1.02 | 5.60 | 2.66 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | (181) | (294) | (125) | 100.00 |

**काई वर्ग ($x^2$) मूल्य = 11.63**

**स्वातंत्र्यांश = 4**

**सम्भावना स्तर .05 पर महत्वपूर्ण**

सामाजिक वर्ग तथा स्त्रियों की शिक्षा के प्रति छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा प्रतिशत में
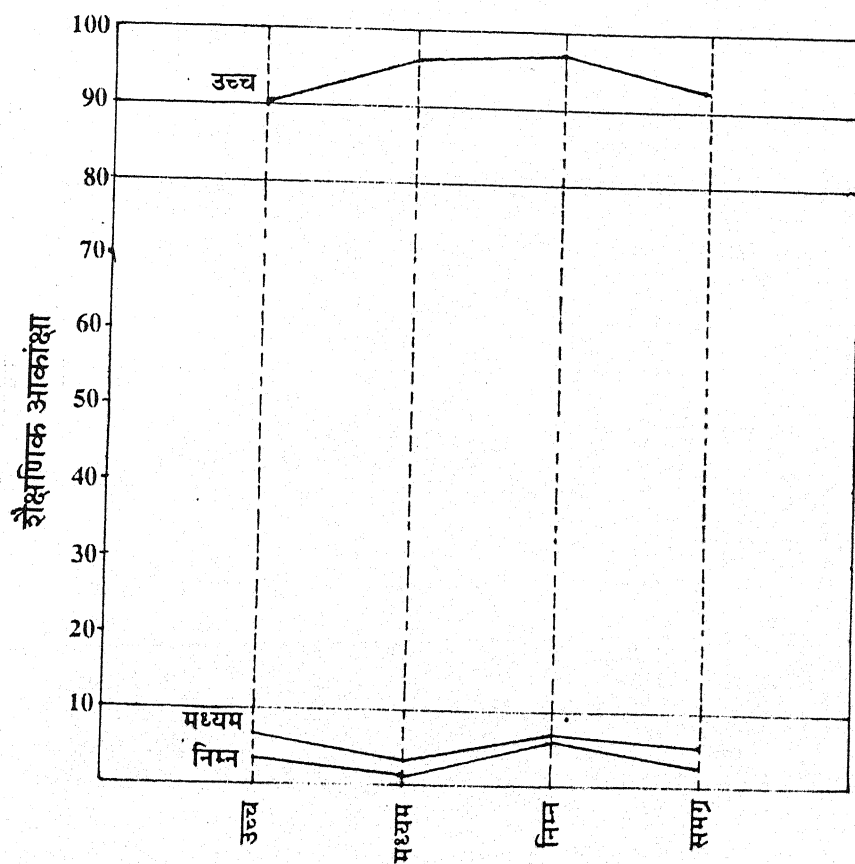
चित्र 4.2

तथ्यों से स्पष्ट होता है कि मध्यम वर्ग की छात्राओं की स्त्रियों के प्रति शैक्षणिक आकांक्षा, उच्च तथा निम्न वर्ग की छात्राओं की तुलना में उच्च है (90.06, 95.58, 87.20 प्रतिशत) । उच्च तथा निम्न वर्ग की छात्राओं की स्त्रियों की शैक्षणिक आकांक्षा का स्तर भी कम नहीं है । निम्न स्तर की शैक्षणिक आकांक्षा में निम्न वर्ग की छात्राओं का अनुपात उच्च तथा मध्यम वर्ग की छात्राओं से अधिक (3.31, 1.02, 5.60 प्रतिशत) । इन तथ्यों से स्पष्ट होता है कि सामाजिक वर्ग तथा स्त्रियों की आकांक्षा के बीच महत्वपूर्ण अन्तर है ।

जाति तथा स्त्रियों की शिक्षा के प्रति छात्राओं की आकांक्षा सम्बन्धी तथ्यों (जो सारणी 4.6,(चित्र 4.3) में प्रदर्शित हैं) के अवलोकन से ज्ञात होता है कि उच्च जाति की छात्राओं (97.37 प्रतिशत) की स्त्रियों की शैक्षणिक आकांक्षा मध्यम तथा निम्न

**सारणी 4.6**

**जाति तथा स्त्रियों की शिक्षा के प्रति छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा, प्रतिशत में**

| शैक्षणिक आकांक्षा | जाति | | | |
|---|---|---|---|---|
| | उच्च | मध्यम | निम्न | समग्र प्रतिशत |
| उच्च | 95.37 | 91.48 | 85.08 | 92.16 |
| मध्यम | 3.70 | 5.67 | 7.46 | 5.17 |
| निम्न | 0.93 | 2.84 | 7.46 | 2.67 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | (216) | (317) | (67) | 100.00 |

**काई वर्ग ($x^2$) मूल्य = 10.68**

**स्वातंत्र्यांश = 4**

**सम्भावना स्तर .05 पर महत्वपूर्ण**

जाति तथा स्त्रियों की शिक्षा के प्रति छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा (प्रतिशत में)
100
90
80
70
60
50
40
30
20
10
उच्च
मध्यम
निम्न
शैक्षणिक आकांक्षा
उच्च
मध्यम
निम्न
समग्र
जाति
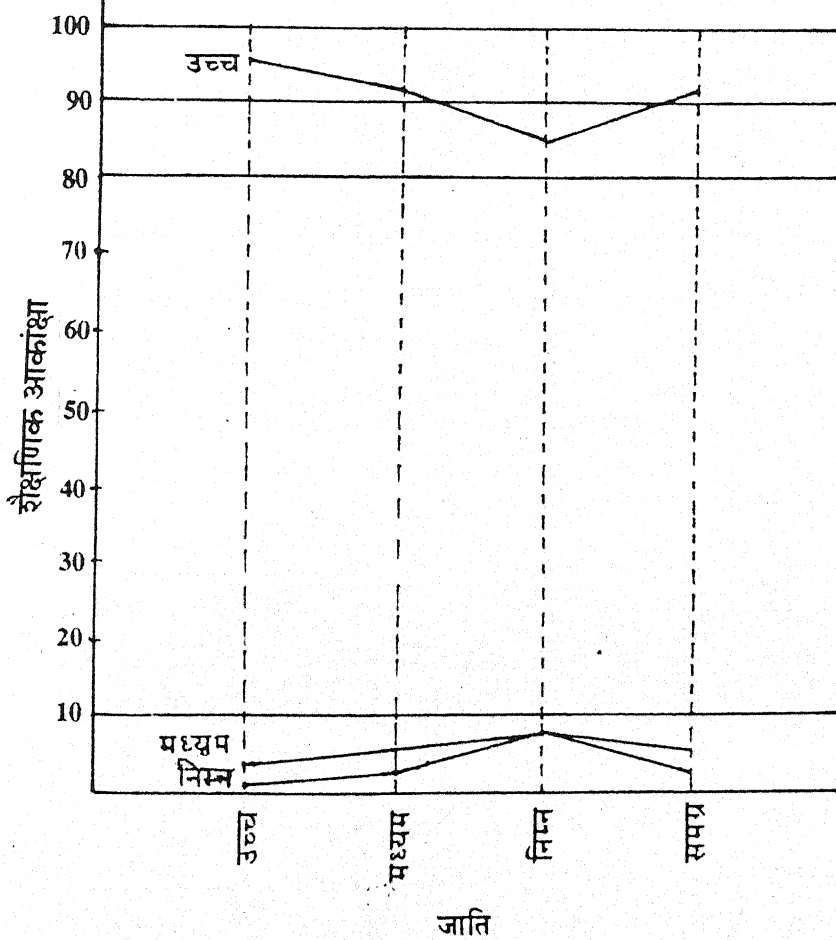
चित्र 4.3

जाति की छात्राओं की तुलना में उच्च है (95.37, 91.48, 85.08 प्रतिशत) । मध्यम स्तर की शैक्षणिक आकांक्षा में निम्न जाति की छात्राओं का प्रतिशत उच्च तथा मध्यम जाति की छात्राओं की अपेक्षा अधिक है (7.46, 3.70, 5.67) । निम्न जाति की छात्राओं की स्त्रियों के प्रति शैक्षणिक आकांक्षा निम्न है (7.46 प्रतिशत) ।

उल्लेखनीय है कि उच्च, मध्यम तथा निम्न सभी जातियों की अधिकांश छात्रायें स्त्रियों को अधिक शिक्षित देखना चाहती हैं । उक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि जाति एवं स्त्रियों की आकांक्षा के बीच महत्वपूर्ण अन्तर है ।

इसी तारतम्य में यह जानने की चेष्टा की गयी है कि छात्रायें जिस स्तर की शिक्षा स्त्रियों को देने की आकांक्षा रखती हैं, उसके पीछे उनका निहित उद्देश्य क्या है । सारणी 4.7 में प्रस्तुत तथ्यों से स्पष्ट होता है कि अधिकांश छात्रायें (84.33 प्रतिशत) स्त्रियों की शिक्षा की पक्षधर इसलिए हैं ताकि वें स्वावलम्बी हो सकें । स्त्रियों को शिक्षा देने का महत्वपूर्ण उद्देश्य है उनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाना (11.83 प्रतिशत) ।

**सारणी 4.7**

**छात्राओं की दृष्टि में स्त्रियों की शिक्षा का उद्देश्य, प्रतिशत में,**

| शिक्षा का उद्देश्य | छात्रायें |
|---|---|
| आत्म निर्भर बनाने हेतु | 84.33 |
| आर्थिक स्थिति सुदृढ करने हेतु | 11.83 |
| स्वतन्त्रता प्रदान करने के लिए | 3.84 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

स्त्रियों को शिक्षा देने का अन्तिम उद्‌देश्य हैं उन्हें स्वतंत्रता प्रदान करना (3.84 प्रतिशत) ।

शिक्षा देने के उपर्युक्त उद्‌देश्यों से संकेत मिलता है कि छात्रायें अपनी एवं स्त्रियों की समस्या से अवगत है । उनके अन्तःकरण में स्वावलम्बी बनने की आकांक्षा है । अतः स्त्रियों को स्वतन्त्र, स्वावलम्बी तथा आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने की भावना है । लेकिन शिक्षा के उद्‌देश्य तथा आकांक्षित शिक्षा स्तर के बीच बहुत बड़ा अन्तराल है । सारणी 4.4 से स्पष्ट होता है कि छात्राओं का अधिकांश भाग स्त्रियों को "उच्च" शिक्षा देने के पक्ष में है और यही पक्ष सारणी 4.7 को देखने से ज्ञात होता है कि वह स्त्रियों को स्वावलम्बी तथा स्वतन्त्र बनाना चाहती हैं, जो अभिकांक्षित शिक्षा स्तर से सम्भाव्य है ।

निःसन्देह देश में शिक्षा के सामान्य विस्तार के साथ स्त्रियों की शिक्षा का पर्याप्त विस्तार हुआ है और हो रहा है । स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात अनेक बालिका विद्यालय इस उद्‌देश्य की पूर्ति के लिए स्थापित किए गए हैं । तथापि साधनों के अभाव में लड़कियों के लिए अपेक्षित शिक्षा की व्यवस्था कर पाना सम्भव नहीं हो पाया है । आज भी बालकों के विद्यालय बालिकाओं के विद्यालयों की तुलना में बहुत अधिक हैं[10] ।

अतः वर्तमान समय में स्त्रियों को शिक्षित कर पाना तभी सम्भव है जब उनको सह शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया जाए । नगरीय क्षेत्र में भी अभी पूर्णतया आधुनिकतावादी दृष्टिकोण नहीं है अपितु परम्परावादी दृष्टिकोण की छाप ही दिखायी पड़ती है । अतः यह प्रयास किया जाता है कि लड़कियाँ लड़कों से अलग रहें इसलिए यह जानने की चेष्टा की गयी है कि छात्राओं का सह-शिक्षा के प्रति क्या दृष्टिकोण है ।

---

10. बालाजी पाण्डेय, "इरैडिकेटिंग इलिटरेसी एमन्ग वीमेन" स्टेट्समैन (दिल्ली, सितम्बर, 9, 1985) ।

सारणी 4.8 से स्पष्ट है कि अधिकांश छात्रायें (87.83 प्रतिशत) सह शिक्षा के पक्ष में हैं, केवल (9.17 प्रतिशत) छात्रायें सहशिक्षा के पक्ष में नहीं हैं ।

**सारणी 4.8**

**छात्राओं का सह शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण, प्रतिशत में**

| सहशिक्षा के प्रति दृष्टिकोण | छात्रायें |
|---|---|
| हां | 87.83 |
| नहीं | 9.17 |
| कह नहीं सकती | 3.00 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

कुछ छात्रायें जिनका प्रतिशत लगभग नगण्य सा ही रहा (3.00 प्रतिशत) वे अपनी राय प्रकट करने में असमर्थ रहीं ।

इससे स्पष्ट होता है कि छात्राओं के दृष्टिकोण में परिवर्तन हो रहा है और वे सह-शिक्षा की पक्षधर होती जा रही हैं ।

स्त्रियों की शिक्षा के प्रति छात्राओं के दृष्टिकोण की गहराई से जानकारी प्राप्त करने के लिए उनसे पूंछा गया क्या स्त्रियों को पुरुषों के समान शिक्षा दी जानी चाहिए ? छात्राओं की प्रतिक्रिया से पता चलता है कि अधिकांश छात्राएं (98.50 प्रतिशत) स्त्रियों को पुरुषों के समान शिक्षा देने के पक्ष में हैं ।

सारणी 4.9

स्त्रियों को पुरुषों के समान शिक्षा देने के प्रति छात्राओं का दृष्टिकोण, प्रतिशत में

| क्या स्त्रियों को पुरुषों के समान शिक्षा दी जानी चाहिए ? | छात्रायें |
|---|---|
| हां | 98.50 |
| नहीं | 0.50 |
| कह नहीं सकती | 1.00 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

मात्र (0.50 प्रतिशत) छात्रायें इसके विपक्ष में हैं । कुछ छात्रायें यह नहीं जानती कि वे क्या कहें (1.00 प्रतिशत) ।

इससे यह प्रतिबिम्बित होता है कि नगरीय छात्रायें स्त्रियों की शिक्षा के प्रति सहानुभूति रखती हैं ।

छात्राओं का स्त्रियों की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण जानने के पश्चात् स्वयं के प्रति उनकी शैक्षणिक आकांक्षा का विश्लेषण करना उपयुक्त होगा । यहां छात्राओं की दोनों प्रकार की आकांक्षाओं - आदर्श और वास्तविक को लिया गया है । आदर्श आकांक्षा वह है जिसे छात्रा प्राप्त करने का, आदर्श बनाये हुए हैं और वास्तविक आकांक्षा वह है जिसे छात्रा प्राप्त करने की चेष्टा कर रही हैं । छात्राओं से पूंछा गया - क्या आप आगे पढ़ेगी ? सारणी 4.10 के तथ्यों से स्पष्ट होता है कि अधिकांश छात्रायें (96.16 प्रतिशत) आगे पढ़ना चाहती हैं ।

**सारणी 4.10**

**छात्राओं की भावी शैक्षणिक योजना, प्रतिशत में**

| भावी शैक्षणिक योजना | छात्रायें |
|---|---|
| आगे पढ़ेगें | 96.16 |
| आगे नहीं पढ़ेगें | 3.84 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

इसके विपरीत, आगे अध्ययन न करने वाली छात्राओं का प्रतिशत बहुत कम हैं (3.84 प्रतिशत) । यह छात्राओं में आगे अध्ययन करने की आकांक्षा और योजना है[11] । जिस हद तक छात्राओं का आगे पढ़ने का संकल्प है, उसमें वर्ग जाति का प्रभाव परिलक्षित नहीं होता क्योंकि लगभग शतप्रतिशत छात्रायें आगे पढ़ना चाहती हैं । छात्राओं के बीच शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने की इच्छा में अन्तर कम होता जा रहा है, चाहे क्रियान्वयन में अन्तर भले ही हो ।

स्मरण करें, अध्ययन की एक प्राक्कल्पना यह थी कि नगरीय छात्रायें प्राविधिक-व्यावसायिक शिक्षा की तुलना में कला की शिक्षा के पक्ष में अधिक हैं । इस प्राक्कल्पना की सत्यता की जांच के लिये यह जानने की चेष्टा की गयी कि नगरीय छात्राओं की अभिरुचि किन विषयों में हैं । छात्राओं की अनुक्रिया से ज्ञात होता है कि अधिकांश छात्राएं कला (68.34 प्रतिशत) विषयों की ओर आकृष्ट हैं या फिर विज्ञान (18.00 प्रतिशत) विषयों की ओर । व्यावसायिक प्रशिक्षण की आकांक्षा रखने वाली छात्राओं का अनुपात (13.66 प्रतिशत) सबसे कम है जो कि सारणी 4.11 से स्पष्ट है ।

---

11. तुलना करें : बी0जी0 देसाई, <u>द इमेजिंग यूथ</u> (बम्बई : पापुलर प्रकाशन, 1967), पृष्ठ 154 तथा राजेन्द्र पाण्डेय, इण्डियाज यूथ ऐट द क्रासरोड्स (वाराणसी : वाणी विहार, 1975) पृष्ठ 138 ।

**सारणी 4.11**

**विषय जिसे छात्रायें आगे अध्ययन करना चाहती हैं, प्रतिशत में**

| अध्ययन विषय | छात्रायें |
|---|---|
| कला | 68.34 |
| विज्ञान | 11.00 |
| व्यावसायिक प्रशिक्षण | 13.66 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

अब छात्राओं द्वारा अभिकांक्षित शिक्षा स्तर की ओर दृष्टिपात करना उपादेय होगा । छात्राओं से पूंछा गया - आप किस स्तर तक शिक्षा ग्रहण करने की आकांक्षा रखती हैं ? सारणी 4.12 (चित्र 4.4) से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक छात्रायें 31.84 प्रतिशत) स्नातक स्तर तक की शिक्षा प्राप्त करना चाहती हैं ।

**सारणी 4.12**

**छात्राओं का आकांक्षित शिक्षा-स्तर, प्रतिशत में**

| आकांक्षित शिक्षा स्तर | छात्रायें |
|---|---|
| 1. स्नातक स्तर | 31.84 |
| 2. परास्नातक स्तर | 29.83 |
| 3. एम0 फिल0/ पी-एच0 डी0 | 24.67 |
| 4. व्यावसायिक प्रशिक्षिण | 13.66 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

दूसरे स्थान पर (29.83 प्रतिशत) छात्रायें परास्नातक स्तर तक की शिक्षा की पक्षधर हैं । छात्राओं में व्यावसायिक प्रशिक्षण जैसे चिकित्सा, इंजीनियरिंग

छात्राओं का आकांक्षित शिक्षा स्तर, प्रतिशत में
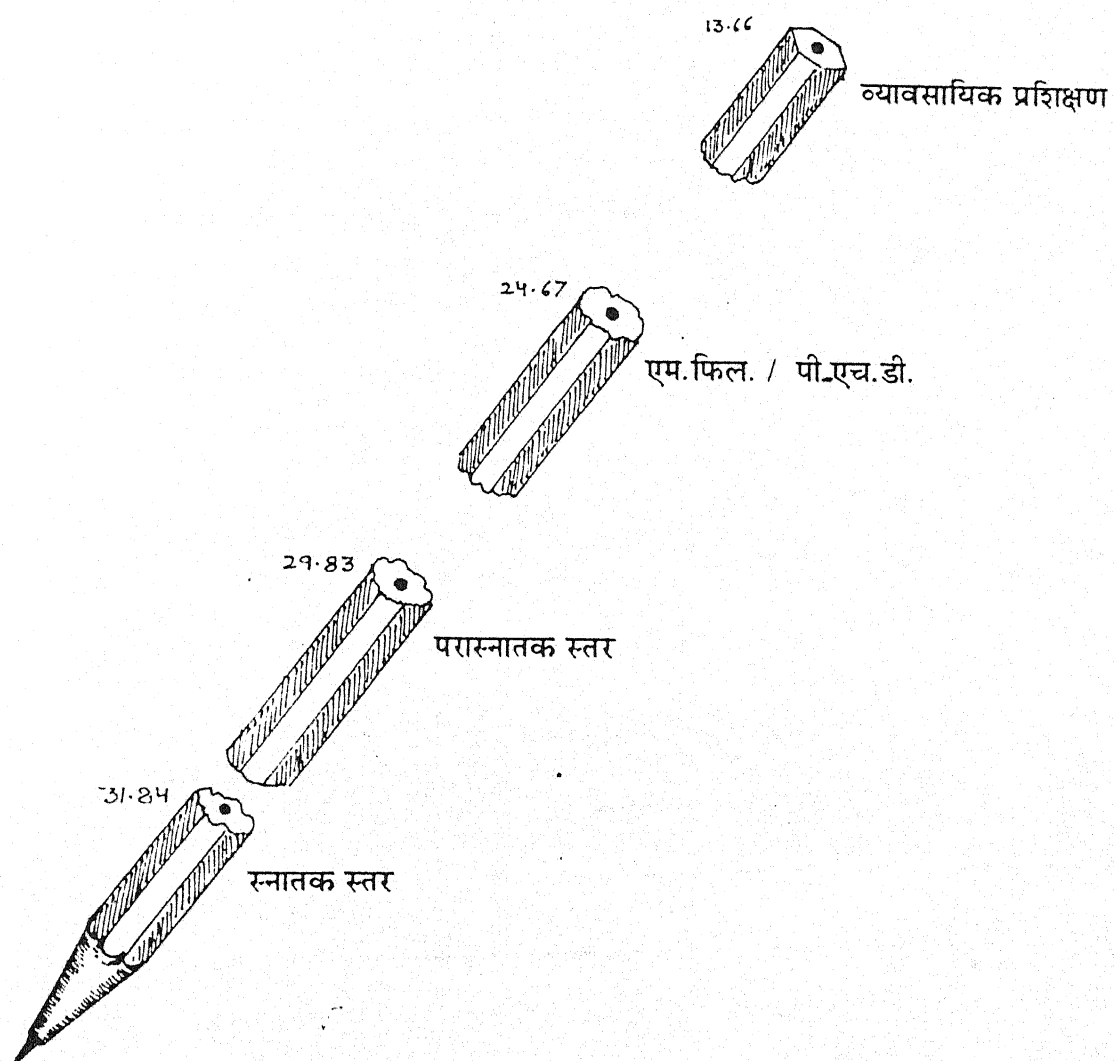
चित्र 4.4

तथा शिक्षा प्रशिक्षण को प्राप्त करने की आकांक्षा कम (13.66 प्रतिशत) ही है । पर्याप्त संख्या में छात्रायें (24.67 प्रतिशत) एम0 फिल0/पी-एच0 डी0 स्तर तक की शिक्षा प्राप्त करने के पक्ष में हैं । कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि छात्रायें उच्च शिक्षा प्राप्त तो करना चाहती हैं परन्तु अधिकांश का उद्देश्य शिक्षा को रोजगार से जोड़ना नहीं है । ऐसा सम्भवतः इसलिये भी हैं क्योंकि पिछड़ा क्षेत्र होने के कारण पुरूषों की प्रधानता है और छात्रायें यह जानती है कि अन्ततः उन्हें घर की चार दीवारी में पारिवारिक उत्तरदायित्वों का ही निर्वाह करना है ।

छात्रायें जिस स्तर की शिक्षा ग्रहण करना चाहती हैं, उन्हें उपयोगितावादी दृष्टि से निम्न प्रतिष्ठा - श्रेणियों में रखा जा सकता है -

(1) उच्च : पी-एच0 डी0, एम0 फिल0, व्यावसायिक प्रशिक्षण

(2) मध्यम : परास्नातक स्तर की शिक्षा

(3) निम्न : स्नातक स्तर की शिक्षा

सारणी 4.13 को देखने से ज्ञात होता है कि अधिकांश नगरीय परिवेश की छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा उच्च (38.33 प्रतिशत) या निम्न (31.84 प्रतिशत) स्तर की है ।

**सारणी 4.13**

**छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा का स्तर, प्रतिशत में**

| शैक्षणिक आंकाक्षा का स्तर | छात्रायें |
|---|---|
| उच्च | 38.33 |
| मध्यम | 29.83 |
| निम्न | 31.84 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

केवल 29.83 प्रतिशत छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा का स्तर मध्यम है । इससे स्पष्ट है कि नगरीय परिवेश की छात्रायें उच्च स्तर की शिक्षा के प्रति जागरूक हैं । साथ ही, परम्परा के प्रभाव के कारण पर्याप्त संख्या में छात्रायें निम्न स्तर की शिक्षा की भी पक्षधर हैं ।

इसी तारतम्य में यह जानने की चेष्टा की गयी है कि क्या छात्रायें अपनी शैक्षणिक आकांक्षा को पूरा करने के लिये कटिबद्ध हैं । इसके लिये जब उनके समक्ष कतिपय परिकल्पित कठिनाइयों को रखा गया तथा पूंछा गया कि क्या वे इन कठिनाइयों के होने पर भी अपने शैक्षणिक संकल्प को पूरा करेंगी । कठिनाइयों तथा छात्राओं का प्रति उत्तर सारणी 4.14 में प्रस्तुत हैं ।

**सारणी 4.14**

**क्या आप अधोलिखित कठिनाइयों के होने पर भी अपना शैक्षणिक संकल्प पूरा करेंगी प्रतिशत में**

| कठिनाइयाँ | छात्रायें |
|---|---|
| **1. माता पिता की शिक्षा-व्यय वहन करने की विवशता है -** | |
| हां | 48.67 |
| नहीं | 20.33 |
| कह नहीं सकतीं | 31.00 |
| | 100.00 |
| **2. माता पिता की आगे पढ़ाने की इच्छा न हो-** | |
| हां | 53.17 |
| नहीं | 17.50 |
| कह नहीं सकती | 29.53 |
| | 100.00 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

उपलब्ध अनुक्रिया से ज्ञात होता है कि अधिकांश छात्रायें आर्थिक कठिनाइयों (48.67 प्रतिशत) तथा माता पिता की अनिच्छा (53.17 प्रतिशत) के बावजूद अपने शैक्षणिक लक्ष्य को पूरा करने के लिये कटिबद्ध हैं । इससे यह प्रतिभासित होता है कि नगरीय छात्रायें अपने भविष्य को उज्जवल बनाने के लिये अपनी शैक्षणिक आकांक्षा को गम्भीरता से ले रही हैं । परन्तु छात्राओं का एक निश्चित प्रतिशत (क्रमशः 20.33 तथा 17.50) माता-पिता की विवशता और अनिच्छा पर निर्भर है । साथ ही, पर्याप्त संख्या में छात्रायें (क्रमशः 31.00 तथा 29.33 प्रतिशत) प्रतिकूल परिस्थितियां आने पर अनिर्णय की स्थिति में हैं । ऐसा सम्भवतः परम्परा के प्रभाव के कारण स्त्रियों के पराश्रित होने का परिचायक है ।

अब स्वतन्त्र चरों तथा छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा के बीच सह-सम्बन्धों को देखना समीचीन होगा । सामाजिक वर्ग तथा छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा से सम्बन्धित तथ्य सारणी 4.15 में प्रस्तुत हैं ।

**सारणी 4.15**

**सामाजिक वर्ग तथा छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा, प्रतिशत में**

| आकांक्षा स्तर | वर्ग | | | |
|---|---|---|---|---|
| | उच्च | मध्यम | निम्न | समग्र प्रतिशत |
| **उच्च** | 48.07 | 25.51 | 54.40 | 38.33 |
| मध्यम | 22.65 | 34.35 | 29.60 | 29.83 |
| निम्न | 29.28 | 40.14 | 16.00 | 31.84 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | (181) | (294) | (125) | 100.00 |

**काई-वर्ग ($x^2$) मूल्य = 47.23**

**स्वातंत्र्यांश = 4**

**सम्भावना स्तर .01 पर महत्वपूर्ण**

उच्च तथा मध्यम वर्ग की तुलना में निम्न वर्ग की छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा उच्च स्तर की है । (48.07, 25.51, 54.40 प्रतिशत) साथ ही, उच्च तथा मध्यम वर्ग की पर्याप्त छात्राओं (क्रमशः 29.28 तथा 40.14 प्रतिशत) की आकांक्षा का स्तर निम्न है । उन्हीं वर्गो की छात्राओं (क्रमशः 22.65 तथा 34.35 प्रतिशत) की आकांक्षायें मध्यम स्तर की हैं । मध्यम वर्ग की अधिकांश छात्राओं (40.14 प्रतिशत) की आकांक्षा का स्तर निम्न है जबकि निम्न वर्ग की कम ही छात्रायें (16.00 प्रतिशत) निम्न स्तर की आकांक्षा वाली हैं । कुल मिलाकर, विविध वर्गो के बीच शैक्षणिक आकांक्षा के स्तर का अन्तराल महत्वपूर्ण है ।

अब जाति तथा छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा के बीच सम्बन्धों की ओर दृष्टिपात करना उपयुक्त होगा ।

**सारणी 4.16**

**जाति तथा छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा, प्रतिशत में**

| शैक्षणिक आकांक्षा | जाति | | | |
|---|---|---|---|---|
| | उच्च | मध्यम | निम्न | समग्र प्रतिशत |
| उच्च | 46.76 | 35.65 | 23.88 | 38.33 |
| मध्यम | 24.54 | 31.86 | 37.31 | 29.83 |
| निम्न | 28.70 | 32.49 | 38.81 | 31.84 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | (216) | (317) | (67) | 100.00 |

**काई-वर्ग ($x^2$) मूल्य = 13.71**

**स्वातंत्र्यांश = 4**

**सम्भावना स्तर .01 पर महत्वपूर्ण**

जाति तथा छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा, प्रतिशत में
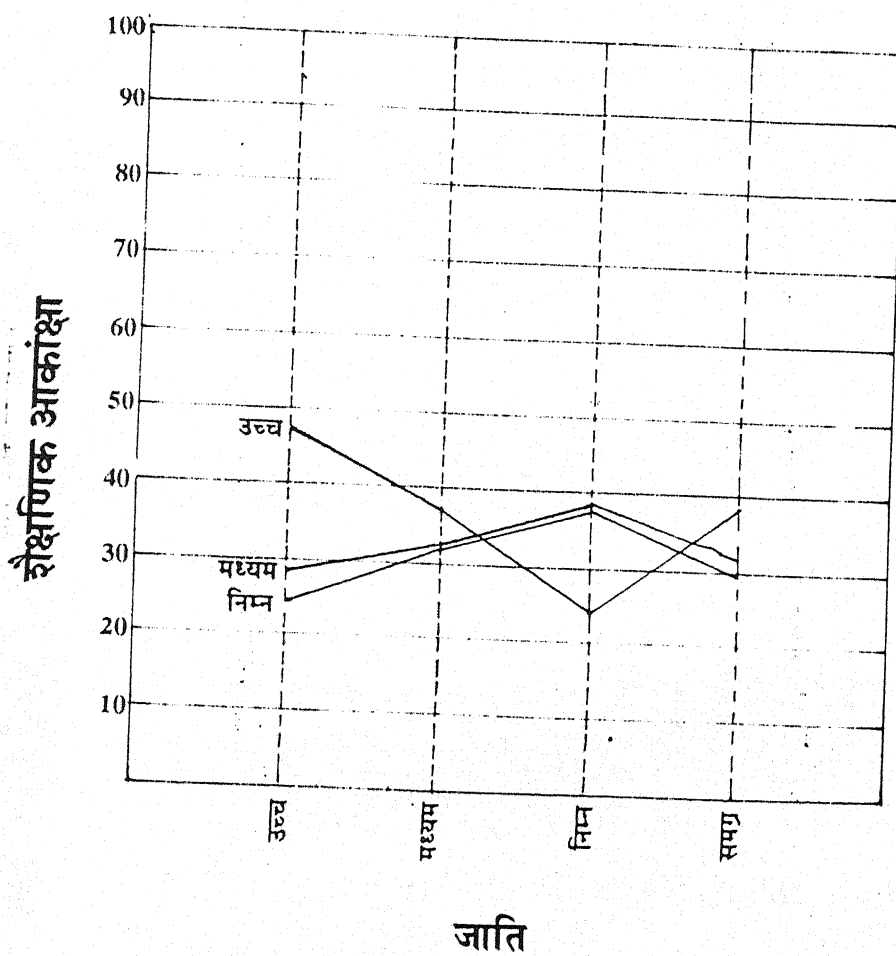
चित्र 4.5

जाति तथा छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा-स्तर के बीच सम्बन्ध (सारणी 4.16 (चित्र 4.5)) देखने से स्पष्ट होता है कि उच्च जाति की छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा मध्यम तथा निम्न जाति की छात्राओं की तुलना में उच्च है (46.76, 35.65, 23.88 प्रतिशत) शैक्षणिक आकांक्षा मध्यम स्तर पर निम्न जाति की छात्राओं का अनुपात क्रमशः उच्च तथा मध्यम जाति की छात्राओं से अधिक है (37.31, 24.54, 31.86 प्रतिशत) । निम्न जाति की छात्राओं का आकांक्षित शिक्षा का स्तर उच्च तथा मध्यम जाति की तुलना में क्रमशः निम्न है (38.81, 28.70, 32.49 प्रतिशत) । विविध जातियों के बीच शैक्षणिक आकांक्षा के स्तर का अन्तराल महत्वपूर्ण है ।

विगत विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक छात्रायें ज्ञान वृद्धि को शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानती हैं । अधिकांश युवतियाँ प्राविधिक-व्यावसायिक शिक्षा के पक्ष में हैं । छात्राओं की बहुसंख्या स्त्रियों को महाविद्यालय/विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा प्रदान करने की पक्षधर है । प्रायः सभी वर्गों तथा जातियों की अधिकांश युवतियाँ स्त्रियों के लिए उच्च स्तर की शैक्षणिक आकांक्षा रखती हैं । युवतियों की दृष्टि में स्त्रियों को शिक्षा देने का प्रमुख उद्देश्य उन्हें आत्म निर्भर बनाना है । अधिकांश छात्रायें सह शिक्षा की पक्षधर हैं जो कि उनके दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन का परिचायक है । युवतियों की भावी शैक्षणिक योजना आगे पढ़ने की है । अधिकांश छात्राओं की अभिरुचि कला विषयों की ओर है जो कि सम-सामयिक परिस्थितियों में उचित प्रतीत होती है । युवतियों की शैक्षणिक आकांक्षा उच्च तथा निम्न स्तर की है । अधिकांश छात्रायें अनेक कठिनाइयों के आने पर भी अपने संकल्पित शिक्षास्तर को प्राप्त करने के पक्ष में हैं । वर्ग एवं जाति तथा युवतियों की शिक्षा की आकांक्षा के बीच निकट का सम्बन्ध देखने को मिला है ।

अध्याय – पांच

# आर्थिक मूल्य तथा आकांक्षायें

पूर्ववर्ती अध्याय में नगरीय छात्राओं के शैक्षणिक मूल्य एवं आकांक्षाओं का विश्लेषण किया गया । यह देखने में आया है कि नगरीय छात्रायें अपनी भावी शिक्षा के लिये आशान्वित होकर सोचती हैं । यह भी पाया गया कि उनके मस्तिष्क में शिक्षा की एक प्रतिमा है, उनमें उच्च शिक्षा ग्रहण करने की उत्कट अभिलाषा है । वे अपनी शिक्षा के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों को सहन तथा हल करने को तत्पर हैं । छात्रायें स्वयं तो उच्च शिक्षा प्राप्त करना ही चाहती हैं, अपितु वे स्त्रियों को भी शिक्षित देखना चाहती हैं ।

प्रस्तुत अध्याय में छात्राओं के आर्थिक मूल्य और आकांक्षाओं का विश्लेषण किया जायेगा । यहाँ हमारा ध्यान व्यवसाय, आय, तथा सामाजिक गतिशीलता पर केन्द्रित होगा।

आधुनिक समय में शिक्षा और व्यवसाय के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध है । व्यवसाय से आय का निर्धारण होता है, तथा आय और व्यवसाय पर सामाजिक गतिशीलता आश्रित है[1]। व्यवसाय मात्र जीविकोपार्जन का साधन ही नहीं है, बल्कि इससे सामाजिक पद और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है[2]। व्यवसाय राजनीति से भी जुड़ा हुआ है[3]। व्यवसाय जीवन पद्धति तथा वर्ग का निर्धारण करता है[4]। इस प्रकार, जीवन-पद्धति, सामाजिक पद, सत्ता, प्रतिष्ठा आदि की दृष्टि से व्यवसाय समाज और व्यक्ति दोनों के सन्दर्भ में अत्यन्त महत्वपूर्ण है । निम्नवर्ती

---

(1) एल0 टेलर, अकुपेशनल सोशियोलाजी (न्यूयार्क आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1968)

(2) पाल के0 हट्ट, "आकुपेशन्स एण्ड सोशल स्ट्रेटिफिकेशन" सिगमण्ड नोसो तथा विलियम एच फार्म, (सम्पादक), मैन वर्क एण्ड सोसाइटी, ए रीडर इन द सोशियोलाजी आफ आकुपेशन्स (न्यूयार्क: बेसिक बुक्स, 1962).में ।

(3) डब्लू0सी0 हैगस्ट्राम, "दि पावर आफ द पूवर" (डी0ए0 फरमान और अन्य(सम्पादक) पावर्टी इन अमेरिका) ऐन आरबोर, मिशिगन: मिशिगन युनिवर्सिटी प्रेस, 1968) पृष्ठ 329, ऐरिक ओलिन राइट, "द स्टेट्स आफ द पालिटिक्स इन द कान्सेप्ट आफ क्लास स्ट्रक्चर," पालिटिक्स एण्ड सोसाइटी, खण्ड, 11, अंक 3, (1982), पृष्ठ 327-341 ।

(4) फ्रैंक पारकिन, क्लास इनइक्वैलिटी एण्ड पालिटिकल आर्डर (न्यूयार्क: प्रेगर, 1971), पृष्ठ 18 ।

पृष्ठों में छात्राओं के व्यावसायिक मूल्य तथा आकांक्षाओं का विश्लेषण प्रस्तुत है ।

**व्यावसायिक मूल्य :**

व्यावसायिक मूल्यों का विश्लेषण : ॥1॥ आदर्श व्यवसाय, ॥2॥ व्यावसायिक सफलता और ॥3॥ व्यवसाय में प्रवेश के पदों में किया जायेगा ।

**आदर्श व्यवसाय :**

व्यवसायों की प्रतिष्ठा और वरीयता स्थान और काल पर आश्रित होती है । किसी विशिष्ट समाज में आज जो व्यवसाय श्रेष्ठतम समझा जाता है, कालान्तर में उसका स्थान कोई अन्य व्यवसाय ले सकता है[5]। व्यवसाय की प्रतिष्ठा, सांस्कृतिक परिवेश, अभिवांछित प्रशिक्षण, कुशलता, आय आदि पर निर्भर होती है । यहाँ यह जानने की चेष्टा की गयी है कि नगरीय छात्राओं की दृष्टि में "आदर्श व्यवसाय" कौन सा है[6]।

छात्राओं के समक्ष छः व्यवसायों को प्रस्तुत किया गया तथा समस्त व्यवसायों को उनकी वरीयता की दृष्टि से मूल्यांकन करने को कहा गया । सर्वाधिक प्रतिष्ठापूर्ण

---

5- कोयम्बटूर में एक अध्ययन किया गया जिसमें नगरीय प्रतिदर्श ने डाक्टर को पाँचवे स्थान पर तथा ग्रामीण प्रतिदर्श ने चौथे स्थान पर रखा । उदाहरण के लिये देखें: ए0बोयेगमेज और पी0पी0वीराराघवन, स्टेट्स इमेजेज इन चेन्जिंग इण्डिया ॥बम्बई: मानक तलाश, 1967॥ पृष्ठ 160 अन्य स्थान पर अध्ययन किया गया उसमें डाक्टर को प्रथम स्थान पर रखा गया । इसके लिए देखें: एडवार्ड ए0तियाकियान, "दि प्रेस्टिज इवैलुएशन आफ आकुपेशन इन एन अण्डर-डेवलेप्ड कण्ट्री": द फिलीपाइन्स, अमेरिकन जर्नल आफ सोशियोलाजी, खण्ड 6 ॥जनवरी 1958॥, पृष्ठ 390-399, टी0एल0ग्रीन और चित्राविक्रमासूर्या, द वौकैशनल एटिच्यूड्स आफ सीलोन ग्रैजुएट टीचर्स," यूनिवर्सिटी आफ सीलोन रिव्यू, खण्ड 11 ॥1953॥, पृष्ठ 10-16, चार्ल्स इ रामसे और रावर्ट जे स्मिथ, ॥जेपनीज एण्ड अमेरिकन परसेपसन्स आफ आकुपेशन्स, "अमेरिकन जर्नल आफ सोशियालाजी खण्ड 65, अंक 5 ॥मार्च 1960॥, पृष्ठ 472-485 ।

6- व्यवसायों के मूल्यांकन के विशेष विवरण के लिये, देखें: डेविट ओल्डमैन तथा रेमॉग इलसले, "मीजरिंग द स्टेट्स आफ आकुपेशन्स," सोशियोलाजिकल रिव्यू, खण्ड 14 ॥मार्च 1966॥, पृष्ठ 53-72 ।

व्यवसाय को । अंक और सबसे कम प्रतिष्ठापर्ण व्यवसाय को 6 अंक देना था । इस प्रकार व्यवसायों का मूल्यांकन (सारणी 5.। (चित्र 5.।)) में प्रस्तुत है । नगरीय छात्राओं की दृष्टि में सर्वोत्तम व्यवसाय अध्यापन है, क्योंकि महिला होने के नाते और सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से भी उनका इस ओर झुकाव स्वाभाविक प्रतीत होता है । इसके पश्चात, दूसरा स्थान उच्च प्रशासनिक सेवाओं को दिया है क्योंकि इससे समाज में प्रतिष्ठा व सम्मान प्राप्त होता है । छात्राओं ने चिकित्सा को तीसरे स्थान पर तथा इन्जीनियरिंग को चौथे स्थान पर रखा है । अन्य प्रशासनिक सेवाओं को पाँचवां स्थान दिया गया है । निजी व्यवसाय को सबसे निम्न स्थान प्राप्त हुआ ।

## सारणी 5.।

### छात्राओं की दृष्टि में व्यवसायों की कोटि ।

| | व्यवसाय | व्यवसायों की कोटि |
|---|---|---|
| ।- | अध्यापन | । |
| 2- | उच्च प्रशासनिक सेवायें (आई0ए0एस0, आई0पी0एस0) | 2 |
| 3- | चिकित्सा | 3 |
| 4- | इन्जीनियरिंग | 4 |
| 5- | अन्य प्रशासनिक सेवायें | 5 |
| 6- | निजी व्यवसाय | 6 |

उत्तरदाताओं की संख्या (600)

इस प्रकार छात्राओं की दृष्टि में अध्यापन, उच्च प्रशासनिक सेवायें तथा चिकित्सा व इन्जीनियरिंग महत्वपूर्ण व्यवसाय हैं ।

## छात्राओं की दृष्टि में व्यवसायों की कोटि

अध्यापन — 1

उच्च प्रशासनिक सेवाएं (आई.ए.एस. : आई.पी.एस.) — 2

चिकित्सा — 3

इन्जीनियरिंग — 4

अन्य प्रशासनिक सेवाएं — 5

निजी व्यवसाय — 6
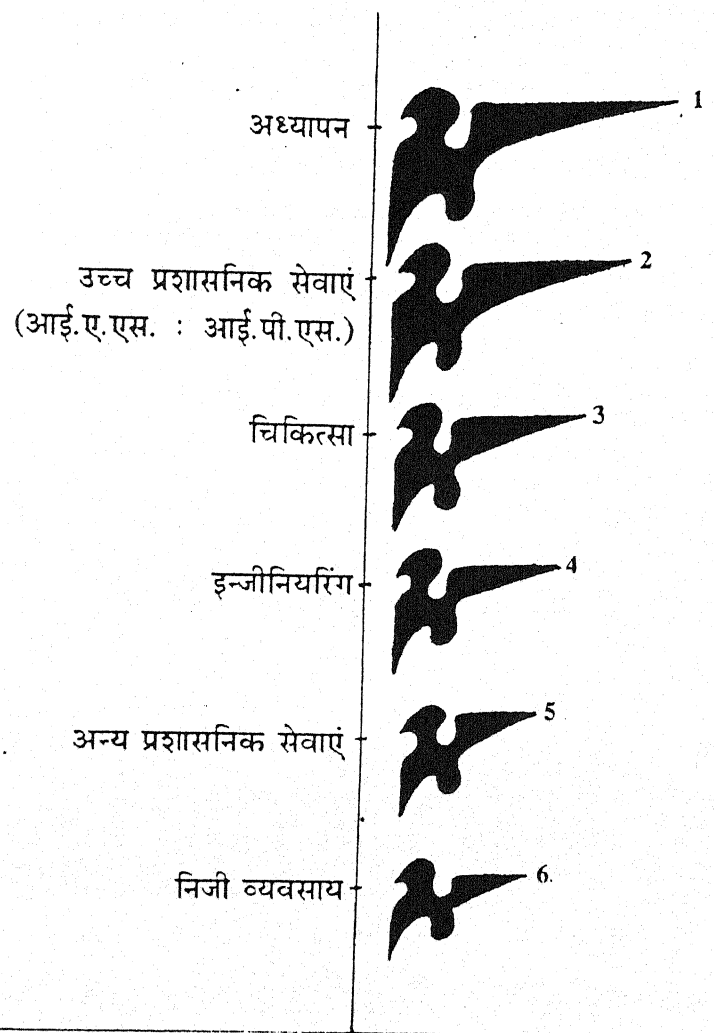
चित्र 5.1

जिन आधारों पर छात्राओं ने किसी व्यवसाय को सर्वोत्तम बतलाया है उसका विवरण सारणी 5.2 में देखा जा सकता है । अधिकांश छात्राओं ने आदर्श व्यवसाय उस व्यवसाय को माना है, जो प्रतिष्ठा प्रदान करता है । छात्राओं की दृष्टि में आदर्श व्यवसाय अध्यापन कार्य है । सम्भवतः इसी कारण से छात्राओं ने पी-एच0डी0 व एम0फिल डिग्री प्राप्त करने की आकांक्षा अभिव्यक्त की है । छात्राओं के अनुसार आदर्श व्यवसाय की दूसरी विशेषता है विकास का अवसर प्रदान करना और धन प्राप्त करना । इसकी तुलना में व्यक्तित्व-विकास का अवसर प्राप्त करने में सहायक होना अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण विशेषता मानी है । अतः छात्रायें उन व्यवसायों को आदर्श व्यवसाय मानती हैं जो प्रतिष्ठा तथा विकास के अवसर के साथ-साथ धन प्राप्त करने में सहायक हो ।

**सारणी 5.2**

**छात्राओं की दृष्टि में आदर्श व्यवसाय की विशेषता, प्रतिशत में ।**

| आदर्श व्यवसाय की विशेषता | छात्रायें |
|---|---|
| 1- प्रतिष्ठा प्रदान करना | 60.33 |
| 2- विकास के लिये अवसर | 20.50 |
| 3- धन प्राप्त करने के अवसर | 11.84 |
| 4- व्यक्तित्व के विकास का अवसर | 7.33 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

आदर्श व्यवसाय के प्रति छात्राओं का दृष्टिकोण जानने के पश्चात क्रमशः व्यवसायों में प्रवेश और सफलता के आधार पर विचार करना समीचीन होगा । प्रथमतः व्यवसाय के प्रवेश के आधारों को देखते हैं और फिर सफलता के आधारों को देखेंगे ।

**व्यवसाय में प्रवेश का आधार :**

छात्राओं से पूँछा गया- "आज के व्यवसायों में प्रवेश के क्या आधार उचित हैं ? जैसा कि (सारणी 5.3(चित्र 5.2)) से स्पष्ट है । अधिकांश छात्राओं ने व्यवसाय प्राप्त करने का महत्वपूर्ण आधार शैक्षणिक योग्यता (66.34 प्रतिशत) को स्वीकार किया है ।

**सारणी 5.3**

**छात्राओं के अनुसार व्यवसाय में प्रवेश का आधार, प्रतिशत में ।**

| व्यवसाय में प्रवेश का आधार | छात्रायें |
|---|---|
| 1- शैक्षणिक योग्यता | 66.34 |
| 2- प्रतियोगिता | 31.33 |
| 3- वैयक्तिक प्रभाव का प्रयोग | 1.33 |
| 4- सामाजिक-आर्थिक स्थिति | 0.50 |
| 5- जातीय आधार | 0.50 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

उनके अनुसार दूसरा महत्वपूर्ण आधार प्रतियोगिता (31.33 प्रतिशत) है । इसके विपरीत, कम ही छात्रायें वैयक्तिक प्रभाव (1.33 प्रतिशत), सामाजिक-आर्थिक स्थिति (0.50 प्रतिशत) तथा जाति (0.50 प्रतिशत) को व्यवसाय में प्रवेश का आधार मानती हैं ।

सारांशतः, नगरीय क्षेत्रों की छात्राओं के अनुसार व्यवसाय में प्रवेश का प्रमुख आधार शैक्षणिक योग्यता तथा प्रतियोगिता है । उन्होंने जाति, वैयक्तिक प्रभाव तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति को बहुत कम महत्व प्रदान किया है ।

छात्राओं के अनुसार व्यवसाय में प्रवेश का आधार, प्रतिशत में
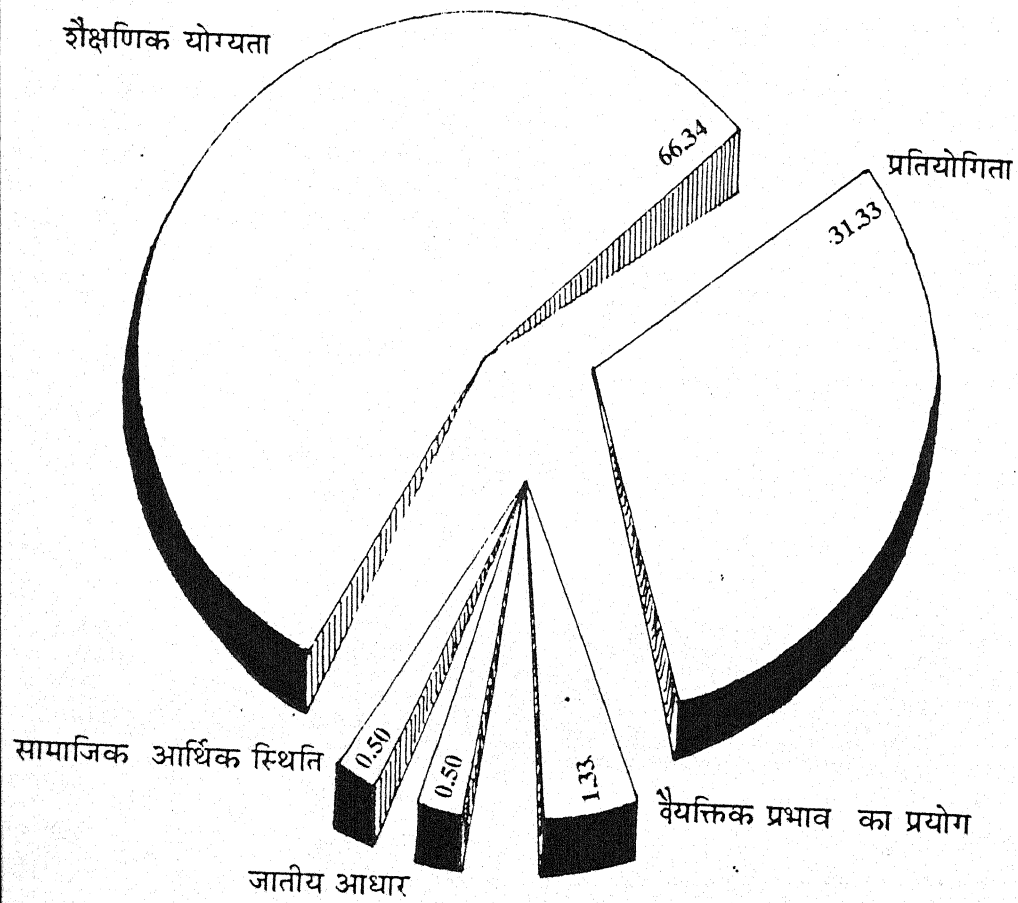
चित्र 5.2

## व्यवसाय में सफलता का आधार :

गुणों एवं विशेषताओं के प्रति युवा की स्थिति जो व्यवसाय में सफलता के लिये योगदान देती है वह उसके द्वारा ग्रहण किये गये मूल्यों का प्रतिबिम्ब होती है । अब यह देखना उपयुक्त होगा कि छात्रायें किसी व्यवसाय में सफलता का आधार क्या मानती हैं ? सारणी 5.4 से ज्ञात होता है कि अधिकांश छात्रायें व्यवसाय की सफलता के लिये अच्छे स्वास्थ्य को (35.8 प्रतिशत) आवश्यक मानती हैं । इसके साथ ही अच्छी पारिवारिक पृष्ठभूमि (30.6 प्रतिशत) और सद्व्यवहार (22.9 प्रतिशत) भी व्यवसाय में सफलता का आधार हो सकते हैं । उनका विचार है कि ईमानदारी, सच्चाई और कर्तव्य के प्रति निष्ठा ही व्यवसाय की सफलता का प्रमुख आधार है ।

इसकी तुलना में छात्राओं ने भाग्य (7.1 प्रतिशत) तथा चरित्र (3.6 प्रतिशत) को अपेक्षाकृत कम महत्व प्रदान किया है ।

### सारणी 5.4

व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने का आधार प्रतिशत में ।

| | व्यवसाय में सफलता का आधार | छात्रायें |
|---|---|---|
| 1- | स्वास्थ्य | 35.8 |
| 2- | पारिवारिक पृष्ठभूमि | 30.6 |
| 3- | सद्व्यवहार | 22.9 |
| 4- | भाग्य | 7.1 |
| 5- | चरित्र | 3.6 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | | 100.00 |

## व्यावसायिक आकांक्षा :

छात्राओं के व्यावसायिक मूल्यों का अनेक पहलुओं, जैसे आदर्श व्यवसाय, व्यवसाय में प्रवेश और व्यवसाय में सफलता के आधार पर विश्लेषण किया गया । अनुवर्ती विवरण से हम छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा का विश्लेषण करेंगे ।

<u>व्यावसायिक चुनाव :</u>

जब छात्रायें शिक्षा के माध्यमिक स्तर पर पहुंचती हैं, तब वह अपने भविष्य के बारे में गम्भीरता से सोचना प्रारम्भ कर देती हैं । आगे की उच्च शिक्षा ही उनके व्यावसायिक चुनाव को निर्देशित करती है । इसी तारतम्य में छात्राओं से पूँछा गया- " आप अपनी शिक्षा पूर्ण करने के बाद किस व्यवसाय में जाना पसन्द करेंगी "? (सारणी 5.5)(चित्र 5.3) अधिकांश छात्रायें अध्यापन (50.17 प्रतिशत) के व्यवसाय में जाना पसन्द करती हैं । इसके पश्चात, दूसरा स्थान प्रशासनिक सेवा का है, जिसमें 23.67 प्रतिशत छात्रायें जाना चाहेंगी । 14.00 प्रतिशत छात्राओं ने बैंक, रेलवे आदि की नौकरी में रूचि प्रदर्शित की है। इस प्रकार छात्राओं का 87.84 प्रतिशत भाग अध्यापन, प्रशासनिक सेवाओं तथा अन्य नौकरियों में जाना चाहता है । इसकी तुलना में, चिकित्सा, इन्जीनियरिंग तथा वकालत के पेशे में 5.83 प्रतिशत, निजी व्यवसाय 4.83 प्रतिशत, टी0वी0 उद्घोषिका तथा विमान परिचारिका में 0.83 प्रतिशत, समाज सेवा में 0.50 प्रतिशत तथा नर्स, टेलीफोन आपरेटर आदि में मात्र 0.17 प्रतिशत छात्रायें जाना चाहती हैं ।

**सारणी 5.5**

**छात्राओं द्वारा व्यावसायिक चुनाव, प्रतिशत में ।**

| | व्यवसाय | छात्रायें |
|---|---|---|
| 1- | अध्यापन | 50.17 |
| 2- | आई0ए0एस0,न्यायिक सेवा,पी0सी0एस0 | 23.67 |
| 3- | बैंक, रेलवे, क्लर्क, स्टेनो | 14.00 |
| 4- | डाक्टर, इन्जीनियर, वकील | 5.83 |
| 5- | निजी व्यवसाय | 4.83 |
| 6- | टी0वी0उद्घोषिका, विमान परिचारिका | 0.83 |
| 7- | समाज सेवा | 0.50 |
| 8- | नर्स, टेलीफोन आपरेटर, पुलिस | 0.17 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | | 100.00 |

## छात्राओं द्वारा व्यवसायिक चुनाव (प्रतिशत में)
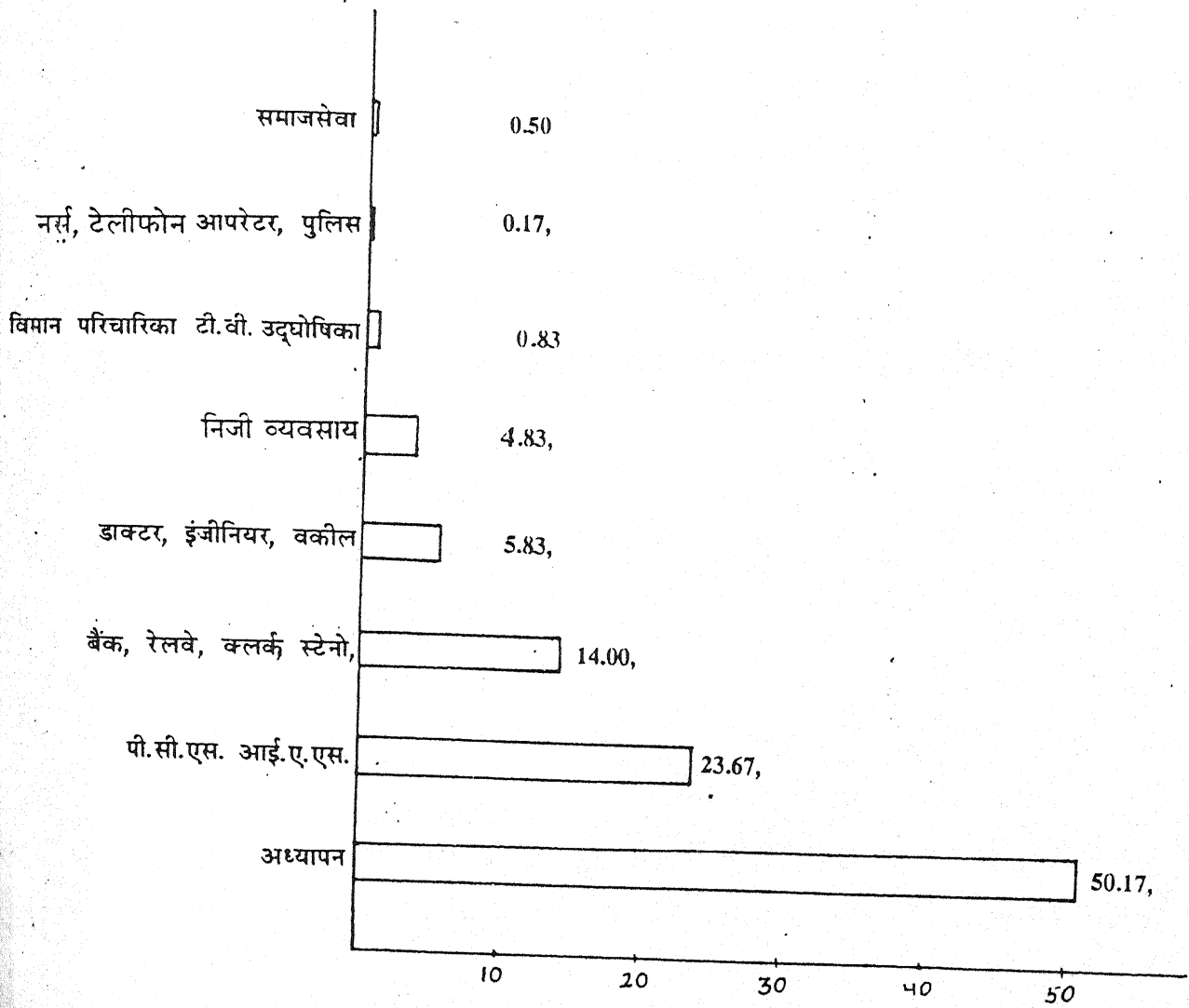
चित्र 5.3

उपयोगिता वादी दृष्टि से छात्राओं द्वारा चयनित व्यवसायों को चार व्यापक श्रेणियों में रखा जा सकता है ।

1- अभिजात व्यवसाय

2- प्राविधिक व्यवसाय

3- स्वतन्त्र व्यवसाय तथा

4- समाज सेवा

इस आधार पर यदि व्यवसायों को देखा जाये तो बड़ा ही रोचक परिणाम निकलता है । सारणी 5.6 से स्पष्ट है कि तीन-चौथाई से भी अधिक छात्रायें अभिजात व्यवसायों में जाना चाहती हैं ।

**सारणी 5.6**

**छात्राओं द्वारा चयनित व्यवसायों का वर्गीकरण, प्रतिशत में ।**

| व्यावसायिक श्रेणियाँ | छात्रायें |
|---|---|
| **1- अभिजात व्यवसाय** | 88.84 |
| (क) अध्यापन | 50.17 |
| (ख) राजकीय तथा अन्य सेवायें | 38.67 |
| **2- स्वतन्त्र व्यवसाय** (निजी व्यवसाय) | 4.83 |
| **3- प्राविधिक व्यवसाय** | 5.83 |
| (क) चिकित्सा | 2.33 |
| (ख) इन्जीनियरिंग | 2.25 |
| (ग) वकालत | 1.25 |
| **4- समाज सेवा** | 0.50 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

उक्त सारणी के तथ्य देखने से स्पष्ट होता है कि अभिजात व्यवसायों में (88.84 प्रतिशत) छात्रायें जाना चाहती हैं । स्वतन्त्र व्यवसाय (4.83 प्रतिशत) की अपेक्षा प्राविधिक व्यवसायों में (5.83 प्रतिशत) छात्राओं के जाने का अनुपात कुछ अधिक है । सबसे कम छात्राओं ने समाज सेवा (0.50 प्रतिशत) के पक्ष में अपना मत व्यक्त किया है । छात्राओं से आगे पूँछा गया- "आपने जिन व्यवसायों को चुना है उनको चुनने का कारण क्या है ? छात्राओं ने व्यवसाय चयन के चार प्रमुख कारण बतलाये हैं ।

**सारणी 5.7**

**छात्राओं की दृष्टि में व्यवसायों के चुनाव के कारण, प्रतिशत में ।**

| व्यवसाय चुनने का कारण | छात्रायें |
|---|---|
| 1- कार्य के प्रति स्वयं की रुचि | 38.83 |
| 2- उच्च स्तर, अच्छी आय और प्रतिष्ठा | 30.50 |
| 3- कार्य की सरलता तथा सुलभता | 11.17 |
| 4- सुरक्षा | 10.33 |
| 5- स्वतन्त्रता | 5.33 |
| 6- समाज सेवा | 3.83 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

(1) कार्य के प्रति स्वयं की रुचि (38.83 प्रतिशत), (2) उच्च स्तर, अच्छी आय तथा प्रतिष्ठा (30.50 प्रतिशत), (3) कार्य की सरलता और सुलभता (11.17 प्रतिशत) और महिला होने के नाते (4) सुरक्षात्मक दृष्टिकोण (10.33 प्रतिशत) भी एक प्रमुख कारण है । इनकी तुलना में स्वतन्त्रता तथा समाज सेवा क्रमशः 5.33 प्रतिशत व 3.83 प्रतिशत को अपेक्षाकृत कम महत्व दिया गया है ।

अब यह देखना होगा कि छात्रायें व्यावसायिक आकांक्षा को कितनी गम्भीरता से लेती हैं । उनके सामने आयी बाधाओं के प्रति उनका क्या रवैया रहता है, इसके लिये उनके समक्ष कतिपय कठिनाइयाँ रखीं गयीं और पूँछा गया कि क्या वे इन कठिनाइयों का

सामना करने के लिये कटिबद्ध हैं ? सारणी 5.8 से स्पष्ट होता है कि छात्राओं का अधिकांश भाग व्यवधानों के आने पर भी आकांक्षित व्यवसायों को प्राप्त करने के लिये उद्यत है ।

अधिकांश छात्रायें निवास स्थान से दूर जाने तथा परिवार वालों की अवहेलना करने के लिये भी तैयार हैं ।

**सारणी 5.8**

छात्राओं के व्यवसाय प्राप्त करने में आने वाली कठिनाइयों का सामना करने की कटिबद्धता, प्रतिशत में

| | कठिनाइयाँ | छात्रायें |
|---|---|---|
| 1- | निवास स्थान से दूर जाना पड़े | 86.83 |
| 2- | परिवार वाले आकांक्षित व्यवसाय को न चाहते हों | 11.50 |
| 3- | आर्थिक कठिनाई की दशा में | 1.67 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | | 100.00 |

निवास स्थान से दूर रहकर (86.83 प्रतिशत) तथा परिवार वालों के न चाहने पर भी (11.50 प्रतिशत) छात्रायें आकांक्षित व्यवसाय को प्राप्त करने हेतु कटिबद्ध हैं। आर्थिक कठिनाइयों के आने पर भी (1.67 प्रतिशत) छात्रायें अपना व्यवसाय प्राप्त करने के लिये तैयार हैं ।

छात्राओं का एक महत्वपूर्ण भाग अपनी व्यावसायिक आकांक्षा को गम्भीरता से नहीं लेता क्योंकि वे अपने परिवार वालों की सलाह की अवहेलना करने, आर्थिक संकट तथा परिवार से दूर रह कर व्यवसाय को नहीं प्राप्त करना चाहती हैं ।

छात्राओं से आकांक्षित व्यवसाय के प्रेरणा स्रोत का पता किया गया । इस आशय से छात्राओं से पूँछा गया- "इस व्यवसाय में जाने की प्रेरणा आपको कहाँ से प्राप्त हुई?" छात्राओं के प्रति उत्तर के आधार पर व्यावसायिक आकांक्षा स्रोतों को दो भागों में बाँटा जा

सकता है- आत्म तथा अन्य । अधिकांश छात्राओं ने स्वयं ही आकांक्षित व्यवसाय में जाने का उद्देश्य बनाया है ।

सारणी 5.9 (चित्र 5.4) के तथ्यों को देखने से पता चलता है कि-

**सारणी 5.9**

**छात्राओं के व्यावसायिक प्रेरणा के स्रोत, प्रतिशत में ।**

| | प्रेरणा स्रोत | छात्रायें |
|---|---|---|
| 1- | व्यक्तिगत निर्णय | 54.00 |
| 2- | पारिवारिक निर्णय | 30.33 |
| 3- | गुरुजनों का प्रभाव | 8.17 |
| 4- | मित्र मण्डली का प्रभाव | 4.83 |
| 5- | सम्बन्धियों का प्रभाव | 1.67 |
| 6- | अन्य (समाचार पत्र आदि) | 1.00 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | | 100.00 |

अधिकांश छात्रायें स्वयं ही आकांक्षित व्यवसाय में जाने को तत्पर हैं (54.00 प्रतिशत) । तत्पश्चात (30.33 प्रतिशत) छात्राओं के ऊपर अपने परिवार का प्रभाव परिलक्षित होता है । नगरीय परिवेश में छात्रायें (8.17 प्रतिशत) अपने गुरूजनों से तथा मित्र मण्डली से (4.83 प्रतिशत) प्रभावित हैं । इसके अनुपात में, सम्बन्धियों तथा समाचार पत्र आदि से कम ही छात्रायें प्रभावित हैं ।

उक्त तथ्यों से ऐसा प्रतिभासित होता है कि छात्राओं का प्रेरणा स्रोत उनका समीपस्थ परिवेश है । संचार-साधनों तथा अन्य बाहरी साधनों का प्रभाव उन पर अपेक्षाकृत बहुत कम है । छात्राओं की निम्न व्यावसायिक आकांक्षा का यह भी एक महत्वपूर्ण कारण हो सकता है ।

## छात्राओं के व्यावसायिक प्रेरणा के स्रोत, प्रतिशत में
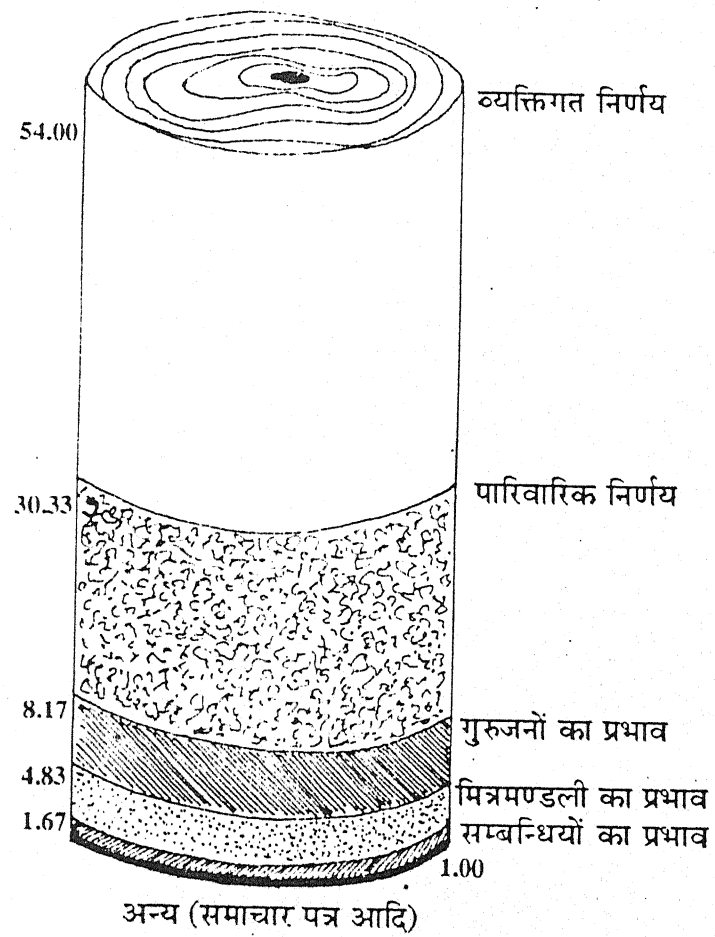
चित्र 5.4

**भौतिक सामग्री परिग्रह की आकांक्षा:**

भौतिक सामग्री परिग्रह का आर्थिक आकांक्षा से सीधा सम्बन्ध है । यों भी युवावस्था में भौतिक सामग्री के परिग्रह की भावना प्रबल होती है । इस दृष्टि से छात्राओं की भौतिक सामग्री परिग्रह से सम्बन्धित आकांक्षा का अध्ययन किया गया । सारणी 5.10 (चित्र 5.5) में प्रस्तुत तथ्यों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अधिकांश नगरीय छात्राओं ने स्कूटर (36.00 प्रतिशत), फ्रिज (21.17 प्रतिशत), वाशिंग मशीन (16.33 प्रतिशत) तथा मोटर कार (15.17 प्रतिशत) प्राप्त करने की आकांक्षा व्यक्त की है । कम ही छात्राओं ने टी0वी0, वी0सी0आर0 (7.33 प्रतिशत) तथा टेपरिकार्डर (4.00 प्रतिशत) रखने की इच्छा अभिव्यक्त की है ।

**सारणी 5.10**

**छात्राओं की भौतिक सामग्री-परिग्रह की आकांक्षा, प्रतिशत में ।**

| | भौतिक सामग्री | छात्रायें |
|---|---|---|
| 1- | स्कूटर | 36.00 |
| 2- | फ्रिज | 21.17 |
| 3- | वाशिंग मशीन | 16.33 |
| 4- | मोटर कार | 15.17 |
| 5- | टी0वी0, वी0सी0आर0 | 7.33 |
| 6- | टेपरिकार्डर, रेडियो | 4.00 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | | 100.00 |

छात्राओं द्वारा अभिकांक्षित भौतिक सामग्री नगरीय परिवेश के लिये उपयोगी और मनोरंजनार्थ तो हैं ही, साथ में सामाजिक प्रतिष्ठा को भी बढ़ाने में सहायक है ।

## छात्राओं की भौतिक सामग्री–परिग्रह की आकांक्षा (प्रतिशत में)
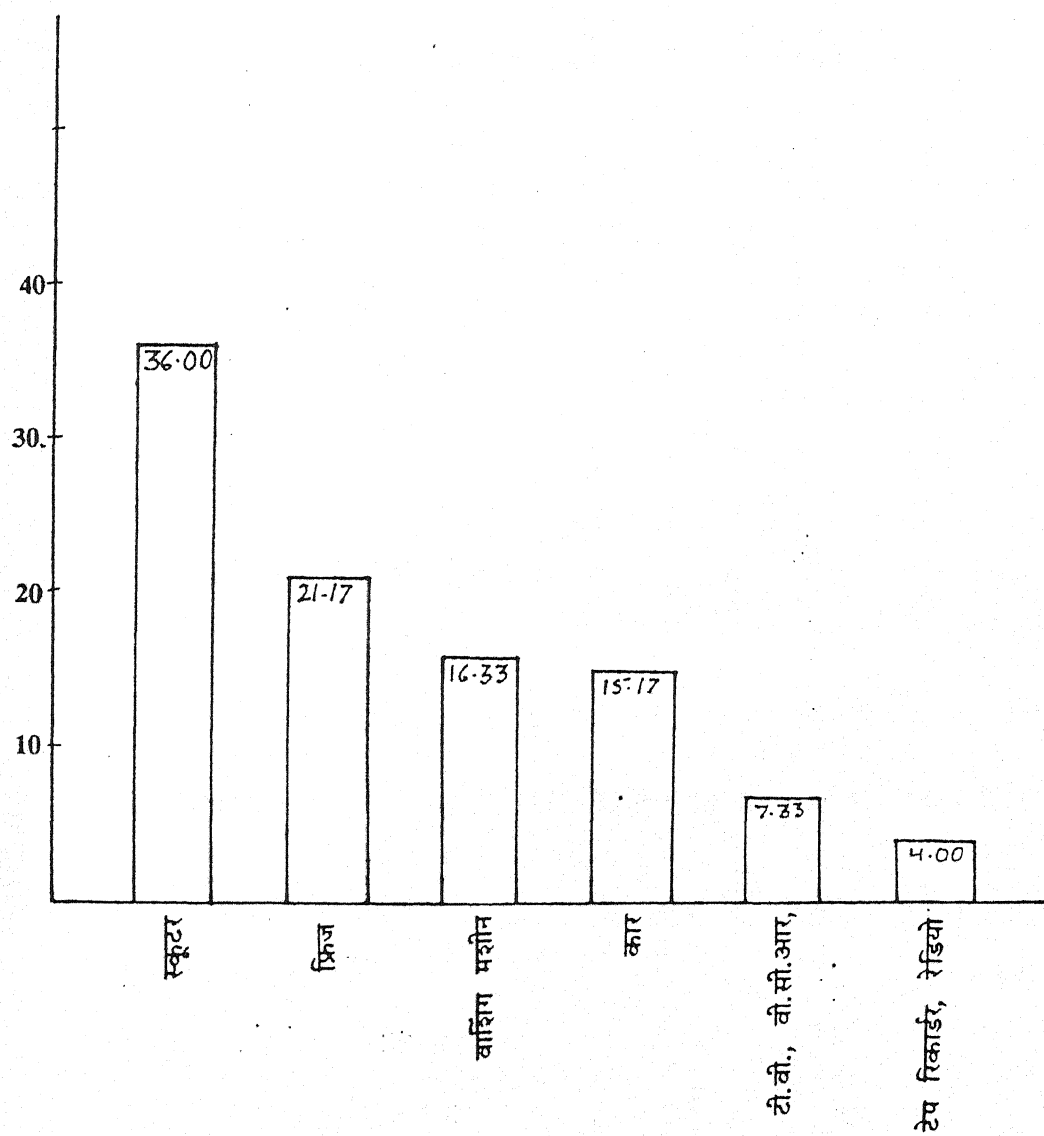
चित्र 5.5

इसी तारतम्य में, यह भी पता किया गया कि छात्रायें उक्त भौतिक सामग्री को क्यों प्राप्त करना चाहती हैं । छात्राओं द्वारा अभिवयक्त भौतिक सामग्री-परिगृह की आकांक्षा के तीन प्रमुख कारण हैं- प्रतिष्ठात्मक (51.17 प्रतिशत), उपयोगी (37.50 प्रतिशत) तथा मनोरंजनात्मक (11.33 प्रतिशत) है ।

**सारणी 5.11**

**छात्राओं की भौतिक सामग्री-परिग्रह में सन्निहित भावना, प्रतिशत में ।**

| | सन्निहित भावना | छात्रायें |
|---|---|---|
| 1- | प्रतिष्ठा सूचक | 51.17 |
| 2- | उपयोगी | 37.50 |
| 3- | मनोरंजन | 11.33 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | | 100.00 |

इससे स्पष्ट है कि नगरीय छात्रायें प्रतिष्ठात्मक तथा उपयोगी वस्तुओं को अधिकाधिक रखना चाहती हैं, मनोरंजन अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण लक्ष्य है ।

सारणी 5.12 से सामाजिक वर्ग तथा व्यावसायिक आकांक्षा के बीच सह सम्बन्धों का पता चलता है ।

**सारणी 5.12**

**सामाजिक वर्ग तथा छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा, प्रतिशत में ।**

| व्यावसायिक आकांक्षा | सामाजिक वर्ग | | | |
|---|---|---|---|---|
| | उच्च | मध्यम | निम्न | समग्रप्रतिशत |
| अभिजात व्यवसाय | 88.40 | 90.82 | 84.80 | 88.84 |
| प्राविधिक व्यवसाय | 4.42 | 7.48 | 4.00 | 5.83 |
| स्वतन्त्र व्यवसाय | 7.18 | 0.68 | 11.20 | 4.83 |
| समाज सेवा | - | 1.02 | - | 0.50 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | (181) | (294) | (125) | 100.00 |

**काई-वर्ग ( $x^2$ ) मूल्य = 29.25**

**स्वातंत्र्यांश = 6**

**सम्भावना स्तर .01 पर महत्वपूर्ण**

प्राविधिक व्यवसाय के चुनाव में उच्च तथा निम्न वर्ग की छात्राओं की तुलना में मध्यम वर्ग की छात्राओं (7.48 प्रतिशत) की संख्या अधिक है । यों प्रत्येक सामाजिक वर्ग की अधिकांश छात्राओं ने अभिजात व्यवसाय को चुनने में अपनी रुचि प्रकट की है, परन्तु मध्यम वर्ग की (90.82 प्रतिशत) छात्राओं उच्च (88.40 प्रतिशत) तथा निम्न वर्ग (84.80 प्रतिशत) की तुलना में इन व्यवसायों की ओर अधिक रुचि प्रदर्शित की है । स्वतन्त्र व्यवसाय तथा समाज सेवा की ओर सभी वर्गों की छात्राओं का आकर्षण बहुत ही कम परिलक्षित होता है । फिर भी, स्वतन्त्र व्यवसाय की ओर मध्यम वर्ग (0.68 प्रतिशत) की छात्राओं की तुलना में निम्न (11.20 प्रतिशत) तथा उच्च वर्ग (7.18 प्रतिशत) की छात्राओं का झुकाव बहुत अधिक है । समाज सेवा के क्षेत्र में मात्र मध्यम वर्ग की कुछ ही छात्रायें (1.02 प्रतिशत) जाने के लिये उत्सुक हैं । उच्च व्यवसायों के चयन में विविध सामाजिक वर्गों के बीच पर्याप्त अन्तर है । सामाजिक वर्ग के साथ व्यावसायिक आकांक्षा का सापेक्ष सम्बन्ध दिखता है ।

जाति तथा छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा का विवरण सारणी 5.13 में प्रस्तुत है । सारणी से स्पष्ट है कि निम्न जातियों ( 1.49 प्रतिशत ) की तुलना में उच्च

**सारणी 5.13**

**जाति तथा छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा, प्रतिशत में ।**

| व्यावसायिक आकांक्षा | जाति | | | |
|---|---|---|---|---|
| | उच्च | मध्यम | निम्न | समग्र प्रतिशत |
| अभिजात व्यवसाय | 91.20 | 88.01 | 85.08 | 88.84 |
| प्राविधिक व्यवसाय | 6.48 | 6.31 | 1.49 | 5.83 |
| स्वतन्त्र व्यवसाय | 2.32 | 4.73 | 13.43 | 4.83 |
| समाज सेवा | -- | 0.95 | -- | 0.50 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | (216) | (317) | (67) | 100.00 |

**काई-वर्ग ($x^2$) मूल्य = 18.54**

**स्वातंत्र्यांश = 6**

**सम्भावना स्तर .01 पर महत्वपूर्ण**

(6.48 प्रतिशत) एवं मध्यम (6.31 प्रतिशत) जाति की छात्राओं में प्राविधिक व्यवसाय के प्रति आकांक्षा अधिक है । उल्लेखनीय है कि प्रत्येक जाति की सर्वाधिक छात्राओं में अभिजात व्यवसाय में जाने की रुचि प्रबल है, लेकिन मध्यम (88.01 प्रतिशत) तथा निम्न (85.08 प्रतिशत) जाति की छात्राओं की तुलना में उच्च जाति (91.20 प्रतिशत) की छात्राओं ने इस ओर अपेक्षाकृत अधिक झुकाव प्रदर्शित किया है । इसके विपरीत, उच्च (2.32 प्रतिशत) तथा मध्यम (4.73 प्रतिशत) जाति की छात्राओं की अपेक्षा निम्न जाति (13.42 प्रतिशत) की छात्राओं का आकर्षण स्वतन्त्र व्यवसायों की ओर अधिक है । समाज सेवा के व्यवसाय की ओर छात्राओं का झुकाव बहुत ही कम है । मध्यम जाति की कुछ ही (0.95 प्रतिशत) छात्राओं ने इस व्यवसाय में जाने की अपनी इच्छा व्यक्त की है ।

इस प्रकार, जाति के आधार पर छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा में पर्याप्त अन्तर परिलक्षित होता है ।

**आय की आकांक्षा :**

व्यवसाय तथा भौतिक सामग्री-परिग्रह की आकांक्षा के विश्लेषण के पश्चात छात्राओं की आय की आकांक्षा का चित्रण प्रस्तुत करना उपयुक्त होगा ।

उल्लेखनीय है कि आय केवल आजीविका का साधन ही नहीं, वरन् शक्ति की द्योतक भी है[7]। जीवन पद्धति व्यक्ति की आय पर आधारित है ।

नगरीय परिवेश की छात्रायें उच्च मासिक आय की आकांक्षा रखती हैं । सारणी 5.14 में छात्राओं की आकांक्षित आय विषयक तथ्य प्रस्तुत हैं ।

---

(7) हैगस्ट्राम, डब्लू0सी0, पूर्वोक्त ।

अधिकांश छात्राओं (49.83 प्रतिशत) ने रू0 1001-2000 प्रतिमाह आय की आकांक्षा व्यक्त की है । इसी तारतम्य में, पर्याप्त संख्या में (46.17 प्रतिशत) छात्राओं ने 2000 रू0 से अधिक मासिक आय की आकांक्षा की है । इसके विपरीत, कम ही (4.00 प्रतिशत) छात्रायें रू0 1000.00 तथा उससे कम की मासिक आय चाहती हैं ।

**सारणी 5.14**

**छात्राओं की आकांक्षित मासिक आय, प्रतिशत में ।**

| आय-कोष्ठक | छात्रायें |
|---|---|
| रू0 1000-और कम | 4.00 |
| रू0 1001 - 2000 | 49.83 |
| रू0 2001-और अधिक | 46.17 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश छात्राओं की मासिक आय की आकांक्षा का स्तर उच्च तथा मध्यम स्तर का है ।

सारणी 5.15 में सामाजिक वर्ग तथा आकांक्षित आय के बीच सह-सम्बन्धों को देखा जा सकता है ।

## सारणी 5.15

**सामाजिक वर्ग, तथा छात्राओं की आकांक्षित आय, प्रतिशत में ।**

| आकांक्षित आय | सामाजिक वर्ग | | | |
|---|---|---|---|---|
| | उच्च | मध्यम | निम्न | समग्र प्रतिशत |
| रू0 1000-और कम | 1.10 | 1.36 | 14.40 | 4.00 |
| रू0 1001 - 2000 | 61.88 | 48.64 | 35.20 | 49.83 |
| रू0 2001-और अधिक | 37.02 | 50.00 | 50.40 | 46.17 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | (181) | (294) | (125) | 100.00 |

**काई-वर्ग ( $x^2$ ) मूल्य = 58.14**

**स्वातंत्र्यांश = 4**

**सम्भावना स्तर .01 पर महत्वपूर्ण।**

उच्च (1.10 प्रतिशत) तथा मध्यम (1.36 प्रतिशत) वर्ग की छात्राओं की तुलना में निम्न सामाजिक वर्ग (14.40 प्रतिशत) की अधिक छात्राओं ने रू0 1000 और कम प्रतिमाह आय की इच्छा व्यक्त की है । इसके विपरीत, मध्यम वर्ग (48.64 प्रतिशत) और निम्न वर्ग (35.20 प्रतिशत) की छात्राओं की तुलना में उच्च वर्ग की (61.88 प्रतिशत) छात्राओं ने रू0 1001 - 2000 प्रतिमाह आय की अपेक्षा की है ।

सबसे रोचक परिणाम यह है कि उच्च वर्ग (37.02 प्रतिशत) की अपेक्षा मध्यम वर्ग (50.00 प्रतिशत) की अधिक छात्राओं तथा मध्यम वर्ग की तुलना में निम्न वर्ग (50.40 प्रतिशत) की अधिक छात्राओं ने प्रतिमाह रू0 2000.00 से अधिक आय की

आकांक्षा व्यक्त की है । इससे स्पष्ट होता है कि निम्न एवं मध्यम वर्ग की छात्राओं में उच्च वर्ग तक पहुंचने की तीब्र आकांक्षा है । यह सम्भवतः तीब्र गति से हो रहे सामाजिक परिवर्तनों का द्योतक है ।

जाति तथा आकांक्षित मासिक आय के बीच सम्बन्धों को सारणी 5.16 में देखा जा सकता है । मध्यम (40.69 प्रतिशत) तथा निम्न जाति (40.30 प्रतिशत) की अपेक्षा उच्च जाति (56.02 प्रतिशत) की छात्राओं ने रू0 2000.00 से अधिक मासिक आय की आकांक्षा व्यक्त की है । उच्च (40.74 प्रतिशत) तथा निम्न जाति (49.25 प्रतिशत) की तुलना में मध्यम जाति (56.15 प्रतिशत) की अधिक छात्राओं ने रू0 1001-2000 के मध्य आय की आकांक्षा प्रदर्शित की है । उच्च (3.24 प्रतिशत) तथा मध्यम जाति (3.16 प्रतिशत) की तुलना में निम्न जातियों की अधिक छात्राओं ने रू0 1000-और कम मासिक आय की अपेक्षा की है । इससे स्पष्ट होता है कि जाति एवं छात्राओं की आकांक्षित मासिक आय में पर्याप्त अन्तर है । यद्यपि उच्च जातियों की छात्राओं में अपेक्षाकृत अधिक मासिक आय की आकांक्षा है परन्तु फिर भी, मध्यम एवं निम्न जातियों में भी अधिक आय के प्रति आकांक्षा बढ़ रही है ।

**सारणी 5.16**

**जाति और आकांक्षित आय, प्रतिशत में ।**

| आकांक्षित आय | जाति | | | |
|---|---|---|---|---|
| | उच्च | मध्यम | निम्न | समग्र प्रतिशत |
| रू0 1000-और कम | 3.24 | 3.16 | 10.45 | 4.00 |
| रू0 1001 - 2000 | 40.74 | 56.15 | 49.25 | 49.83 |
| रू0 2001--और अधिक | 56.02 | 40.69 | 40.30 | 46.17 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | (216) | (317) | (67) | 100.00 |

**काई-वर्ग ($x^2$) मूल्य = 21.07**

**स्वातंत्र्यांश = 4**

**सम्भावना स्तर .01 पर महत्वपूर्ण**

**सांमाजिक गतिशीलता :**

अध्याय चार में छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा का चित्रण प्रस्तुत किया गया और विगत विवरण में उनकी व्यावसायिक आकांक्षा का विश्लेषण किया गया । इन दोनों के आधार पर छात्राओं की सामाजिक गतिशीलता के ऊपर टिप्पणी की जा सकती है ।

सामाजिक गतिशीलता से तात्पर्य है एक पद से दूसरे पद पर जाना जिनसे ऊँच-नीच का मूल्य जुड़ा हो । छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा का स्तर मध्यम है । व्यावसायिक, भौतिक सामग्री-परिग्रह तथा आय की आकांक्षाओं का स्तर भी मध्यम है । इससे निष्कर्ष निकलता है कि छात्राओं की सामाजिक गतिशीलता का स्तर भी मध्यम है । जिस प्रकार के परिवेश में छात्रायें शिक्षा ग्रहण कर रही हैं, जीवन में जिन भौतिक सामग्रियों को रखने की आकांक्षा व्यक्त की है, तथा व्यवसाय में जितनी आय की आशा की है, उन सबका स्तर मध्यम है ।

सारांशतः छात्राओं के अनुसार आदर्श व्यवसाय वह है जो समाज में प्रतिष्ठा दिलाता है और व्यक्तित्व विकास करता है । उनकी दृष्टि में समाज में आदर्श व्यवसाय अध्यापन कार्य है । उच्च प्रशासनिक सेवायें दूसरे तथा इन्जीनियरिंग, चिकित्सा समान स्थान पर हैं । अधिकांश छात्राओं ने व्यवसाय में प्रवेश का प्रमुख स्रोत शैक्षणिक योग्यता तथा प्रतियोगिता को माना है । उनकी दृष्टि में व्यवसाय में वही सफल होता है जो स्वस्थ हो, अच्छी पारिवारिक पृष्ठभूमि का हो और सद्व्यवहार करता हो । छात्राओं का अभिजात व्यवसायों की ओर झुकाव है, सर्वाधिक झुकाव अध्यापन की ओर है । कठिनाइयों के आने पर भी अपनी व्यावसायिक आकांक्षा क्रियान्वित करने हेतु कृतसंकल्प प्रतीत होती है । आकांक्षित व्यवसायों में जाने का उनका आत्म निर्णय है । उनको अन्य स्रोतों से कम प्रेरणा मिली है । वे इन व्यवसायों में उच्च आय, पद तथा प्रतिष्ठा प्राप्ति हेतु जाना चाहती हैं ।

सामाजिक वर्ग तथा जाति का व्यावसायिक, भौतिक सामग्री-परिग्रह, तथा आय की आकांक्षा से सापेक्ष सम्बन्ध परिलक्षित होता है ।

अध्याय – छः

# राजनीतिक मूल्य तथा आकांक्षायें

विगत दो अध्यायों में छात्राओं के शैक्षणिक एवं व्यावसायिक मूल्यों एवं आकांक्षाओं का विश्लेषण किया गया । इस अध्याय में हमारा ध्यान छात्राओं के राजनीतिक मूल्यों एवं आकांक्षाओं पर केन्द्रित होगा । कहने की आवश्यकता नहीं है कि आर्थिक, शैक्षणिक और राजनीतिक पक्षों में घनिष्ठ सम्बन्ध है[1]।

भारतीय समाज छात्र-जीवन को उनके भविष्य निर्माण के लिये बहुत उपयोगी मानता है । अतः उन्हें राजनीति में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित नहीं करता । माता-पिता चाहते हैं कि छात्रायें अपना समय अध्ययन में लगायें इसलिए छात्राओं की राजनीति में अभिरूचि छात्रों की अपेक्षा बहुत ही कम देखने को मिलती है । इन स्थितियों में छात्राओं के राजनीतिक मूल्य और आकांक्षाओं की समीक्षा करना उपयुक्त होगा ।

राजनीति का क्या अर्थ है ? बैली ने "किसी क्रिया के उस पक्ष को राजनीति कहा है जिसका सम्बन्ध सत्ता वितरण से हो, बशर्ते इस सत्ता के लिये प्रतिस्पर्धा हो, और दूसरा कि यह प्रतिस्पर्धा निर्धारित नियमानुसार होती हो और जिसका प्रतिस्पर्धा-कर्ता पालन

---

(1) आर्थिक तथा राजनीतिक आयामों के परस्पर सम्बन्ध के लिये देखें एरिक ओलिन राइट, "द स्टेट्स आफ द पालिटिकल इन द कन्सेप्ट आफ क्लास स्ट्रक्चर" पालिटिक्स एण्ड सोसाइटी, खण्ड 11, अंक 3 (1922) पृष्ठ 321-341, माइकेल बुरावे, "द पालिटिक्स आफ प्रोडक्शन एण्ड द प्रोडक्शन आफ पालिटिक्स," पालिटिकल पावर एण्ड सोशलथ्यिरी, खण्ड 1, मैरिस जेटलिन (सम्पादित) (ग्रीन विच कानः जे0ए0आई0प्रेस 1979) सामाजिक, राजनीति आयामों के विशेष विवरण के लिये देखें मैक्स बेबर "क्लास, स्टेट्स, पार्टी," एच0एच0गर्थ और सी0राइट मिल्स (सम्पादक) फ्राम मैक्स बेबरः एसेज इन सोशियोलाजी) लन्दनः राउटलेज एण्ड केगान पाल, 1970)

करते हों तथा जो इस बात को सुरक्षित करती है कि प्रतिस्पर्धा नियमानुकूल है[2]। बेबर ने बैली से पूर्व राजनीति को "सत्ता के लिये प्रयास या सत्ता के वितरण के लिये प्रयास कहा, चाहे यह राज्यों के बीच हो, या राज्य के समूहों के बीच[3]"। तो सत्ता क्या है ? बेबर को एक बार पुनः उद्धत किया जाना उपयुक्त होगा । सत्ता एक व्यक्ति या अनेक व्यक्तियों का वह अवसर है जबकि किसी सामुदायिक क्रिया में सहभागी व्यक्तियों के विरोध के बावजूद भी अपने संकल्प को पूरा करते हैं[4]। इसका अभिप्रेत अर्थ यह है कि प्रत्येक क्रिया जो सत्ता की ओर अभिमुख है, राजनीति के क्षेत्र में आती है, तथा प्रत्येक अवसर, जब व्यक्ति अपने इच्छा संकल्प को दूसरों के विरोध के बावजूद पूरा करता है, सत्ता के अर्थ में समाहित है । सत्ता को प्राप्त करना मानव जीवन में संयोग मात्र नहीं है, अपितु जीवन की एक आवश्यक शर्त है । छात्राओं के राजनीतिक मूल्य का विश्लेषण निम्न आधारों पर किया गया है :-

(1) राजनीति के प्रति दृष्टिकोण

(2) समानतावादी दृष्टिकोण और

(3) वितरणात्मक न्याय

---

(2) एफ0जी0वैली, पालिट्क्स एण्ड सोशलचेन्जः ओरिसा इन 1959 (बर्कलेः यूनिवर्सिटी आफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1963) पृष्ठ-223 ।

(3) बेबर "क्लास, स्टेट्स, पार्टी" पृष्ठ- 78 ।

(4) पूर्वोक्त ।

1- राजनीति के प्रति दृष्टिकोण :

अधुनातन समाजशास्त्रीय साहित्य में छात्र राजनीति पर अनेकानेक अध्ययन हुये हैं[5]। भारत में भी स्वतन्त्रता के पूर्व[6] तथा पश्चात[7] अनेक अध्ययन छात्र-राजनीति पर

---

(5) युवाओं की राजनीति पर विस्तृत सन्दर्भ के लिये देखें: फिलिप जी0आल्टवाच, सलेक्ट विब्लियोग्राफी आन स्टूडेन्ट्स पालिटिक्स एण्ड हायर एजुकेशन (कैम्ब्रिज, मैसाचु स्टेट्स हार्वाड सेण्टर फार इण्टरनेशनल अफेयर्स, 1967) एस0एम0 लिपसेट (सम्पादक), स्टूडेन्ट्स पालिटिक्स (न्यूयार्क: बेसिक बुक्स 1967) "स्टूडेन्ट्स एण्ड पालिटिक्स" डीडेलस (विशेषांक) खण्ड 87 (विन्टर 1968) ।

(6) भारत में स्वतन्त्रता के पूर्व विद्यार्थी राजनीति के सन्दर्भ में देखें: प्रबोध चन्द्र स्टूडेन्ट्स मूवमेन्ट इन इण्डिया,( लाहौर: आल इण्डिया स्टूडेन्ट फेडरेशन 1938,) ए0आर0देसाई, सोशल बैक ग्राउण्ड आफ दि इण्डियन नेशनलिज्म (बम्बई: पापुलर प्रकाशन, 1954) एम0 मुनि रेड्डी, द स्टूडेन्ट मूवमेन्ट इन इण्डिया) लखनऊ: के0एस0आर0 आचार्य, 1947) ।

(7) स्वतन्त्रता के पश्चात छात्र राजनीति पर कतिपय महत्वपूर्ण अध्ययन है: फिलिप जी आल्टवाच,"स्टूडेन्ट्स एण्ड पालिटिक्स इन इण्डिया," डीडेलस, खण्ड (विन्टर 1968) पृष्ठ 254-274" द ट्रान्सफार्मेशन आफ द इण्डियन स्टूडेन्ट्स" एशियन सर्वे खण्ड 6 (अगस्त, 1966) पृष्ठ 448-460 "द क्राइसिस इन द कैम्पस" सेमिनार अंक 44 (अप्रैल,1963) पृष्ठ 10-41, "स्टूडेन्ट्स इन टम्बयिल" सेमिनार अंक 88(दिसम्बर,1966) पृष्ठ 10-46, सैय्यद नूरूल्ला और जी0पी0नायक, ए स्टूडेन्ट्स हिस्ट्री आफ एजुकेशन इन इण्डिया (बम्बई: मैकमिलन, 1962) हुमायूँ कबीर, स्टूडेन्ट्स अनरेस्ट: काजेज एण्ड क्योर (कलकत्ता: ओरिएण्ट बुक कम्पनी, 1958 इन्सटीट्यूट आफ कान्स्टिन्यूशनल एण्ड पाल्यमिण्टरी स्टडीज, स्टूडेन्ट अनरेस्ट प्राबलम्स एण्ड परस्पैक्टिव्स) नई दिल्ली: इन्सटीट्यूट आफ कान्स्टिच्यूशनल एण्ड पाल्यमिण्टरी स्टडीज, 1966) फिलिप जी0 आल्टवाच (सम्पादक), टाम्वयिल एण्ड ट्रान्जिशन: हायर एजुकेशन एण्ड स्टूडेन्ट्स पालिटिक्स इन इण्डिया (बम्बई: लालवानी पब्लिशिंग हाउस, 1968) ।

हुये हैं । यहाँ हम छात्राओं के राजनीतिक मूल्यों का विश्लेषण करेंगे [8]। छात्राओं के समक्ष कुछ कथन रखे गये, और उन कथनों से उनकी सहमति पूँछी गयी । कथनों से राजनीति की सापेक्ष तथा निषेधात्मक दोनों प्रकार की छबि प्रतिबिम्बित होती है । कथन 2 और 4 से राजनीति की छबि निखरती है तथा कथन 1, 3 और 5 से राजनीति की छबि धूमिल होती है ।

सारणी 6.1

**छात्राओं का राजनीति के प्रति दृष्टिकोण, प्रतिशत में ।**

| | कथन | सहमति व्यक्त करने वाली छात्राओं का प्रतिशत |
|---|---|---|
| 1- | राजनीतिक वातावरण बहुत ही दूषित है | 32.33 |
| 2- | राजनीति देश सेवा का सुअवसर प्रदान करती है | 27.33 |
| 3- | राजनीतिक जीवन बहुत ही अस्थिर है | 17.67 |
| 4- | राजनीति प्रतिष्ठा बृद्धि का साधन है | 14.00 |
| 5- | राजनीति धनसंचय का साधन है | 8.67 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | | 100.00 |

सारणी 6.1 (चित्र 6.1) के तथ्यों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अधिकांश छात्राओं ने राजनीति के प्रति अच्छे विचार नही रखे हैं, क्योंकि मात्र 27.33

---

(8) युवाओं की अभिवृत्ति से सम्बंधित अन्य अध्ययनों के लिये देखें: आर0रथ, "अट्टीच्यूड्स आफ यूनिवर्सिटीज स्टूडेन्ट्स टूवर्ड्स सम पालिटिको-इकोनामिक इसूज," इण्डियन जर्नल आफ सोशियालाजी, खण्ड 30 (1955) पृष्ठ 43-54 वर्ल्ड ब्रदरहुड, ए सर्वे आफ द अट्टीच्यूड्स आफ ओपिनियन्स एण्ड पर्सनैलिटी ट्रेट्स आफ ए सैमुयूल आफ स्टूडेन्ट्स एट द यूनिवर्सिटी आफ बाम्बे (बम्बई: वर्ल्ड ब्रदरहुड, 1960 (4 मारगरेट कारमैक, सी हू राइड्स ए पीकाक: इण्डियन स्टूडेन्ट्स एण्ड सोशल चेन्ज (न्यूयार्क: एशिया पब्लिशिंग हाउस,1968) ।

## छात्राओं का राजनीति के प्रति दृष्टिकोण (प्रतिशत में)
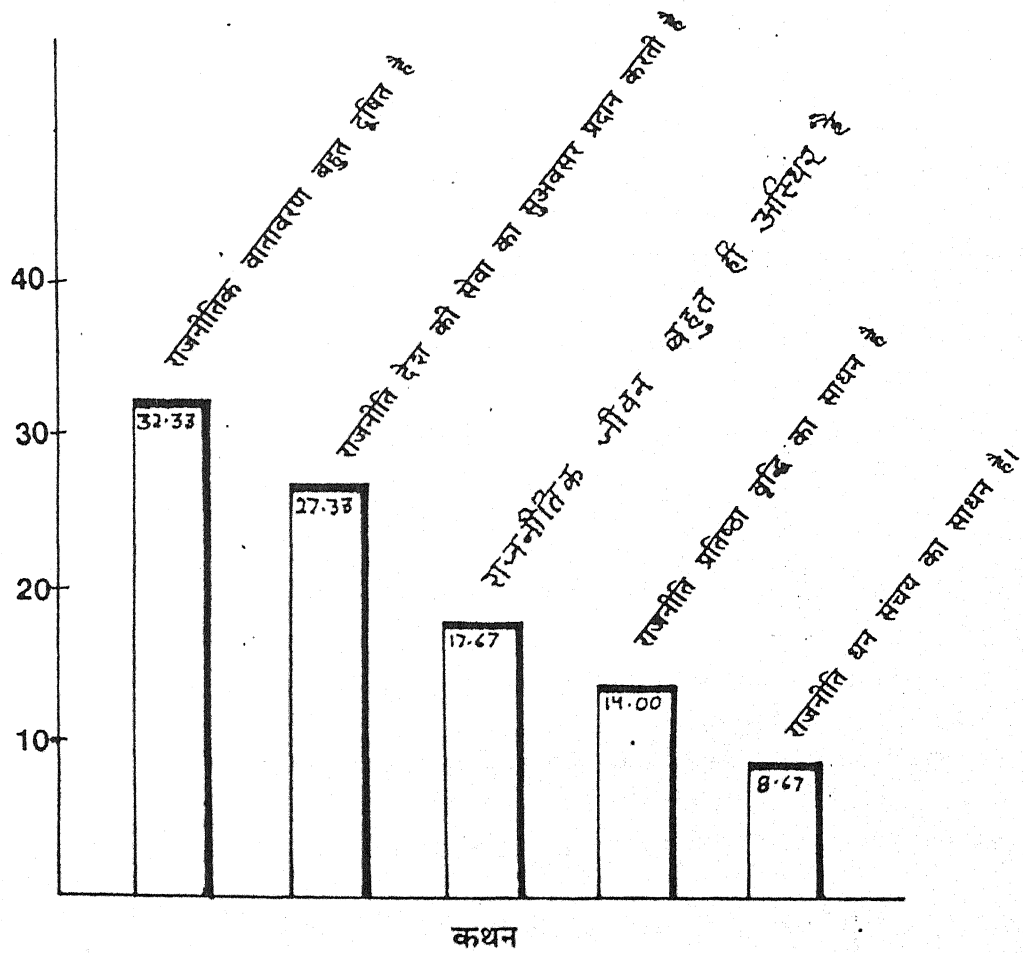
चित्र 6.1

प्रतिशत छात्राओं ने ही माना है कि राजनीति देश सेवा करने का अवसर प्रदान करती है और 14.00 प्रतिशत छात्राओं ने राजनीति को "प्रतिष्ठा बृद्धि का साधन" स्वीकार किया है । अधिक संख्या में छात्राओं (32.33 प्रतिशत) ने राजनीतिक वातावरण को दूषित बताया है, 17.67 प्रतिशत छात्राओं ने राजनीतिक जीवन को बहुत ही अस्थिर बताया है और 8.67 प्रतिशत छात्रायें राजनीति को धन-संचय का साधन मात्र मानती हैं । इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश छात्रायें राजनीति के बारे में अच्छी राय नहीं रखतीं हैं ।

2- समानतावादी मूल्य- अनुसंधान :

संविधान के आमुख में उद्धत है कि भारत जनतान्त्रिक राज्य होगा । इसका पुनर्निर्माण समानता, स्वतन्त्रता, न्याय और बन्धुत्व के आधार पर होगा । इसमें लिंग, धर्म, रंग, जाति, विश्वास आदि के आधार पर मनुष्य और मनुष्य के बीच अन्तर नहीं रहेगा, और ऐसा तभी सम्भव है जब भावी पीढ़ी बुनियादी मूल्यों को आत्मसात कर सके । इस दृष्टि से छात्राओं के जनतान्त्रिक मूल्यों का विश्लेषण अनेक आधारों पर किया गया ।

भारत में जाति, धर्म, क्षेत्रीयता तथा लिंग के आधार पर मनुष्य और मनुष्य के बीच अन्तर करने की परम्परा को तोड़ने का संकल्प लिया गया है । भारतीय संविधान ने सबको न्याय और अवसर दिलाने तथा भाई-भाई का सम्बन्ध स्थापित करने की दृष्टि से इन आधारों पर मनुष्य-मनुष्य के बीच के अन्तर को समाप्त कर दिया है, लेकिन वास्तविक सफलता तब होगी, जब युवा वर्ग उन्हें आत्मसात कर लेगा । स्वतन्त्रता प्राप्त हुये काफी समय हो गया है और इस दिशा में पर्यापत प्रयास भी किये गये हैं । अतः यह देखने का प्रयास किया गया कि युवतियाँ कहाँ तक समानतावादी मूल्यों की ओर अभिमुख हैं ।

दो प्रकार की स्थितियाँ छात्राओं के सम्मुख रखी गयीं । एक स्थिति में जाति, धर्म, लिंग तथा क्षेत्रीयता को स्पष्ट रूप से इंगित किया गया और उसके विषय में उनकी अभिमति जानी गयी तथा दूसरी स्थिति में सामान्य तौर पर मनुष्यों के बीच समानता के विषय में उनकी राय जानी गयी । आवश्यक तथ्य सारणी 6.2 तथा 6.3 में प्रस्तुत है ।

सारणी 6.2

छात्राओं का समानतावादी दृष्टिकोण, प्रतिशत में ।

| | कथन | सहमति व्यक्त करने वाली छात्राओं का प्रतिशत |
|---|---|---|
| 1- | विविध सेवाओं में बहुमत धार्मिक समूहों को वरीयता दी जानी चाहिए । | 44.70 |
| 2- | चुनावों में अन्य उम्मीदवारों की अपेक्षा क्षेत्रीय उम्मीदवारों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए । | 58.40 |
| 3- | उच्च पदों पर उच्च जाति के लोगों की नियुक्ति होनी चाहिए । | 25.20 |
| 4- | विविध सेवाओं में स्त्री-पुरूष सबको समान अवसर मिलना चाहिए । | 61.60 |
| 5- | अनुसूचित जाति एवं जनजातियों के लिये सेवाओं में आरक्षण होना चाहिए । | 35.10 |

उत्तरदाताओं की संख्या (600)

प्रथम स्थिति में, छात्राओं के समानतावादी दृष्टिकोण का पता करने के लिये उनके समक्ष पाँच कथन गये, जो जाति, धर्म, क्षेत्रीयता और लिंग से सीधे सम्बंधित हैं । सारणी 6.2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 44.70 प्रतिशत छात्रायें सेवाओं में बहुमत धार्मिक समूहों को वरीयता देना चाहती हैं, जबकि 55.30 प्रतिशत छात्रायें ऐसा नहीं चाहती हैं । अतः अधिकांश छात्रायें धर्म के आधार पर विभेद करने के पक्ष में नहीं हैं तथापि उत्तरदाताओं का एक महत्वपूर्ण भाग धर्म के आधार पर अन्तर बरतने के पक्ष में है ।

छात्राओं पर क्षेत्रीयता का प्रभाव स्पष्ट दिखलाई पड़ता है । 58.40 प्रतिशत छात्रायें क्षेत्रीय उम्मीदवार को प्राथमिकता देने की पक्षधर हैं ।

ऐसा प्रतीत होता है कि अधिकांश छात्रायें उच्च जातियों को उच्च सेवाओं में प्राथमिकता नहीं देना चाहतीं, क्योंकि मात्र 25.20 प्रतिशत छात्राओं ने उच्च पदों पर उच्च जातियों के अभ्यर्थियों की नियुक्ति होने से सहमति व्यक्त की है । इससे स्पष्ट है कि छात्राओं का एक महत्वपूर्ण भाग उदार दृष्टिकोण रखता है । वह विविध सेवाओं में उच्च जाति के एकाधिकार के विरूद्ध है ।

कथन 4 स्त्री-पुरूष दोनों को समान अवसर देने से सम्बंधित है । इस कथन से 61.60 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि आधी से अधिक छात्रायें लिंग के आधार पर नौकरियों में विभेद बरतने के पक्ष में नहीं है । फिर भी पर्याप्त संख्या में (38.40 प्रतिशत) छात्रायें लिंग-भेद की पक्षधर हैं ।

मात्र 35.10 प्रतिशत छात्राओं ने अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिये नौकरियों में आरक्षण के पक्ष में मत व्यक्त किया है ।

स्पष्ट है कि धर्म, जाति, क्षेत्रीयता तथा लिंग के प्रति अभिमुखता के आधार पर छात्राओं को दो समूहों में विभक्त किया जा सकता है । छात्राओं का एक महत्वपूर्ण भाग धर्म, जाति, क्षेत्रीयता तथा लिंग के आधार पर मनुष्य और मनुष्य के बीच अन्तर रखना चाहता है, जबकि दूसरा भाग इसके विपक्ष में है । निर्माणाधीन समाज के सन्दर्भ में ये उपलब्धियाँ महत्वपूर्ण हैं ।

मनुष्य और मनुष्य के बीच क्या सम्बन्ध होना चाहिए, इस विषय पर भी छात्राओं के विचार जाने गये । इससे सम्बंधित तीन कथन रखे गये--

1- हर मनुष्य समान है ।

2- मनुष्य और मनुष्य के बीच अन्तर दैवीय देन है ।

3- सभी का आदर करना चाहिए ।

सारणी 6.3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 88.90 प्रतिशत छात्रायें इस कथन से सहमत हैं कि "सभी मनुष्य समान हैं," मात्र 11.10 प्रतिशत छात्रायें इससे असहमत हैं । इससे स्पष्ट है कि छात्राओं का विचार बहुत ही उदार है । इस कथन की पुष्टि

**सारणी 6.3**

**छात्राओं की मानव जाति के प्रति अवधारणा, प्रतिशत में ।**

| | कथन | छात्राओं का अनुपात जो सहमति रखता है । |
|---|---|---|
| 1- | सभी मनुष्य समान हैं | 88.90 |
| 2- | मनुष्य और मनुष्य के बीच अन्तर दैवीय देन है | 12.10 |
| 3- | सबका आदर करना चाहिए | 96.00 |

उत्तरदाताओं की संख्या (600)

कथन दो के प्रति अनुक्रिया से भी होती है । मात्र 12.10 प्रतिशत छात्राओं ने सहमति व्यक्त की है- "मनुष्य और मनुष्य के बीच अन्तर दैवीय देन है" ।

इस तथ्य की पुष्टि एक बार पुनः कथन तीन की अनुक्रिया से होती है । 96.00 प्रतिशत छात्रायें "सबका आदर करने" की पक्षधर हैं । इससे स्पष्ट होता है कि सामान्य तौर पर छात्रायें समानतावादी दृष्टिकोण की हैं ।

यहाँ सारणी 6.2 और 6.3 की तुलना की जाये तो रोचक परिणाम दृष्टिगोचर होते हैं । सामान्य स्तर पर छात्राओं का विचार अधिक उदार प्रतीत होता है, जबकि विशिष्ट स्तर पर संकीर्ण है । छात्राओं का यह द्वैत सम्भवतः भारतीय समाज में प्रचलित द्वैत का प्रतिफल है ।

### 3- वितरणात्मक न्याय :

समाज में समानता आर्थिक वृद्धि पर निर्भर न होकर वितरणात्मक न्याय पर आधारित है । हम इस मत से सहमत नहीं हैं कि आर्थिक वृद्धि होने से अपने आप समाज में समानता आ जायेगी । हमारा विश्वास है कि आर्थिक वृद्धि तो हो, परन्तु वितरणात्मक न्याय से ही समानता आ सकती है[9]। इस विश्वास से छात्राओं के समक्ष आर्थिक पक्ष से

---

9- वितरणात्मक न्याय से सम्बंधित दो मत प्रचलित हैं: एक है "अधिकाधिक वृद्धि बढ़ाना और दूसरा है निर्धनता को कम करना" । वृद्धि को अधिकाधिक बढ़ाने वाले विचारक विश्वास करते हैं कि उत्पादन से स्वयं समाज में समानता उत्पन्न हो जायेगी । इसके विपरीत, निर्धनता कम करने वाले विचारक विरणात्मक न्याय में विश्वास करते हैं । इन दोनों मतों से सम्बंधित सन्दर्भ तथा निष्कर्ष के लिये देखें- चार्ल्स आर0 बेइज "इकोनामिक राइट्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटिव जस्टिस इन डेवलपिंग सोसायटीज," वर्ल्ड पालिटिक्स, खण्ड 23, अंक 3 (अप्रैल, 1981) पृष्ठ 321-346 ।

सम्बंधित दो कथन रखे गये और उनकी सहमति माँगी गयी । कथन तथा छात्राओं का प्रतिउत्तर सारणी 6.4 में देख जा सकता है ।

जैसा कि तथ्यों से स्पष्ट है कि 35.80 प्रतिशत छात्राओं ने इस कथन से सहमति व्यक्त की है कि "सभी व्यक्तियों को अपनी इच्छानुसार धन अर्जित करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए" । इसके विपरीत 64.20 प्रतिशत छात्राओं ने इस कथन से असहमति प्रगट की है ।

**सारणी 6.4**

**वितरणात्मक न्याय में विश्वास, प्रतिशत में ।**

| | कथन | छात्राओं का अनुपात जो सहमति रखती हैं । |
|---|---|---|
| 1- | सभी व्यक्तियों को अपनी इच्छानुसार धन अर्जित करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए । | 35.80 |
| 2- | सरकार को धन अर्जित करने की सीमा निर्धारित करना चाहिए, ताकि कुछ लोग अमीर और कुछ लोग गरीब न हो सकें । | 64.20 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | | 100.00 |

अतः अधिकांश छात्रायें अन्य नीति के विरुद्ध मत रखती प्रतीत होती हैं । इस आशय की पुष्टि कथन दो से भी होती है, जहाँ 64.20 प्रतिशत छात्राओं ने कहा है

किं "सरकार को धन अर्जित करने की सीमा निर्धारित करनी चाहिए ताकि कुछ लोग अमीर तथा कुछ लोग गरीब न हो सकें"।

विगत उपलब्धियों से संकेत मिलता है कि अधिकांश छात्रायें वितरणात्मक न्याय के पक्ष में हैं, लेकिन छात्राओं का एक महत्वपूर्ण भाग अभी भी इन विचारों से सहमति नहीं रखता, यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है ।

**राजनीतिक आकांक्षा :**

छात्राओं के राजनीतिक मूल्यों के विश्लेषण के पश्चात अब उनकी राजनीतिक आकांक्षाओं पर दृष्टिपात करना उपयुक्त होगा । राजनैतिक आकांक्षा का विश्लेषण छात्राओं की राजनैतिक अभिरुचि, सत्ता के लिये संघर्ष, मताधिकार की आयु, सरकार की वरीयता तथा राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति जागरूकता के आधार पर किया जायेगा । उल्लेखनीय है कि सत्ता का विश्लेषण बड़ा ही मायावी है अतः स्पष्ट करना आवश्यक है कि अनुभवाश्रित दृष्टि से सत्ता का क्या अर्थ है ? उस सत्ता को, जिसे विविध प्रतिस्पर्धात्मक समूह प्राप्त करना चाहते हैं, लोक सत्ता कहते हैं । न तो सामाजिक क्रिया में और न ही राजनीतिक क्रिया में समस्त सामाजिक सत्ता निहित होती है । जहाँ लोक सत्ता बिना प्रतिस्पर्धा के प्रयुक्त होती है, उसे प्रशासन या सरकार कहते हैं । इस दृष्टि से चुनावों में संघर्ष मत देना तथा सरकार की कामना करना सत्ता सम्बन्धी क्रियायें हैं[10]।

---

10- देखें राल्फ डब्लू0 निकोलस, "स्ट्रक्चर्स आफ पालिटिक्स इन द विलिजेज आफ सदर्न एशिया," मिल्टन सिंगर तथा बनार्ड एस0 कोहन (सम्पादक), स्ट्रक्चर एण्ड चेन्ज इन इण्डियन सोसाइटी (शिकागो: अल्डाइन पब्लिशिंग कम्पनी, 1968), इस निबन्ध में सत्ता पर अनेक सन्दर्भ देखे जा सकते हैं ।

**राजनीति में अभिरुचि :**

छात्राओं की राजनीतिक अभिरुचि जानने की दृष्टि से छात्राओं से पूँछा गया- "क्या आप राजनीति में अभिरुचि रखती हैं ? छात्राओं की अनुक्रिया से ज्ञात होता है कि अधिकांश (61.00 प्रतिशत) छात्रायें राजनीति में अभिरुचि नहीं रखती हैं तथापि उनका एक महत्वपूर्ण भाग (39.00 प्रतिशत) राजनीति में अभिरुचि रखता है । देखें सारणी 6.5 ।

**सारणी 6.5**

**छात्राओं की छात्र राजनीति में अभिरुचि, प्रतिशत में ।**

| अभिरुचि | छात्रायें |
|---|---|
| हाँ | 39.00 |
| नहीं | 61.00 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

छात्राओं की राजनीतिक आकांक्षा की तीव्रता को जानने के लिये इसी तारतम्य में उनसे पूँछा गया- "आप का छात्र राजनीति में भाग लेने के पीछे उद्देश्य क्या है ? अधिकांश छात्रायें (15.60 प्रतिशत) जनसम्पर्क तथा जन-सम्बन्ध बढ़ाने के उद्देश्य से राजनीति में भाग लेना चाहती हैं । इसके बाद, दूसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य आत्मप्रतिष्ठा (10.00 प्रतिशत) प्राप्त करना है । मात्र कुछ ही छात्रायें (2.00 प्रतिशत) राजनीति से धन लाभ की आशा रखती हैं । 6.40 प्रतिशत छात्रायें भ्रष्टाचार की समाप्ति तथा 5.00

प्रतिशत छात्र सेवा के उद्देश्य से राजनीति में भाग लेना चाहती हैं ।

**सारणी 6.6**

**राजनीति में भाग लेने के निहित उद्देश्य, प्रतिशत में ।**

| | उद्देश्य | छात्रायें |
|---|---|---|
| 1- | जनसम्पर्क तथा जन-सम्बन्ध बनाना | 15.60 |
| 2- | आत्म-प्रतिष्ठा | 10.00 |
| 3- | विद्यालय में व्याप्त भ्रष्टाचार समाप्त करना | 6.40 |
| 4- | छात्र सेवा करना | 5.00 |
| 5- | आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद | 2.00 |
| 6- | राजनीति में भाग नहीं लेना चाहतीं | 61.00 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | | 100.00 |

इस प्रकार राजनीतिक आकांक्षा के पीछे वरीयता क्रम में चार प्रमुख उद्देश्य हैं- जनसम्पर्क तथा जन-सम्बन्ध का विस्तार, प्रतिष्ठा, भ्रष्टाचारोन्मूलन तथा छात्र सेवा ।

छात्राओं की सामान्य राजनीतिक विचारधारा को और अधिक गहराई से जानने के लिये उनसे आगे पूँछा गया- किस राजनीतिक दल के साथ आपकी विचारधारा साम्य रखती है ?

(सारणी 6.7 (चित्र 6.2)) से स्पष्ट है कि अधिकांश (71.00 प्रतिशत) छात्रायें किसी भी राजनीतिक दल के विचारों से साम्य नहीं रखती हैं । इसके पश्चात, 19.67 प्रतिशत छात्रायें कांग्रेस (आई) की पक्षधर हैं तथा 8.33 प्रतिशत छात्रायें भारतीय जनता पार्टी से विचार-साम्य रखती हैं । अन्य दलों की ओर अपेक्षाकृत कम रुझान है ।

**सारणी 6.7**

**राजनीतिक दल जिनसे छात्राओं के राजनीतिक विचार साम्य रखते हैं, प्रतिशत में ।**

| | राजनीतिक दल | छात्रायें |
|---|---|---|
| 1- | कांग्रेस (आई) | 19.67 |
| 2- | भारतीय जनता पार्टी | 8.33 |
| 3- | जनता पार्टी | 1.00 |
| 4- | किसी भी दल से साम्य नहीं | 71.00 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | | 100.00 |

उक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकांश छात्रायें किसी भी राजनीतिक दल से विचारों का साम्य नहीं रखती हैं ।

अब स्वतन्त्र चर तथा छात्राओं की राजनीतिक आकांक्षा के बीच सम्बन्धों को देखना उचित होगा । सारणी 6.8 से स्पष्ट है कि उच्च (39.23 प्रतिशत) और मध्यम (35.03 प्रतिशत) सामाजिक वर्ग की छात्राओं की तुलना में निम्न (48.00 प्रतिशत)

## राजनीतिक दल जिनसे छात्राओं के राजनीतिक विचार साम्य रखते हैं (प्रतिशत में)
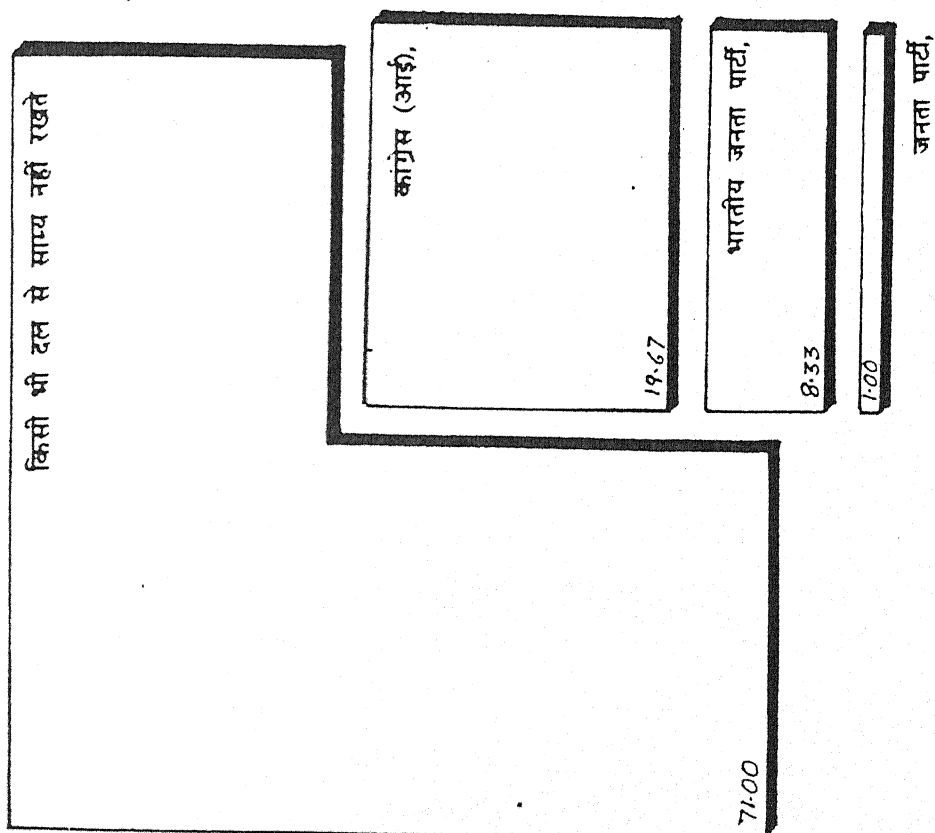
चित्र 6.2

सामाजिक वर्ग की छात्राओं की राजनीति में अभिरुचि अधिक है । राजनीति में सर्वाधिक कम अभिरुचि उच्च वर्ग की छात्राओं की है (60.77 प्रतिशत उच्च, 64.97 प्रतिशत मध्यम तथा 52.00 प्रतिशत निम्न) । विविध वर्गों की राजनीतिक अभिरुचि में पर्याप्त अन्तर है । ऐसा प्रतीत होता है कि निम्न वर्ग की छात्रायें उच्च वर्ग की तुलना में सत्ता की ओर अधिक आकृष्ट हैं लेकिन उच्च तथा मध्यम वर्ग की छात्राओं का एक भाग राजनीति में अभिरुचि रखता प्रतीत होता है । निम्न वर्ग की छात्राओं की राजनीति में अभिरुचि सत्ता परिवर्तन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है ।

**सारणी 6.8**

**सामाजिक वर्ग तथा छात्राओं की राजनीतिक अभिरुचि, प्रतिशत में ।**

| राजनीतिक अभिरुचि | सामाजिक वर्ग | | | |
|---|---|---|---|---|
| | उच्च | मध्यम | निम्न | समग्र प्रतिशत |
| हाँ | 39.23 | 35.03 | 48.00 | 39.00 |
| नहीं | 60.77 | 64.97 | 52.00 | 61.00 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | (181) | (294) | (125) | 100.00 |

**काई-वर्ग ($x^2$) मूल्य = 6.20**

**स्वातंत्र्यांश = 2**

**सम्भावना स्तर .05 पर महत्वपूर्ण**

जाति तथा छात्राओं की राजनीतिक आकांक्षा के बीच सम्बन्धों को सारणी 6.9 में देखा जा सकता है । उच्च (38.43 प्रतिशत) तथा मध्यम (38.49 प्रतिशत) जाति की छात्राओं की अपेक्षा निम्न (43.28 प्रतिशत) जाति की छात्राओं की राजनीति में अधिक अभिरुचि प्रतीत होती है परन्तु अन्तर बहुत अधिक नहीं है राजनीति में सर्वाधिक कम अभिरुचि उच्च जातियों में है ।

**सारणी 6.9**

**जाति तथा छात्राओं की राजनीतिक अभिरुचि, प्रतिशत में ।**

| राजनीतिक अभिरुचि | जाति | | | |
|---|---|---|---|---|
| | उच्च | मध्यम | निम्न | समग्र प्रतिशत |
| हाँ | 38.43 | 38.49 | 43.28 | 39.00 |
| नहीं | 61.57 | 61.51 | 56.72 | 61.00 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | (216) | (317) | (67) | 100.00 |

**काई-वर्ग ($x^2$) मूल्य = 0.58**

**स्वातंत्र्यांश = 2**

**महत्वपूर्ण नहीं**

उच्च (61.57 प्रतिशत), मध्यम (61.51 प्रतिशत) तथा निम्न (56.72 प्रतिशत) जातियों में भी राजनीतिक अभिरुचि के न होने की स्थिति उच्च जातियों के लगभग समान ही है ।

उक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि विभिन्न जातीय स्तरों पर राजनीतिक अभिरुचि में महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है ।

## छात्र संघ सहभागिता : सत्ता के लिये संघर्ष-

छात्र संघ एक ऐसा स्थल है जहाँ छात्र-छात्रा सत्ता के लिये प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं । शैक्षणिक परिसर में सत्ता के इस संघर्ष को वैधानिक मान्यता प्राप्त है । अतः छात्राओं की छात्र संघ में भाग लेने की रुचि के विषय में जानकारी प्राप्त की गयी । सारणी 6.10 के अवलोकन से विदित होता है कि मात्र 18.14 प्रतिशत छात्रायें छात्र संघ चुनाव में भाग लेना चाहती हैं । दूसरे शब्दों में अधिकांश छात्रायें छात्र संघ चुनावों में अभिरुचि नहीं रखतीं ।

**सारणी 6.10**

**छात्राओं द्वारा छात्र संघ का चुनाव लड़ने की आकांक्षा, प्रतिशत में ।**

| चुनाव की आकांक्षा | छात्रायें |
|---|---|
| हाँ | 18.14 |
| नहीं | 81.86 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

जो छात्रायें छात्र संघ चुनावों में भाग लेने की पक्षधर थीं, उनसे पूँछा गया, "आप चुनाव क्यों लड़ना चाहती हैं ?" प्राप्त उत्तरों को सारणी 6.11 में दर्शाया गया है ।

छात्राओं के छात्र संघ का चुनाव लड़ने के पीछे तीन उद्देश्य हैं : छात्राओं की समस्यायें हल करना (11.82 प्रतिशत), छात्र-छात्राओं में एकता बनाये रखना (5.06 प्रतिशत) तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करना (1.26 प्रतिशत) । अतः अधिकांश छात्रायें, छात्राओं की समस्यायें हल करने के लिये छात्र संघ का चुनाव लड़ना चाहती हैं ।

**सारणी 6.11**

**छात्राओं द्वारा छात्र संघ के चुनाव लड़ने का कारण, प्रतिशत में ।**

| | चुनाव लड़ने का कारण | छात्रायें |
|---|---|---|
| 1- | छात्राओं की समस्या हल करने के लिये | 11.82 |
| 2- | छात्र एकता बनाये रखने के लिये | 5.06 |
| 3- | प्रतिष्ठा प्राप्ति के लिये | 1.26 |
| 4- | चुनाव लड़ना नहीं चाहतीं | 81.86 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | | 100.00 |

उन छात्राओं से जो छात्र संघ का चुनाव नहीं लड़ना चाहती थीं, उनसे पूँछा गया- "आप छात्र संघ का चुनाव क्यों नहीं लड़ना चाहतीं ?" छात्राओं की अनुक्रिया से ज्ञात होता है कि (सारणी 6.12) अधिकांश छात्राओं की छात्र संघ चुनावों में रुचि नहीं है (34.18 प्रतिशत) । छात्राओं का एक महत्वपूर्ण भाग यह मानता है कि यह अनुशासनहीनता का एक कारण है तथा महिला होने के कारण चुनावों में भाग लेना समाज

के द्वारा अच्छी निगाह से नहीं देखा जाता है (30.80 प्रतिशत) । 11.82 प्रतिशत छात्रायें चुनावों को अध्ययन में व्यवधान मानती हैं । छात्राओं का एक महत्वपूर्ण भाग ऐसा भी है जो छात्र संघ चुनावों में भाग लेना चाहता है (18.14 प्रतिशत) ।

**सारणी 6.12**

**छात्राओं द्वारा छात्र संघ का चुनाव न लड़ने का कारण, प्रतिशत में ।**

| | चुनाव न लड़ने का कारण | छात्रायें |
|---|---|---|
| 1- | अध्ययन में व्यवधान | 11.82 |
| 2- | समाज अच्छी निगाहों से नहीं देखता, अनुशासनहीनता | 30.80 |
| 3- | धन तथा समय का अपव्यय | 5.06 |
| 4- | अरुचि | 34.18 |
| 5- | जो चुनाव लड़ना चाहती हैं | 18.14 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | | 100.00 |

उक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि छात्राओं का छात्र संघ के प्रति सापेक्ष दृष्टिकोण नहीं है ।

**3- मताधिकार की आयु के प्रति दृष्टिकोण :**

मताधिकार राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान रखता है । इस बात पर सभी एक मत नहीं हैं कि मत देने का अधिकार किस आयु वालों को होना चाहिए । भारतवर्ष में

वैधानिक रूप से 21 वर्ष की आयु वालों को मत देने का अधिकार था, जिसे वर्तमान समय में घटाकर 18 वर्ष कर दिया गया है । कुछ छात्राओं के मतानुसार यह आयु सीमा 20 वर्ष होनी चाहिए, क्योंकि वे 18 वर्ष की आयु परिपक्व आयु नहीं मानती हैं । इस सम्बन्ध में छात्राओं से पूँछा गया- "आप की दृष्टि में मत देने की क्या आयु होनी चाहिए ?" (सारणी 6.13) को देखने से ज्ञात होता है कि अधिकांश छात्रायें (82.83 प्रतिशत) 18 वर्ष की आयु में मताधिकार की पक्षधर हैं । इसकी तुलना में 21 वर्ष की आयु में मताधिकार देने वाले छात्राओं का प्रतिशत (13.33 प्रतिशत) अपेक्षाकृत बहुत कम है । 20 वर्ष की आयु में मताधिकार देने वाली छात्राओं का प्रतिशत मात्र 3.84 है ।

**सारणी 6.13**

**मताधिकार प्रयोग करने की आयु के विषय में छात्राओं का विचार, प्रतिशत में ।**

| मताधिकार के लिये आयु | छात्रायें |
|---|---|
| 18 वर्ष | 82.83 |
| 20 वर्ष | 3.84 |
| 21 वर्ष | 13.33 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

सारांशतः, अधिकांश छात्रायें मताधिकार की वर्तमान आयु 18 वर्ष ठीक समझती हैं ।

4- सरकार की वरीयता :

विगत पृष्ठों में छात्राओं की राजनीतिक अभिरुचि समानतावादी दृष्टिकोंण, सत्ता के लिये संघर्ष तथा मताधिकार की आयु का विश्लेषण किया गया । अब छात्राओं की सरकार की वरीयता को देखना उपयुक्त होगा । इस सम्बन्ध में छात्राओं से पूँछा गया कि- "आप देश के लिये किस प्रकार की सरकार पसन्द करती हैं ?" (सारणी 6.14) से स्पष्ट है कि अधिकांश छात्राओं ने (76.00 प्रतिशत) जनतन्त्रात्मक सरकार में विश्वास प्रगट किया है ।

**सारणी 6.14**

**छात्राओं की सरकार की वरीयता, प्रतिशत में ।**

| छात्राओं की पसन्द की सरकार | छात्रायें |
|---|---|
| जनतन्त्रात्मक सरकार | 76.00 |
| साम्यवादी सरकार | 2.17 |
| तानाशाही शासन | 8.66 |
| सैनिक शासन | 13.17 |
| उत्तरदाताओं की संख्या (600) | 100.00 |

इसकी तुलना में 24.00 प्रतिशत छात्राओं ने अन्य प्रकार की सरकारें पसन्द की हैं, जिसमें 2.17 प्रतिशत साम्यवादी सरकार, 8.66 प्रतिशत तानाशाही शासन तथा

13.17 प्रतिशत सैनिक शासन की पक्षधर हैं । यद्यपि अधिकांश छात्राओं ने जनतन्त्रात्मक सरकार का पक्ष लिया है तथापि लगभग एक चौथाई छात्राओं द्वारा गैर जनतान्त्रिक सरकारों का पक्ष लेना एक महत्वपूर्ण तथ्य है ।

**5- राष्ट्रीय समस्या के प्रति जागरूकता :**

देश की समकालीन समस्याओं के प्रति छात्राओं की जागरूकता का भी पता किया गया । छात्राओं से पाँच सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्याओं को बताने को कहा गया तथा साथ ही, यह भी कहा गया कि इन समस्याओं के महत्व-क्रम को भी बतावें । सबसे महत्वपूर्ण समस्या को एक तथा सबसे कम महत्वपूर्ण समस्या को पाँच अंक देने को कहा गया । छात्राओं के अनुसार देश की पाँच सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्यायें (सारणी 6.15) में महत्व के क्रम में दी जा रही हैं ।

**सारणी 6.15**

**छात्राओं द्वारा अनुभूत राष्ट्रीय समस्यायें और उनका महत्व क्रम ।**

| पांच सर्वाधिक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय समस्यायें | समस्याओं का महत्व क्रम |
|---|---|
| 1- बेरोजगारी की समस्या | 1 |
| 2- दहेज प्रथा की समस्या | 2 |
| 3- जनसंख्या की समस्या | 3 |
| 4- खालिस्तान की समस्या | 4 |
| 5- भ्रष्टाचार की समस्या | 5 |

उत्तरदाताओं की संख्या (600)

छात्राओं की दृष्टि में बेरोजगारी, दहेज प्रथा, जनसंख्या वृद्धि, खालिस्तान की समस्या तथा भ्रष्टाचार, ये पाँच सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्यायें हैं । इनमें से बेरोजगारी को सबसे अधिक महत्व प्रदान किया गया है जो कि उचित ही प्रतीत होता है, क्योंकि इस समस्या से युवा वर्ग ही सर्वाधिक प्रभावित है । छात्राओं की दृष्टि में दहेज प्रथा दूसरी तथा जनसंख्या वृद्धि तीसरी महत्वपूर्ण समस्या है । स्वाभाविक रूप से इन दोनों ही समस्याओं का सीधा सम्बन्ध स्त्रियों से होता है । दहेज के कारण प्रताड़ना तथा जनसंख्या वृद्धि से अधिक बच्चों के भार से स्त्रियों का जीवन ही सर्वाधिक प्रभावित होता है । खालिस्तान और भ्रष्टाचार की समस्या को युवतियों ने कम महत्वपूर्ण माना है । सम्भवतः इन समस्याओं से वे सीधे तौर पर नहीं जुड़ी हैं ।

विगत विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकांश छात्रायें राजनीति में अभिरुचि नहीं रखती हैं । राजनीति में भाग लेने वाली छात्रायें राजनीति को देश सेवा का माध्यम मानती हैं । राजनीति में अभिरुचि नहीं रखने वाली छात्रायें राजनीति को धन एकत्र करने का साधन मानती हैं । अधिकांश छात्राओं की राजनीतिक विचारधारा कांग्रेस (आई) से साम्य रखती हैं । छात्र संघ चुनाव को अधिकांश छात्राओं ने अध्ययन में व्यवधान माना है । सर्वाधिक छात्रायें मताधिकार की आयु 18 वर्ष ही उचित समझती हैं । छात्रायें प्रधानतया जनतन्त्रात्मक सरकार के पक्ष में हैं । उनकी दृष्टि में बेरोजगारी की समस्या देश की सबसे बड़ी समस्या है ।

अध्याय – सात

# सारांश तथा निष्कर्ष

पूर्ववर्ती अध्यायों में छात्राओं के शैक्षणिक, आर्थिक तथा राजनीतिक मूल्यों एवं आकांक्षाओं का विश्लेषण किया गया है । अब तक का विश्लेषण विविध पक्षों, शैक्षणिक, राजनीतिक तथा आर्थिक में अलग-अलग किया गया जबकि वास्तविकता यह है कि इन तीनों में घनिष्ठ सम्बन्ध है । इस अध्याय में अध्ययन के सारांश तथा निष्कर्षो को प्रस्तुत किया जायेगा तथा आनुभाविक उपलब्धियों को कतिपय महत्वपूर्ण श्रेणियों में रखने का प्रयास किया जायेगा, ताकि विविध अध्यायों में प्रस्तुत तथ्य एक श्रृंखला में आबद्ध हो सकें ।

वर्तमान अध्ययन बाँदा जनपद के नगरीय परिवेश के तीन महाविद्यालयों की छात्राओं पर किया गया है । अध्ययन के तथ्य प्रधानतया छात्राओं से साक्षात्कार तथा आंशिक रूप से द्वितीयक साधनों से संकलित किये गये हैं । ये तीन महाविद्यालय स्पष्टतया भारतवर्ष के उच्च शिक्षण संस्थाओं का प्रतिनिधित्व नहीं करते, अतएव अध्ययन के निष्कर्ष इन महाविद्यालयों और उनकी छात्राओं से ही सम्बंधित है ।

वर्तमान अध्ययन के क्षेत्र में अध्ययन की जाने वाली इकाइयों की संख्या सीमित होने के कारण समग्र की सभी उपलब्ध इकाइयों अर्थात महाविद्यालयीय छात्राओं को शामिल किया गया है । ऐसा करने से स्वतः ही जनपद के नगरीय परिवेश के महाविद्यालयों का, उनमें पढ़ाये जाने वाले विषयों का, उनमें अध्ययन करने वाले सभी, वर्ग तथा जातियों की छात्राओं का समावेश हो जाता है । यों भारत के सभी राज्यों की उच्च शिक्षण संस्थाओं के शैक्षणिक परिवेश तथा उनमें पढ़ाये जाने वाले विषयों की विषय-वस्तु में पर्याप्त अन्तर है, तथापि उच्च शिक्षा के अनेक मौलिक तत्व चयनित महाविद्यालयों में भी पाये जाते हैं । अस्तु, सतर्कतापूर्वक इस अध्ययन के निष्कर्ष अध्ययन-क्षेत्र की परिधि से बाहर भी लागू किये जा सकते हैं ।

अध्ययन का अनुसन्धान अभिकल्प अन्वेषणात्मक तथा विवरणात्मक है । छात्राओं के मूल्य तथा आकांक्षाओं के अध्ययन हेतु दोनों परिमाणात्मक तथा गुणात्मक पद्धतियों का उपयोग किया गया है । अध्ययन हेतु समग्र प्रणाली का चयन किया गया है । मूल्यों और आकांक्षाओं के मानदण्डों को समझने के लिये संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक परिप्रेक्ष्य को अपनाया गया है । महत्वपूर्ण स्वतन्त्रचर, जिनके आधार पर मूल्यों एवं आकांक्षाओं की विविधता को देखा गया है, वे हैं- सामाजिक वर्ग और जाति ।

समस्या निरूपण, अध्ययन-क्षेत्र- परिसीमन, प्रयुक्त पद्धतियों का उल्लेख तथा सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य का स्पष्टीकरण किसी भी आनुभाविक अध्ययन के लिये मौलिक तत्व हैं । इन सबका विवरण अध्याय एक में प्रस्तुत किया गया है ।

अध्ययन की मान्यता है कि छात्राओं के मूल्यों तथा उनकी आकांक्षाओं का निर्धारण बहुत कुछ उनके भौगोलिक तथा सामाजिक परिवेश पर आश्रित है । इसलिये सामुदायिक परिवेश की रूपरेखा, जहाँ वर्तमान अध्ययन निष्पादित किया गया है, अध्याय दो में प्रस्तुत की गई है । छात्राओं के सामुदायिक परिवेश का चित्रण बृहद स्तर पर प्रस्तुत करने के साथ ही साथ उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि का आनुभाविक चित्रण लघु स्तर पर अध्याय तीन में प्रस्तुत किया गया है ।

अध्ययन का उद्देश्य था छात्राओं के शैक्षणिक, आर्थिक तथा राजनीतिक मूल्यों एवं आकांक्षाओं का अन्वेषणात्मक अध्ययन करना और यह देखना कि कहाँ तक विविध स्वतन्त्रचरों सामाजिक स्थिति और जाति के आधार पर छात्राओं के उन मूल्यों और आकांक्षाओं में विविधता है । इनका क्रमिक विश्लेषण अध्याय चार, पाँच तथा छः में किया गया है ।

शैक्षणिक आयाम से सम्बंधित विशिष्ट उद्देश्य था-शैक्षणिक मूल्यों तथा आकांक्षाओं का विश्लेषण करना । अध्ययन की प्रमुख प्राक्कल्पना थी कि नगरीय परिवेश की छात्राओं के शैक्षणिक मूल्य आधुनिकता की ओर तो उन्मुख हैं परन्तु वे पारम्परिकता को भी नहीं छोड़ पा रही हैं, उनकी शैक्षणिक आकांक्षायें उच्च हैं, वे विज्ञान विषयों के प्रति अभिरुचि रखते हुये भी सुविधा के अभाव में कला विषयों की ओर अधिक आकृष्ट हैं, तथा स्त्रियों की शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण उदारवादी है ।

छात्राओं के "शैक्षणिक मूल्यों," शिक्षा के उद्देश्य तथा "शिक्षा के प्रकार" के प्रति उनके विचारों को जाना गया । छात्राओं के एक महत्वपूर्ण भाग ने कला विषयों पर बल दिया है । जबकि विज्ञान विषयों के प्रति भी काफी छात्राओं ने अभिरुचि प्रदर्शित की है । अधिकांश छात्राओं (75.00 प्रतिशत) ने प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया है । इससे ज्ञात होता है कि छात्रायें अधुनातन और प्रतिष्ठात्मक व्यवसायों की ओर आकृष्ट हैं । छात्राओं के शैक्षणिक मूल्यों में पारम्पारिकता और आधुनिकता का सम्मिश्रण है।

सर्वाधिक छात्राओं (38.67 प्रतिशत) ने शिक्षा का उद्देश्य ज्ञानार्जन बतलाया है । "ज्ञान के लिये ज्ञान" भारत की परम्परा रही है । ऐसा प्रतीत होता है कि पारम्परिक शिक्षा के इस उद्देश्य के प्रति छात्राओं का आकर्षण अभी भी बना हुआ है । साथ ही, पर्याप्त संख्या (34.50 प्रतिशत) में छात्राओं के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य धनोपार्जन है । ऐसा होना सम-सामयिक परिस्थितियों में स्वाभाविक है तथा यह आधुनिक समाज में बढ़ते हुये धन के महत्व का परिचायक भी है । छात्राओं की एक विचारणीय संख्या (26.83 प्रतिशत) ने चरित्र निर्माण के परम्परागत मूल्य को शिक्षा का उद्देश्य स्वीकार किया है । यहाँ भी परम्परा और आधुनिकता का सम्मिश्रण स्पष्ट परिलक्षित होता है ।

छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षाओं को अन्य स्त्रियों तथा स्वयं, दोनों स्तरों पर समझने की चेष्टा की गई है । अन्य स्त्रियों की शिक्षा के प्रति छात्राओं के विचारों का अध्ययन किया गया । स्त्रियों की शिक्षा के प्रति छात्राओं की आकांक्षा उच्च है । अधिकांश छात्राओं (92.17 प्रतिशत) ने स्त्रियों के लिये उच्च शिक्षा की आकांक्षा प्रदर्शित की है । स्त्रियों को शिक्षित करने के पीछे उनका मन्तव्य है कि स्त्रियाँ शिक्षा प्राप्त कर स्वावलम्बी बन सकेंगी । ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षा की दृष्टि से युगों से उपेक्षित महिलायें अब और आगे उपेक्षित नहीं रहना चाहती हैं । छात्राओं की स्त्री-शिक्षा के प्रति आकांक्षा उच्च है जिससे अध्ययन की प्राक्कल्पना की पुष्टि होती है ।

जहाँ तक स्वयं को शिक्षित करने का प्रश्न है, अधिकांश छात्राओं (96.16 प्रतिशत) की अपनी शैक्षणिक योजना है और वे आगे पढ़ना चाहती हैं । 68.34 प्रतिशत छात्रायें कला विषय तथा 18.00 प्रतिशत विज्ञान विषय का अध्ययन करना चाहती हैं । उपयोगिता वादी दृष्टि से छात्राओं की शिक्षा का स्तर मध्यम कोटि का है । चाहे जो भी हो, छात्रायें अपनी शैक्षणिक आकांक्षाओं को पूर्ण करने हेतु कृतसंकल्प प्रतीत होती हैं क्योंकि वे कठिनाइयों के होने पर भी उसे पूरा करना चाहेंगी । अतः प्राक्कल्पना "छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा उच्च है" स्वीकार की जाती है ।

सामाजिक वर्ग तथा छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्ष में सम्बन्ध देखने से पता चलता है कि निम्न सामाजिक वर्ग की छात्राओं का शैक्षणिक आकांक्षा स्तर उच्च है (54.40 प्रतिशत) जबकि मध्यम वर्ग की अधिकांश छात्राओं (34.35 प्रतिशत) की शैक्षणिक आकांक्षा मध्यम स्तर की है । निम्न वर्ग की छात्राओं का एक भाग ऐसा है जिनका शैक्षणिक आकांक्षा स्तर (16.00 प्रतिशत) है । इससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक वर्ग के आधार पर छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा के बीच अन्तराल है ।

जाति तथा छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा में सम्बन्ध देखने पर पता चलता है कि उच्च जाति की अधिकांश छात्राओं (46.76 प्रतिशत) की शैक्षणिक आकांक्षा उच्च है। निम्न जाति की छात्राओं का आकांक्षित शैक्षणिक स्तर उच्च तथा मध्यम जाति की छात्राओं से कम है जबकि मध्यम जाति की सर्वाधिक छात्राओं (35.65 प्रतिशत) का आकांक्षित शैक्षणिक स्तर उच्च है । इससे प्रतीत होता है कि पारम्परिक स्तरीकरण का प्रभाव नगरीय परिवेश में भी परिलक्षित होता है क्योंकि विभिन्न जातीय स्तर वाली छात्राओं की शैक्षणिक आकांक्षा के बीच महत्वपूर्ण अन्तर है ।

आर्थिक आयाम में विशिष्ट उद्देश्य था छात्राओं के आर्थिक मूल्य तथा आकांक्षाओं का विश्लेषण करना । इस सन्दर्भ में प्रमुख प्राक्कल्पना थी कि नगरीय छात्रायें प्रतिष्ठित एवं उच्च व्यवसाय को प्राप्त करने की आकांक्षा रखती हैं, उनका आधुनिकतम व्यवसायों की तरफ अधिक रुझान है । अधिकांश छात्रायें अभिजात व्यवसाय में जाना चाहती हैं । साथ ही, यह भी मान्यता थी कि सामाजिक वर्ग तथा जाति के साथ छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा का सापेक्ष सम्बन्ध है ।

अधिकांश छात्राओं की दृष्टि में सर्वाधिक आदर्श व्यवसाय अध्यापन (50.17 प्रतिशत) है । महिला होने के कारण सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से भी इस व्यवसाय को प्राथमिकता मिली जान पड़ती है । दूसरे स्थान पर उच्च प्रशासनिक सेवाओं को तथा तीसरे स्थान में बैंक तथा रेलवे की नौकरी को वरीयता प्रदान की गयी है (क्रमशः 23.67 प्रतिशत तथा 14.00 प्रतिशत) । सर्वाधिक छात्राओं (60.33 प्रतिशत) के मतानुसार आदर्श व्यवसाय वह है जो व्यक्ति को प्रतिष्ठा प्रदान करता है । उनका मत है कि समकालीन समाज में व्यवसायों को प्राप्त करने का प्रमुख साधन शैक्षणिक योग्यता तथा प्रतियोगिता (66.34

प्रतिशत, 31.33 प्रतिशत) है और उनमें सफलता के प्रमुख आधार स्वास्थ्य, पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा सद्व्यवहार है । छात्राओं का व्यावसायिक मूल्य- अनुस्थापन निर्माणाधीन भारतीय सामाजिक मूल्यों से साम्य रखता है ।

अधिकांश छात्रायें (88.84 प्रतिशत) अभिजात व्यवसाय को प्राप्त करने की आकांक्षा रखती हैं । इसकी तुलना में व्यावसायिक- प्राविधिक, स्वतन्त्र व्यवसाय तथा समाज सेवा की ओर उनका आकर्षण अपेक्षाकृत बहुत कम है । इन उपलब्धियों से अध्ययन की प्राक्कल्पना की पुष्टि होती है । आकांक्षित व्यवसाय में छात्रायें इसलिए जाना चाहती हैं क्योंकि उनके प्रति उनका रुझान है और, छात्रायें आकांक्षित व्यवसाय को प्राप्त करने के लिये कटिबद्ध प्रतीत होती हैं क्योंकि वे व्यावसायिक लक्ष्यों की पूर्ति के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों को सहन करने के लिये तत्पर दिखलाई पड़ती हैं ।

छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा स्वयं निर्दिष्ट है, अन्य स्रोतों का प्रभाव अपेक्षाकृत कम है । छात्राओं ने प्रतिष्ठा तथा आय की दृष्टि से अभिजात व्यवसायों को चुना है लेकिन व्यवहार रूप में समाज में व्यावसायिक- प्राविधिक व्यवसायों की तुलना में अभिजात व्यवसायों में कम सम्मान तथा कम आय सम्भाव्य है जबकि छात्राओं की आकांक्षा उच्च आय की है ।

सामाजिक वर्ग तथा छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा के बीच निकट का सम्बन्ध प्रतीत होता है । प्रायः सभी वर्गों की छात्राओं (88.83 प्रतिशत) ने अपनी रुचि अभिजात व्यवसायों में व्यक्त की है । अन्य व्यवसायों की ओर उनका रुझान कम ही है । फिर भी, अन्य व्यवसायों में उच्च एवं निम्न वर्ग की युवतियों ने यदि स्वतन्त्र व्यवसायों को चुनने में अपनी रुचि प्रदर्शित की है तो मध्यम वर्ग की छात्रायें प्राविधिक व्यवसाय और समाज

सेवा की ओर आकृष्ट दिखलाई पड़ती हैं । सामाजिक वर्ग तथा व्यावसायिक आकांक्षा के बीच महत्वपूर्ण अन्तराल है ।

जाति तथा छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा परस्पर निबद्ध प्रतीत होती है। प्रायः सभी जातियों की युवतियों ने अभिजात व्यवसायों में अपनी रुचि प्रदर्शित की है । फिर भी, उच्च वर्ग का झुकाव इन व्यवसायों के प्रति सर्वाधिक (91.20 प्रतिशत) है । अन्य व्यवसायों में, उच्च एवं मध्यम वर्ग की छात्राओं ने जहाँ प्राविधिक व्यवसायों की ओर अपना रुझान प्रदर्शित किया है वहीं निम्न वर्ग की युवतियों का झुकाव स्वतन्त्र व्यवसायों की ओर अधिक है । जाति तथा व्यावसायिक आकांक्षा के बीच महत्वपूर्ण अन्तराल है ।

छात्राओं की भौतिक सामग्री परिग्रह की आकांक्षा भी उच्च स्तर की है । अधिकांश छात्राओं ने स्कूटर, फ्रिज, वाशिंग मशीन तथा मोटरकार प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की है ।

अधिकांश छात्राओं (49.83 प्रतिशत) की मासिक आय की आकांक्षा मध्यम स्तर की है । उच्च आय की आकांक्षा अपेक्षाकृत कम छात्राओं (46.17 प्रतिशत) ने की है, फिर भी, उनकी संख्या पर्याप्त है । निम्न आय की आकांक्षा कम ही छात्राओं (4.00 प्रतिशत) ने की है । इससे हमारी परिकल्पना की आंशिक पुष्टि होती है कि नगरीय परिवेश की छात्राओं के अन्दर उच्च आय की तीव्र आकांक्षा होती है ।

छात्राओं की मासिक आय की आकांक्षा तथा सामाजिक वर्ग एवं जाति के बीच महत्वपूर्ण सम्बन्ध परिलक्षित होता है । उच्च वर्ग की अधिकांश युवतियों (61.88 प्रतिशत) ने मध्यम आय की आकांक्षा व्यक्त की है, जबकि मध्यम तथा निम्न वर्ग की सर्वाधिक क्रमशः 50.00 प्रतिशत तथा 50.40 प्रतिशत छात्रायें उच्च आय प्राप्त करने की अभिलाषा रखती हैं ।

जाति के आधार पर आय की आकांक्षा का स्तर कुछ भिन्न है । जहाँ उच्च जाति की सर्वाधिक छात्राओं (56.02 प्रतिशत) ने उच्च आय की आकांक्षा व्यक्त की है वहीं मध्यम तथा निम्न जाति की अधिकांश (क्रमशः 56.15 प्रतिशत तथा 49.25 प्रतिशत) छात्रायें मध्यम आय प्राप्त करने की इच्छुक दिखलाई पड़ती हैं ।

राजनीतिक आयाम में विशिष्ट उद्देश्य था छात्राओं के राजनीतिक मूल्य तथा आकांक्षा का विश्लेषण करना । इस सन्दर्भ में हमारी प्रमुख प्राक्कल्पना **थी** कि नगरीय परिवेश की छात्रायें राजनीतिक क्रिया-कलापों में कम रुचि रखती हैं । साथ ही छात्रायें जनतान्त्रिक मूल्यों को आत्मसात कर रही हैं ।

राजनीतिक मूल्यों का विश्लेषण, राजनीति के प्रति दृष्टिकोण, समानतावादी विचार तथा वितरणात्मक- न्याय में विश्वास के आधार पर किया गया है । छात्राओं का राजनीति के प्रति दृष्टिकोंण द्वन्दात्मक है । एक तरफ वे राजनीति को देश सेवा का अवसर प्रदान करने का माध्यम तथा प्रतिष्ठा-वृद्धि का साधन मानती हैं, वहीं दूसरी तरफ राजनीतिक वातावरण को दूषित बतलाते हुये उसे धन संचय का माध्यम भी स्वीकार करती हैं । छात्राओं का यह दृष्टिकोण यथार्थ की ओर झुका हुआ प्रतीत होता है । निःसंदेह, राजनीति देश सेवा का अवसर प्रदान करती है परन्तु वर्तमान में राजनीतिक क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार को देखकर उनका राजनीति को बेइमानी पर टिका बताना न्याय-संगत प्रतीत होता है ।

समानतावादी दृष्टिकोण के सम्बन्ध में, छात्राओं का एक भाग जहाँ जाति, क्षेत्रीयता और धर्म के आधार पर अन्तर रखने का पक्षधर है, वहीं एक महत्वपूर्ण भाग इसके विपक्ष में है । चुनावों में क्षेत्रीय उम्मीदवारों को प्राथमिकता देने के पक्ष में 58.40 प्रतिशत, विविध सेवाओं में बहुमत धार्मिक समूहों को वरीयता देने के पक्ष में 44.70 प्रतिशत छात्रायें

हैं जबकि जाति के आधार पर विभिन्न पदों पर नियुक्ति की पक्षधर मात्र 25.20 प्रतिशत छात्रायें ही हैं । स्त्री-पुरूष दोनों को समान अवसर प्रदान करने की पक्षधर छात्राओं का प्रतिशत 61.60 है । यद्यपि अधिकांश ने सभी को समान मानने तथा सभी का आदर करने के पक्ष में अपनी आकांक्षा व्यक्त की है फिर भी, एक भाग मानव-मानव के बीच दैवीय अन्तर के तथ्य की बात करता है । कुल मिलाकर, छात्राओं के दृष्टिकोण का उक्त विश्लेषण समाज में समानतावादी मूल्यों की कमी की ओर संकेत दे रहा है ।

जहाँ तक वितरणात्मक न्याय का सम्बन्ध है, अधिकांश छात्रायें (64.20 प्रतिशत) इसके पक्ष में हैं और वे चाहती हैं कि धन अर्जित करने की सीमा निर्धारित होनी चाहिए परन्तु छात्राओं का एक महत्वपूर्ण भाग (35.80 प्रतिशत) किसी भी प्रकार की सीमा निर्धारित करने के पक्ष में नहीं है ।

छात्राओं की राजनीतिक आकांक्षा का विश्लेषण उनकी राजनीतिक अभिरुचि, सत्ता के लिये संघर्ष की इच्छा, मताधिकार आयु के प्रति दृष्टिकोण, सरकार की वरीयता तथा राष्ट्रीय समस्याओं की चेतना के आधार पर किया गया है ।

अधिकांश छात्रायें (61.00 प्रतिशत) राजनीति में अभिरुचि नहीं रखती हैं जिससे उनकी निम्न राजनीतिक आकांक्षा प्रतिभासित होती है ।

सामाजिक वर्ग के आधार पर छात्राओं की राजनीतिक अभिरुचि को देखा जाये तो प्रतीत होता है कि उच्च तथा मध्यम सामाजिक वर्ग की अपेक्षा निम्न सामाजिक वर्ग की छात्राओं में राजनीति के प्रति अभिरुचि अधिक है । मध्यम वर्ग की छात्राओं का अनुपात सबसे कम है ।

इसी प्रकार, जाति तथा छात्राओं की राजनीतिक अभिरुचि में परस्पर सम्बन्ध परिलक्षित होता है । उच्च तथा मध्यम जाति की छात्राओं की अपेक्षा निम्न जाति की छात्राओं में राजनीति के प्रति रुझान अधिक है । सर्वाधिक कम अभिरुचि उच्च जातियों में है ।

राजनीति में अभिरुचि रखना एक बात है, लेकिन सत्ता के लिये संघर्ष करना दूसरी बात । छात्र-छात्राओं को सत्ता के संघर्ष का अवसर छात्र संघ के चुनावों में मिलता है । तथ्यों से ज्ञात होता है कि अधिकांश छात्रायें (81.86 प्रतिशत) चुनाव नहीं लड़ना चाहती हैं । इससे उनमें सत्ता के प्रति संघर्ष की आस्था में कमी होने का भान होता है । इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि छात्राओं की छात्र संघों के प्रति सापेक्ष अवधारणा नहीं है और दूसरा कारण, महिला महाविद्यालयों में छात्र संघ न होने के कारण राजनीतिक प्रक्रिया के प्रति उदासीनता है ।

मताधिकार की आयु के सम्बन्ध में छात्रायें अधिक सचेत प्रतीत होती हैं । 82.83 प्रतिशत छात्राओं ने 18 वर्ष की आयु वालों को मताधिकार देने का समर्थन किया है।

अधिकांश छात्राओं ने (76.00 प्रतिशत) जनतन्त्रात्मक सरकार को पसन्द किया है । अन्य प्रकार की सरकारों को उन्होंने लगभग नकार दिया है ।

नगरीय छात्राओं की दृष्टि में देश की सबसे ज्वलन्त समस्या बेरोजगारी की समस्या है और उसके पश्चात महिला होने के कारण दहेज प्रथा को वे अभिशाप मानती हैं। उनका यह दृष्टिकोण उचित प्रतीत होता है क्योंकि उनके परिवेश में रोजगार के कम अवसर और दानव रूपी दहेज की पीड़ा अधिक परिलक्षित होती है ।

विगत उपलब्धियाँ भावी नगरीय समाज तथा छात्राओं के सन्दर्भ में अनेक अभिप्रेत अर्थ रखती हैं । प्रथमतः कला विषयों का अध्ययन करने वाली छात्रायें केवल अभिजात व्यवसायों में ही जा सकेंगी । राजनीति में रुचि न होने के कारण समाज महिला नेतृत्व से वंचित रहेगा ।

द्वितीय- कला विषयों का अधिकाधिक छात्राओं का अध्ययन करना तथा अभिजात व्यवसायों में प्रवेश की आकांक्षा रखना आज की स्थिति को देखते हुये व्यावहारिक प्रतीत नहीं होता क्योंकि ऐसा होने से उनको नौकरी प्राप्त करने के कम ही अवसर सुलभ होंगे । इससे छात्राओं को कुण्ठा का सामना करना पड़ेगा जो सामाजिक मानदण्डों के कारण उनके विचलित हो सकने का कारण बन सकता है ।

तृतीय- यों प्रत्येक सामाजिक वर्ग तथा जाति की छात्रायें उच्च शिक्षा प्राप्त करने की आकांक्षा रखती हैं तथा सम्भ्रान्त व्यवसायों में जाना चाहती हैं तथापि उच्च सामाजिक वर्ग तथा जाति की छात्राओं से मध्यम सामाजिक वर्ग और जाति की छात्रायें किसी मामले में कम नहीं प्रतीत होतीं । ऐसा आभास होता है कि नगरीय परिवेश में वर्गों और जातियों के बीच परम्परात्मक अन्तराल कम होकर आधुनिकता की छाप बढ़ रही है ।

चतुर्थ- छात्रायें उच्च शिक्षा प्राप्त करने की आकांक्षा रखती हैं । जो छात्रायें उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं, उनमें उच्च स्तरीय शिक्षा तथा व्यवसाय प्राप्त करने की आकांक्षा अन्य छात्राओं की अपेक्षा अधिक है । छात्राओं को यदि उचित अवसर प्रदान किया गया तो नगरीय परिवेश में स्त्री-पुरूष अन्तराल समाप्त होने की सम्भावनायें प्रबल हैं ।

इस प्रकार के अध्ययन यदि व्यापक स्तर पर किये जायें, तो और अधिक रोचक परिणाम उपलब्ध होंगे । अध्ययन की उपलब्धियों के परिप्रेक्ष्य में नगरीय परिवेश की उच्च शिक्षा नीति में और अधिक परिवर्तन लाने की आवश्यकता प्रतीत होती है ।

# पारिभाषिक - शब्दावली

## पारिभाषिक शब्दावली

| | |
|---|---|
| अभिकल्प | Design |
| अर्जित | Achieved |
| अवधारणा | Concept |
| अभिजात वर्ग | Elite |
| आधार सामग्री संसाधन | Processing of Data |
| अभिवृत्ति | Attitude |
| आधार सामग्री | Data |
| अनुस्थापन | Orientation |
| अवन्धिनीति | Laissez - fair |
| आकांक्षा | Aspiration |
| गुणात्मक | Qualitative |
| जीवन-चक्र | Life-cycle |
| तथ्य | Data |
| प्रस्थिति | Status |
| परिप्रेक्ष्य | Pespiective |
| प्राक्कल्पना | Hypothesis |
| प्रस्थिति प्रमापक | Status Scale |
| परिमाणात्मक | Quantitative |
| मौलिक प्रत्यय | Basic Concept |
| मूल्य | Value |
| वितरणात्मक | Distributive |
| विवरणात्मक | Descriptive |
| समन्वेषणात्मक | Exploratory |
| सह - सम्बन्ध | Association |
| सांख्यकीय | statistical |
| समग्र | Universe |
| सामुदायिक परिवेश | Community Setting |
| सामाजिक गतिशीलता | social Mobility |

# सन्दर्भ ग्रन्थ - सूची तथा परिशिष्ट

## B I B L I O G R A P H Y


Atal, Yogesh, 1967 : "Conceptual Framework of Analysis of Caste", Sociological Bulletin, Vol. XVI, No. 2 (September).

Alan, M. Orienstein, 1965 : "Community of Residence and Occupational Choice", American Journal of Sociology, 70 (March).

Altbach, Phillip G., 1960 : "The Transformation of Indian Student Movement", Asian Survey, 6 (August).

Barber, Bernard, 1957 : "Social Stratification", New York: Harcourt, Brace and Co.

Bealer, R.C., and F.K. Willits, 1966 : "Rural Youth : A Case Study in the Rebelliousness of Adolescent", Annals of American Academy of Political and Social Science, 338 (November).

Belcher, J.G., 1951 : "Evaluation and Restandardization of Sewell's Socio-Economic Scale", Rural Sociology, 16.

Bell, Gerald, D., 1963 : "Process in the Formation of Adolescent Aspirations", Social Forces, 42 (December).

Berger, Benet M., 1963 : "On Youthfulness of Youth Culture", Social Research, 30 (Autumn).

Bhatt, A.R., 1959 : "Problem of Vernacular Language Press of India, UNESCO Asia Conference in Bangkok, January 15-30, 1960, Paris; November 30, 1959, duplicated by UNESCO.

Boalt, Gunnar, 1954 : "Social Mobility in Stockholm", Transaction of Second World Congress of Sociology, 2, London : International Sociological Association.

Bopegamage, A., and P.V. Veeraraghavan, 1957 : Status Images in Changing India, Bombay : Manktalas.

Bose, Ashis, 1950 : "The Process of Urbanization in India", Unpublished Doctoral dissertation, Delhi, University of Delhi.

Boyle, Richard P., 1966 : "Community Influence on College Aspiration : An Empirical Evaluation of Explanatory Factors", Rural Sociology, 31 (September).

Brake, M., 1980 : The Sociology of Youth Culture and Youth Subculture, London : Routledge and Kegan Paul.

Burchinal, Lee G., 1960 : "Who Is Going to Farm", Irwa Farm Science, 24 (April).

Burchinal, Lee G., 1961 : "Differences in Educational and Occupational Aspirations of Farm, small Town and City Boys", Rural Sociology, 26.

Chandra, Prabodh, 1938 : Student Movement in India, Lahore : Alll India Students Federation.

Chopra, S.L., 1964 : A Study of Relationship between Socio-Economic Factors and Academic Achievement of the Students. Unpublished Ph.D. Thesis, Lucknow : Lucknow University.

Cohen, A.K., 1955 : Delinquent Boys, New York : Free Press.

Cohen, S., 1970 : Moral Panics and Folk Devils, London: Mc.Gibbon and Kee.

Cohen, Yehudi A., 1961 : "Adolescent Conflict in Jamaican Community" in his Social Structure and Personality, New York : Holt, Rinehart and Winston.

Cohen, Bernard S., 1951 : "Chamar Family in a North Indian Village", Economic Weekly, 13.

Coleman, J.S., 1961 : The Adolescet Socity, New York: Free Press.

Cowhig, James D., and Charles, B. Nam, 1961 : Educational Status, College Plans and Occupational Status of farm and Non-Farm Youths, Washingdon, D.C. : Census Series, ERS no. 30.

Daherndorf, Ralf, 1955 : "Class and Class Conflict in Industrial Society", Stanford, Calif : Stanford University Press.

Davies, A.F., 1962 : "Prestige of Occupations", British Journal of Sociology (June).

Desai, B.G., 1967 : The Emerging Youth, Ph.D. Thesis, Bombay Popular Prakashan.

Desai, I.P., 1955 : "Symposium: Caste and Family", Sociological Bulletin, No. 4.

Dubey, S.C. 1977 : India Since Independence : Social Report in India, 1847-1973, New Delhi : Vikas Publications.

Dollard, John, 1937 : Class and Caste in a Southern Town, New Haven : Yale University.

Dunham, W.E., and M.W. Karner, 1954 : "The Juvenile Court and its Relationship to Audlt Criminality" Social Forces, 32 (March)

Empey, L.T., 1956 : "Class and Occupational Aspiration : A Comparison of Absolute and Relative Measurement", Americal Sociological Reviews, 21

Feuer, L., 1969 : The Conflict of Generations, London : Heinemann.

George, E.I., P. Gopala Pillay, and K. Sulochanan Nair, 1967 : " A Study of Occupational Choice and Values of High School Pupils", Indian Journal of Social Work, (July).

Ghosh, S.K., 1969 : The Student Challenge Round the World, Calcutta: Eastern Law House Pvt. Ltd.

Ghurye, G.S., 1968 : "Caste and Race in India", Bombay: Popular Prakashan.

Glass, David, 1961 : "Education and Social Change in Modern World", in A.H. Halsey, et al; (ed.), Education, Economy and Society, New York: Free Press.

Gore, M.S., 1964 : Some Problems of Educated Youth in India, 1947-1967, Bombay: Asia Publishing House.

Grigg, Charles M., and Russel Middleton, 1960 : "Community of Orientation and Occupational Aspirations of Ninth Grade Students", Social Forces, 38 (May).

Hall, S.T. Jefferson, and J. Clarke, 1976 : "Youth A Stage of life", Youth in Society, No. 17 (May-June).

Harrison, Forest, 1959 : "Aspirations as Related to School Performance and Socio-Economic Status", Sociometry, 32 (March)

Havighurst, R.J., and P.H. Dreyer (eds.), 1975 : Youth, Chicago: National Society for the Study of Education.

Hirst, P.Q., 1975 : Marx and Engels on Law, Crime and Morality, London: Routledge.

Horowitz, I.C., and W.H. Friedland, 1970 : "The Knowledge Factory : Student Power and Academic Politics in America, Chicago: Aldine Press.

Jacques, M., 1975 : "Trends in Youth Culture", Marxian To-day, (April).

Kabir, Humayun, 1958 : Student Unrest : Causes and Care Calcutta: Orient Book Co.

Kanungo, R., 1960 : "Vocational Choice and Occupational Values among Adolescent Students", Educ. Guidance, Vol. 7.

Kapadia, K.M., 1959 : "The Family in Transition", Sociological Bulletin, 8.

Kapoor, Promilla, 1970 : Marriage and the Working Women in India, Delhi : Vikas Publications.

Karve, Iravati, 1963 : "A Family through Six Generations", in L.K. Bàla Ratnam (ed.), Anthropology on the March, Madras: Book Center.

Kuppuswamy, B., 1959 : "A Scale to Measure-Socio-Economic Status", Indian Journal of Psychol., 34.

Kuvlesky, William P., and Robert C. Bealer, 1966 : "The Relevance of Adolscents' Occupational Aspirations for Subsequent Job Attainment", Rural Sociology, 32 (September).

Lipset, Seymour Martin, 1955 : "Social Mobility and Urbanization", Rural Sociology, 20 (September).

Madan, T.N., 1962 : "The Hindu Joint Families", Man, 62

Mannhein, Karl, 1952 : Essays on the Sociology of Knowledge, London: Routledge and Kegan Paul.

Marx, Karl, 1950 : "Wage Labour and Capital", in Karl Marx and Frederick Engele, Selected Works, Volume I, Moscow: Foreign Language Publishing House.

Mehra, P., 1951 : The Indian Youth : Emerging Problems and Issued, Bombay : Somaiya.

Margaret, Cormack, 1961 : She Who Rides a Peacock : Indian Students and Social Change, Bombay : Asia Publishing House.

Marsland, D., and Hunter, P. 1976 : "Youth : A Real Force and Essential Concept", Youth in Society, No. 18 (July-August).

Marsland, D., 1978 : Sociological Exploration in Service of Youth, Leicester : Youth Bureau.

Musgrave, F., 1974 : Estasy and Holiness : Counter-Culture and Open Society, London: Methuen.

Muzafer, Sherif, 1936 : "The Psychology of Social Norms New York: Harper and Row.

Nimkoff, M.F., 1965 : (ed.), Comparative Family System, Boston: Houghton Mifflin.

Nurullah, Syed, and J.P. Naik, 1962 : A Student's History of Education in India, Bombay : MacMillan.

Pandey, Balaji, 1985 : "Removing Sex Biases From Text Books", Statesman, Delhi, 9 (October).

Pandey, Balaji, 1985 : "Eradicating Illiteracy among Women", The Statesman, Delhi, 9 (September).

Pandey, R., 1969 : "Youth Culture, Nature and Content : Some Approaches", Interdiscipline, Vol. 6, No. 3 (Autumn).

Pandey, R., 1975 : India's Youth at the Crossroads : A Study of the values and Aspirations of College Students, Varanasi: Vani Vihar.

Parsons, Talcott, 1942 : "Age and Sex in the Social Structure of the United States", American Sociological Review, 7.

Phillips, Bernard, S., 1969 : Sociology: Social Structure and Change, London: The Macmillan Co.

Poulantzas, N., 1975 : Political Power and Social Classes, London: New Left Books.

Prabhu, Pandharinath H., 1963 : "Hindu Social Organization: A Study in Sociological and Ideological Foundations, 4th Edition, Bombay: Popular Prakashan.

Rabindranathan, M.R., 1970 : "Causes of Students Unrest", New Delhi: The Hindustan Times, (February)

Rajak, T., 1969 : The Making of Counter-Culture, London Doubleday.

Rao, V.K.R.V., H.K. Majumdar, and Amal Ray, 1974 : Planning for Change, New Delhi: Vikas Publications.

Reddy, M. Muni, 1947 : The Student Movement in India, Lucknow: K.S.R. Acharya.

Rehberg, Richard, A., and David L. Westbey, 1967 : "Paternal Encouragement, Occupation, Education and FamilySize: Artificial or Independent Determinants of Adolescents' Educational Expectation", Social Forces, (March).

Reich, C.A., 1969 : The Greenings of America, Harmondsworth: Allen Lane, The Penguine Press.

Rezler, A., 1963 : "Occupational Values and Occupational Choice of Young Indians", Guidance Review, Vol. 1, New Delhi: National Council for Educational Research and Training.

Rowntree, J., and Rowntree, M., 1968 : "The Political Economy of Youth", International Socialist Journal, (February).

Rudolph, L.I., and S. Rudolph, 1967 : The Modernity of Tradition, Chicago: University of Chicago Press.

Ruth, R., 1955 : "Attitudes of University Students Towards Some Politico-Economic Issues", Indian Journal of Psychology, 30.

Sewell, William, H., 1963 : "Community of Residence and College Plans", American Sociological Review, 29 (February).

Sandhya, S. 1986 : Socio-Cultural and Economic Co-relates of Infant Martality : A case study of Andhra Pradesh, Demography India, Vol. 15, Part I, Page 89.

Shah, A.M., 1964 : "Basic Terms and Concepts in the Study of Family in India", Indian Economic and Social Histroy Review.

Shah, B.V., 1964 : The Social Change and College Students of Gujrat, Baroda : The M.S. University of Baroda.

shakuntala, Masani, 1971 : "Indian Women: Equal in Law - Unequal in Fact", Illustrated Weekly of India XCII (October).

Sharma, Baldev, R., 1970 : "Occupational Aspirations", Indian Journal of Sociology.

Singh, Amar, K., 1967 : "Hindu Culture and Economic Development in India", Conspectus, Vol. 3, No.1

Singh, Prabhakar, 1982 : Community Development Programme in India, Delhi : Deep and Deep Publication.

Singh, Yogendra, 1973 : Modernisation of Indian Tradition : Systematic Study of Social Change,Delhi Thomson Press (Inida) Limited.

Smith, David M., 1981 : "New Movements in the Sociology : A Critique", British Journal of Sociology, Vol. 32, 2 (January).

Taylor, I., and C. Taylor (eds), 1973 : Politics and Deviance, Harmondsworth Penguin Press.

Weber, Max, 1947 : From Max Weber : Essay in Sociology, Trans. and ed. by H.H. Gerth and Wright Mills, New York: The Free Press of Glencoe.

Westby, David, L., and Richard G. Braungart, 1966 : "Class and Politics in the Family Background of Student Political Activities", American Sociological Review, 31, 5 (October).

Wilson, B., 1970 : The Youth Culture and the Universities, London: Faber and Faber.

Young, J., 1973 : "The Happies : An Essay in the Politics of Leisure, in I. Taylor and C. Taylor (eds.), Politics and Deviance, Harmondsworth Penguin Press; London : Routledge and Kegan Paul.

अति गोपनीय

# साक्षात्कार-अनुसूची

## नगरीय परिवेश के महाविद्यालयों की छात्राओं के सामाजिक मूल्य तथा आकाँक्षाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन

( बाँदा जिले के नगरीय परिवेश के तीन महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के अध्ययन पर आधारित )

शोधकर्त्री

श्रीमती सविता खरे

## परिचयात्मक - विवरण

**कोड नं0**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | छात्रा का नाम | | |
| 2. | महाविद्यालय का नाम | | |
| | | राजकीय महिला महाविद्यालय | 1 |
| | | पं0 जवाहर लाल नेहरू महाविद्यालय | 2 |
| | | अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कालेज | 3 |
| 3. | कक्षा | बी0 ए0, बी0 एस-सी0, बी0एड0 | 1 |
| | | एम0 ए0, एम0 एस-सी0, एम0एड0 | 2 |
| 4. | विषय | कला | 1 |
| | | विज्ञान | 2 |
| 5. | आयु | 16 - 20 वर्ष | 1 |
| | | 21 - 25 वर्ष | 2 |
| 6. | वैवाहिक स्थिति | अविवाहित | 1 |
| | | विवाहित | 2 |
| 7. | विवाह के समय आपकी उम्र क्या थी | | |
| | | 16 - 18 वर्ष | 1 |
| | | 19 - 21 वर्ष | 2 |
| | | 22 - 25 वर्ष | 3 |
| 8. | धर्म | हिन्दू | 1 |
| | | मुसलमान | 2 |
| | | इसाई | 3 |
| | | अन्य धर्म | 4 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 9. | जाति | ब्राम्हण | 1 |
| | | क्षत्रिय | 2 |
| | | वैश्य | 3 |
| | | पिछड़ी जाति | 4 |
| | | अनुसूचित जाति | 5 |
| 10. | निवास स्थान | ग्राम | 1 |
| | | नगर | 2 |
| | | दोनो | 3 |
| 11. | शहर में निवास की कुल अवधि | | |
| | | 1 - 5 वर्ष | 1 |
| | | 6 - 10 वर्ष | 2 |
| | | 11 - 15 वर्ष | 3 |
| | | 16 - ऊपर | 4 |
| 12. | आप किस उम्र से नगर में रहती हैं | | |
| | | 10 वर्ष से कम | 1 |
| | | 11 - 15 वर्ष | 2 |
| | | 16 - 20 वर्ष | 3 |

13. शैक्षणिक स्तर

| परीक्षा का नाम | परीक्षा कितनी बार में उत्तीर्ण किया | उत्तीर्ण वर्ष | श्रेणी | विशेष योग्यता |
|---|---|---|---|---|
| 1. हाईस्कूल | | | | |
| 2. इण्टरमीडिएट | | | | |
| 3. स्नातक | | | | |
| 4. स्नातकोत्तर | | | | |
| 5. अन्य कोई | | | | |

## आर्थिक आकांक्षायें एवं मूल्य

14. आप अपनी शिक्षा समाप्ति के पश्चात् किन व्यवसायों में जाना पसंद करेंगी, वरीयता क्रम दें

1............ 1

2............ 2

3............ 3

4............ 4

15. आप इनमें से सबसे अधिक किस व्यवसाय को पसन्द करेंगी ?

1............ 1

2............ 2

16. आपको उपर्युक्त व्यवसाय में जाने की प्रेरणा कहां से मिलती है ?

1. व्यक्तिगत निर्णय 1
2. पारिवारिक निर्णय 2
3. मित्र मण्डली का प्रभाव 3
4. सम्बन्धियों का प्रभाव 4
5. गुरूजनों का प्रभाव 5
6. अन्य 6

17. आप व्यवसाय को किस प्रकार प्राप्त करना चाहती हैं ?

1. प्रतियोगिता पद्धति से 1
2. पहुंच से 2
3. शैक्षणिक योग्यता 3
4. अन्य 4

18. व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने का आधार क्या हैं ?

1............ 1

2............ 2

19. नीचे व्यवसायों की सूची है, आप की दृष्टि में सर्वाधिक अच्छा व्यवसाय कौन सा है,? किन्हीं पांच व्यवसायों का नाम दीजिए । सबसे अधिक महत्वपूर्ण व्यवसाय को । तथा सबसे कम महत्वपूर्ण को 5 अंक प्रदान करें ।

1. नौकरी क्लर्क अन्य इसी स्तर की — 1
2. पी0 सी0 एस0, आई0 ए0 एस0 या समकक्ष — 2
3. सैनिक अधिकारी — 3
4. इंजीनियर — 4
5. डाक्टर — 5
6. अध्यापक (प्राईमरी, मिडिल, हाईस्कूल) — 6
7. प्राध्यापक (महाविद्यालय, विश्वविद्यालय) — 7
8. व्यापार — 8

20. आपका उपर्युक्त व्यवसाय में जाने का क्या कारण हैं ?

1............. — 1
2............. — 2

21. आपके विचार से पुरुषों के अलावा स्त्रियों को भी आर्थिक जीवन में प्रवेश करना चाहिए ?

1. हां — 1
2. नहीं — 2

22. स्त्रियों के लिये आप किस प्रकार का व्यवसाय पसन्द करती हैं ?

1. नौकरी — 1
2. पेशा (डाक्टरी, वकालत) — 2
3. अध्यापन कार्य — 3
4. अन्य — 4

23. आप स्त्रियों को व्यवसाय क्यों दिलाना चाहती हैं ?

| | | |
|---|---|---|
| 1. | अपने पैरो पर खड़े होने के लिये | 1 |
| 2. | घर की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने के लिये | 2 |
| 3. | पति की आमदनी कम होने के कारण | 3 |
| 4. | आकस्मिक संकट के कारण | 4 |
| 5. | स्वतन्त्र रहने की इच्छा से | 5 |
| 6. | अन्य | 6 |

24. यदि आपको मन चाहे व्यवसाय में जाने के लिये निम्नलिखित परिस्थितियों का सामना करना पड़े तो क्या आप उसे प्राप्त करना चाहेंगी ?

| | | |
|---|---|---|
| 1. | वर्तमान निवास से दूर जाना पड़े | 1 |
| 2. | आर्थिक कठिनाइयाँ आवे | 2 |
| 3. | परिवार से दूर रहना पड़े | 3 |
| 4. | परिवार वाले इस व्यवसाय को नहीं चाहते हों | 4 |

**शैक्षणिक मूल्य एवं आकांक्षाएं**

25. आप कितनी शिक्षा प्राप्त करना चाहती हैं ?

| | | |
|---|---|---|
| 1. | बी0 ए0/बी0 एस-सी0 | 1 |
| 2. | एम0 ए0 / एम0 एस-सी0 | 2 |
| 3. | बी0 एड0 / एम0 एड0 | 3 |
| 4. | एम0 फिल0 | 4 |
| 5. | पी-एच0 डी0, एम0 बी0 बी0 एस0, इन्जीनियरिंग | 5 |

26. आप किस विषय में शिक्षा/प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहेगी ?

1.............. 1

2.............. 2

27. आप इस विषय का अध्ययन क्यों करना चाहती हैं ?

1.............. 1

2.............. 2

28. इस कक्षा के पास करने के उपरान्त, आगे क्या करने का विचार है ।

1. आगे पढ़ूंगी 1
2. नौकरी करेंगी 2
3. किसी व्यवसाय में लगेंगी 3

29. आपकी दृष्टि में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य क्या हैं ?

1. ज्ञान वृद्धि 1
2. धनोपार्जन और नौकरी 2
3. चरित्र निर्माण एवं अनुशासन 3

30. जो शिक्षा आप प्राप्त करना चाहती हैं क्या आपको उम्मीद है कि आप उसे प्राप्त कर लेंगी ?

1. हां 1
2. नहीं 2

31. आपकी दृष्टि में किस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए ?

1. प्राविधिक तथा व्यावसायिक 1
2. नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा 2
3. शारीरिक तथा सैनिक शिक्षा 3
4. व्यवसाय प्रबन्ध 4

32. अध्ययन के समय कभी-कभी छात्राओं के सामने कुछ कठिनाइयां आ जाती हैं जिनके कारण अनेक छात्राएं पढ़ायी छोड़ने के लिये वाध्य हो जाती हैं, यदि आपको निम्नलिखित कठिनाइयों का सामना करना पड़े तो आप अपनी मनचाही शिक्षा प्राप्त करेंगी या नहीं ।

1. माता - पिता अध्ययन का खर्च बरदाश्त न कर सकें

हां 1

नहीं 2

2. माता-पिता की इच्छा आगे पढ़ाने की न हो

हां 1

नहीं 2

33. आपके विचार से लड़कियों को शिक्षा किस स्तर तक मिलनी चाहिए ?

| | | |
|---|---|---|
| 1. | कोई शिक्षा नहीं | 1 |
| 2. | प्राथमिक | 2 |
| 3. | जूनियर हाईस्कूल | 3 |
| 4. | हाईस्कूल तथा इण्टरमीडिएट | 4 |
| 5. | महाविद्यालय, विश्वविद्यालय | 5 |

34. क्या आपके परिवार के लोग लड़कियों को उक्त शिक्षा देना चाहते हैं ?

| | | |
|---|---|---|
| 1. | हां | 1 |
| 2. | नहीं | 2 |

35. क्या पुरुषों के समान स्त्रियों को भी शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए ?

| | | |
|---|---|---|
| 1. | हां | 1 |
| 2. | नहीं | 2 |

36. क्या आप सहशिक्षा के पक्ष में हैं ?

| | | |
|---|---|---|
| 1. | हां | 1 |
| 2. | नहीं | 2 |

37. स्त्रियों को शिक्षा किस उद्देश्य से देना चाहिए ?

| | | |
|---|---|---|
| 1. | अपने पैरों पर खड़े होने के लिये | 1 |
| 2. | आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने के लिये | 2 |
| 3. | स्वतंत्रता प्रदान करने के लिये | 3 |

38. आप किस विषय में आगे अध्ययन करना चाहती हैं ?

| | | |
|---|---|---|
| 1. | कला | 1 |
| 2. | विज्ञान | 2 |
| 3. | इन्जीनियरिंग, चिकित्सा | 3 |
| 4. | व्यावसायिक प्रशिक्षण | 4 |

39. क्या आपको उम्मीद हैं, यदि आपके सामने कठिनाइयां आये तो आप अपना शैक्षणिक संकल्प पूरा कर लेगीं?

हां 1

नहीं 2

## राजनैतिक मूल्य एवं आकांक्षायें

40. आपका राजनीति के प्रति क्या दृष्टिकोंण हैं ?

1. राजनीतिक जीवन बड़ा ही अस्थिर है 1
2. राजनीतिक जीवन स्तर को उठाने और स्वाभिमान बढ़ाने का साधन 2
3. राजनीति बेईमानी और चालाकी पर टिकी है 3
4. राजनीति धन एकत्र करने का साधन है 4
5. राजनीति देश की सेवा करने का सुअवसर प्रदान करती है 5

41. आपका राजनीति में समानतावादी दृष्टिकोंण के विषय में क्या विचार हैं ?

1. नौकरियों में धार्मिक समूहों को वरीयता दी जानी चाहिए 1
2. चुनाव में अन्य उम्मीदवारों की अपेक्षा क्षेत्रीय उम्मीदवारों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए 2
3. उच्च पदों पर उच्च जाति के लोगों की ही नियुक्ति होनी चाहिए 3
4. नौकरियों में स्त्री-पुरूष सबको समान अवसर मिलना चाहिए 4
5. अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लिये नौकरियों में आरक्षण होना चाहिए 5

42. आपकी मानव जीवन के प्रति क्या अवधारणा है ?

1. सभी मनुष्य समान हैं 1
2. मनुष्य और मनुष्य के बीच अन्तर दैवीय है । 2
3. सबका आदर करना चाहिए 3

43. क्या आप निम्न विचार से साम्य रखती हैं ?

1. सभी व्यक्तियों को अपनी इच्छानुसार धन अर्जित करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए 1
2. सरकार को धन अर्जित करने की सीमा निर्धारित करनी चाहिये ताकि कुछ लोग अमीर न हो जाये और कुछ लोग गरीब न हो सके 2

44. क्या आपकी छात्र राजनीति में अभिरुचि है ?

हां 1

नहीं 2

45. यदि राजनीति में अभिरुचि है तो भाग लेने के उद्देश्य क्या हैं ?

1. जनसम्पर्क तथा जन सम्बन्ध बनाना 1
2. आत्म प्रतिष्ठा 2
3. विद्यालय में व्याप्त भ्रष्टाचार समाप्त करना 3
4. आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद है 4

46. राजनीतिक दल, जिससे छात्राओं के विचार साम्य रखते हैं

1. कांग्रेस (आई) 1
2 भारतीय जनता पार्टी 2
3. जनता पार्टी 3

47. क्या आप छात्र संघ का चुनाव लड़ना चाहती हैं ?

हां 1

नहीं 2

48. यदि छात्र संघ का चुनाव लड़ना चाहती हैं तो उसका क्या कारण है ?

1. छात्राओं की समस्याओं को हल करने हेतु 1
2. छात्र एकता बनाये रखने हेतु 2
3. प्रतिष्ठा प्राप्ति हेतु 3

49. यदि छात्रसंघ का चुनाव नहीं लड़ना चाहती तो उसका क्या कारण है ?

1. अध्ययन में व्यवधान 1
2. समाज अच्छी निगाहों से नहीं देखता 2
3. धन तथा समय का अपव्यय 3

50. आपके विचार में मताधिकार की आयु क्या होनी चाहिये ?

18 वर्ष 1

21 वर्ष 2

51. आपकी दृष्टि में भारत के लिये किस प्रकार की सरकार उपयोगी है ?

1. प्रजातन्त्रात्मक सरकार 1
2. साम्यवादी सरकार 2
3. तानाशाही सरकार 3
4. सैनिक शासन 4

52. किसी भी राष्ट्र के समक्ष समाज के विविध पक्षों से अनेक समस्याएं हुआ करती हैं, कृपया बताइये भारतवर्ष में कौन सी 5 सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्यायें हैं ? सर्वाधिक महत्व को 5 तथा सबसे कम को 1 अंक दें.

1. खालिस्तान समस्या ( )
2. असम समस्या ( )
3. भ्रष्टाचार की समस्या ( )
4. दहेज समस्या ( )
5. बेरोजगारी की समस्या ( )
6. जनसंख्या की समस्या ( )
7. मंहगाई की समस्या ( )

## पारिवारिक पृष्ठभूमि

53. आपके परिवार का स्वरूप क्या है ?

एकाकी परिवार 1

संयुक्त परिवार 2

54. आपके पिता की शिक्षा का स्तर क्या है ?

1. अशिक्षित 1
2. प्राईमरी 2
3. मिडिल 3

4. हाईस्कूल 4

5. इण्टरमीडिएट 5

6. बी0ए0/बी0 एस-सी0/ बी0काम0 6

7. एम0ए0/ एम0 एस-सी0/एम0 काम0 7

8. पी-एच0 डी0 8

9. इन्जीनियर / एम0 बी0 बी0 एस0 9

55. आपके परिवार का जातिगत व्यवसाय क्या है ?

1. कृषि 1

2. जातिगत पेशा 2

3. नौकरी 3

4. व्यापार 4

5. अन्य 5

55. आपके पास कौन से भौतिक साधन हैं ?

1. स्कूटर 1

2. टी0बी0/बी0सी0आर0 2

3. फ्रिज 3

4. वाशिंग मशीन 4

5. कार 5

6. टेप रिकार्ड / रेडियो 6

56. आपके परिवार की आमदनी क्या है ?

रू0 1000 - से कम 1

रू0 1001 से - 1500 2

रू0 1501 - 2000 3

रू0 2001 - 3000 4

रू0 3000 - और अधिक 5

58. आपके पास मकान किस प्रकार का है ?

1. कोई मकान नहीं 1
2. कच्चा - पक्का 2
3. पक्का मकान 3
4. कोठी 4

59. आप प्रायः किन-किन धार्मिक पुस्तकों का पाठ करती हैं ?

1. रामचरित मानस 1
2. भगवद् गीता 2
3. शिव, दुर्गा चालीसा 3
4. कुरान शरीफ 4
5. बाईबिल 5
6. धार्मिक पत्रिकायें 6
7. अन्य धार्मिक पुस्तकें 7
8. कोई नहीं 8

60. आप प्रायः ईश्वर की आराधना क्यों करती हैं ?

1. कठिनाई में 1
2. समय-समय पर 2
3. प्रत्येक समय 3
4. कभी नहीं 4